।। ओ३म् ।।

वैदिक संसार

वर्ष-६ अंक-१२

पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६,
डाक पंजीयन - एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

मासिक-हिन्दी अक्टूबर-२०१७ इन्दौर(म.प्र.) मूल्य-२५/- कुल पृष्ठ-५६

नोबेल पुरस्कार विजेता, भारत रत्न, राष्ट्रीय वैज्ञानिक

चन्द्रशेखर वेंकट रमन

भारत माता के सपूत
महान् विभूति को
जन्म एवं निधन दिवस
पर शत-शत नमन

जन्मः ७ नवम्बर १८८०
निधनः २१ नवम्बर

वैदिक संसार परिवार के
समस्त सदस्यों को
नवसस्येष्टि (दीपावली) पर्व की

हार्दिक शुभकामनाएँ

वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य बनकर आर्थिक सहयोग कर पूण्यार्जन कीजिए

वैदिक संसार के निर्बाध गति से प्रकाशन हेतु वैदिक संसार को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने के निमित्त **वैदिक संसार की संरक्षक सदस्यता योजना** प्रारम्भ की गई है। इसमें जो सदस्य एक अंक प्रकाशन व्यय भार निमित्त **एक मुश्त २५००० रुपए** देंगे अथवा प्रतिवर्ष किसी भी रूप में वे चाहें स्वयं दे या पत्रिका के सदस्य बनाकर सहयोग करें इस हेतु उनके द्वारा बनाए गए सदस्यों को वार्षिक सदस्यता शुल्क में ५०रुपए की छूट भी दी जावेगी। ऐसे सदस्य **प्रतिवर्ष ५१०० रुपए सहयोग करने का व्रत (संकल्प)** व्यक्त करेंगे, ऐसे दोनों प्रकार के महानुभाव संरक्षक सदस्य माने जावेंगे **जिनके चित्र प्रत्येक अंक में प्रकाशित किए जावेंगे।**

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

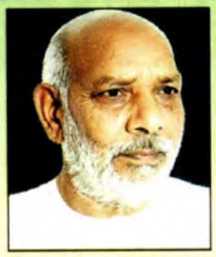

ठाकुर विक्रम सिंह जी
दिल्ली

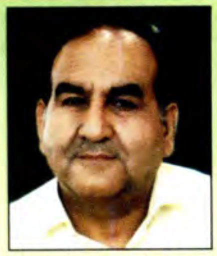

श्री नेमीचन्द जी शर्मा
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला
जोधपुर (राजस्थान)

श्री सुनील जी शर्मा
पौण्डा (गोवा)

श्री नानूराम जी जांगिड
धूलिया, महाराष्ट्र

श्री रामफलसिंह जी आर्य
सुन्दर नगर, हिमाचल

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
अहमदाबाद, गुजरात

सुश्री अंजलि आर्या
घरोंडा, हरियाणा

श्री आदित्यप्रकाश जी गुप्त
खेड़ा अफगान (उ.प्र.)

आचार्य सर्वेश जी
गुरुकुल केहलारी, म.प्र.

वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी महानुभाव

श्री मोहननारायण जी
चांदवड़, महाराष्ट्र

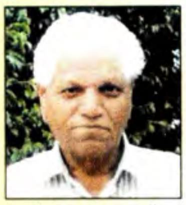

श्री अम्बालाल जी
उदयपुर, राजस्थान

श्री सुरेश जी शर्मा
नीमच, म.प्र.

श्री लक्ष्मीनारायण जी
नासिक, महाराष्ट्र

श्री ताराचन्द जी
शहादा, महाराष्ट्र

श्री रमेशचन्द्र जी शर्मा
औरंगाबाद, महाराष्ट्र

श्री मूलचंद जी शर्मा
अलवर, राजस्थान

पं. सत्येन्द्र जी आर्य
पिपलिया मंडी, म.प्र.

श्री अशोक जी लाड़वा
धारसीखेड़ा, म.प्र.

श्री प्रकाश जी पिड़वा
पाली, राजस्थान

श्री ताराचन्द जी आर्य
खेड़ी आर्य नगर, राज.

श्री अर्जुन जी झलोया
मन्दसौर, म.प्र.

श्री पुखराज जी
औरंगाबाद, महाराष्ट्र

श्री गोवर्धनलाल जी
देवगढ़, म.प्र.

श्री नारायण जी
कचबैड़ी, म.प्र.

श्री सोहनलाल जी
ग्वालियर, म.प्र.

आर्य समाज खेड़ा अफगान द्वारा आयोजित वैदिक ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता में विद्यालयीन छात्र-छात्राएं परीक्षा देते हुए।

आर्य समाज खेड़ा अफगान के प्रधान श्री आदित्यप्रकाश जी गुप्त को आर्य समाज खालापार (सहारनपुर) द्वारा सम्माननीत किया गया।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली के

दिनांक १७ दिसम्बर २०१७ को होने जा रहे

राष्ट्रीय प्रधान पद निर्वाचन के योग्य उम्मीदवार

जांगिड कुल गौरव, पुरुषार्थ, ईमानदारी, मृदुता, सौम्यता
मिलनसारिता, उदार सेवाभाव आदि गुणों के बुते पर
शून्य से शिखर तक पहुंचे ख्यातनाम उद्योगपति, **उदारमना, दानवीर,**
अखण्ड भारत गो रक्षा अभियान-२०१५ के संयोजक
राजस्थान सरकार द्वारा भामाशाह अवॉर्ड से सम्मानित

श्री नेमीचन्द शर्मा (जांगिड) गान्धीधाम गुजरात

मूल निवासी–लाड़पुरा (डेगाना), जिला-नागौर (राज.)

समाजसेवा में किए गए कार्य

जन्मदायिनी माता की स्मृति में मां फिल्म का निर्माण ५० लाख के बजट से।

राजकीय उच्च कन्या माध्यामिक विद्यालय रिया बड़ी, जिला-नागौर (राज.) के भवन निर्माण हेतु ५० लाख का दान।

आर्थिक दृष्टि के कमजोर प्रतिभावान अनेक छात्रों को प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति।

अनेक गोशालाओं के संचालन में लाखों रुपए का मुक्तहस्त से दान।

अनेक शैक्षणिक संस्थाओं को निर्माण तथा छात्रवृत्ति आदि कार्यों हेतु मुक्तहस्त से दान।

प्याऊ का निर्माण, अनेक मंदिरों के जिणोद्धार हेतु मुक्तहस्त से सहयोग।

अनेक सामाजिक संस्थाओं के भवन निर्माण आदि कार्यों तथा गतिविधियों में मुक्तहस्त से सहयोग।

विपत्तिग्रस्त अनेक दीन-दुखियों के मुक्तहस्त से सहयोगी।

मारवाड़ी युवा मंच गान्धीधाम द्वारा संचालित एम्बुलेंस सेंटर को ६ लाख का दान।

आर्य समाज, गान्धीधाम के परामर्शदाता।

प्रमुख सहयोगी एवं वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक। वैदिक संसार को वैदिक धर्म प्रचारार्थ चार पहिया वेद प्रचार वाहन भेंट।

डॉ. सोमदेव जी शास्त्री, मुम्बई द्वारा रचयित अथर्व वेद सन्देश, वैदिक संसार पत्रिका प्रकाशन तथा अनेक साहित्यकारों द्वारा रचयित पुस्तकों के प्रकाशन के अभिन्न सहयोगी।

श्री नेमीचन्द शर्मा (जांगिड)
के पक्ष में अपना समर्थन देकर
एक सहृदयी व्यक्ति को
विजयश्री दिलवाकर

समाज विकास का मार्ग प्रशस्त कीजिये

ठाकुर विक्रम सिंह जी के ७५वें जन्म दिवस के अवसर पर आयोजित आर्यन अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

श्री आनन्द चौहान एवं श्रीमती मृदुला चौहान एमीटी यूनिवर्सिटी द्वारा ठाकुर सा. का सम्मान।

आर्य जगत् के विद्वानों द्वारा ठाकुर सा. को जन्म दिन की बधाई।

भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्याक्ष श्री श्याम जाजू द्वारा ठाकुर सा.का सम्मान।समीप है डॉ. वरुण वीर।

ठाकुर सा. को राजर्षि की उपाधि से सम्मानित करते क्षत्रिय सेवा संस्थान दिल्ली के पदाधिकारी।

स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती द्वारा संपादक अजय सहगल जी का सम्मान।

आचार्य चन्द्रशेखर जी दिल्ली का ठाकुर सा. द्वारा सम्मान किया गया।

पं. सत्येन्द्र जी आर्य, पिपलिया मंडी का सम्मान ठाकुर सा. द्वारा किया गया।

वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा को सम्मानित करते हुए ठाकुर सा.।

वैदिक संसार परिवार को आशीर्वाद प्रदान कर उत्सावर्धन करते हुए ठाकुर सा.।

वैदिक संसार द्वारा कलम की तलवार लेकर तिमिर का नाश कर
ज्ञान का प्रकाश करने हेतु आठवें वर्ष में प्रवेश करने पर हार्दिक बधाई...

दीपावली का प्रकाश पर्व
जन-जन के जीवन में खुशहाली बरसाये
इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...

चौथमल जांगिड (चोयल)
जिलाध्यक्ष-सीकर (राज.)
अ.भा.जा.ब्रा.महासभा, दिल्ली
मो. 9413070678

Vishwakarma Hotel & Restaurant

N.H. 52, Sargoth, Reengus Distt.- Sikar (Raj.) 332404 PH: 01575-293102
www.vishwakarmahotel.com Email: vkhotel1@gmail.com

we are providing all type wooden packing material chain butten, pallets, carrots, plywood Box, plywood Spool, wooden drum

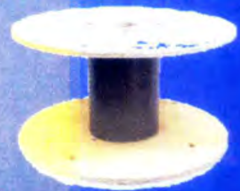

महेश जांगिड
Mob. 7742708000

VISHWAKARMA UDYOG

NEAR AMBIKA KANTA SKS INDUSTRIES AREA
REENGUS DISTT.-SIKAR (RAJ.) - 332404 Mob. 7742708000

परमपिता परमात्मा की महती कृपा सभी पर बनी रहे...
प्रकाश पर्व दीपावली पर सभी के लिए सुख-शान्ति, समृद्धि की कामना
करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं...

Lekhraj Sharma Tpt Co.

Fleet Owner & Transport Contractor

Office : C-42, Kadam Vihar Opp. IOCL TownShip
Mathura-281006 (U.P.)
Mob. 09414930985, 09997776601
Email: sharmalekhrajsrr@gmail.com

Lekhraj Sharma
L.P.G. Transport Contractor
Vendor Code: 220970

**Resi.: Gandhi Nagar,
Sewar Road, Bharatpur (Raj.)**

।।ओ३म्।।

संसार का उपकार करना इस (आर्य समाज) समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात्
शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करना। - महर्षि दयानन्द

हमारे आदर्श पुरुष

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्देश्य लेकर प्रकाशित पत्रिका वैदिक संसार
के प्रकाशन के छह वर्ष पूर्ण कर सातवें वर्ष में प्रवेश पर हार्दिक शुभकामनाएं
तथा वैदिक धर्मनिष्ठ समस्त बन्धुओं को दीप पर्व की हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएं

हमारे प्रेरणा स्रोत

शुद्धता एवं पूर्णता
हमारी पहचान है...

पाटीदार पेट्रोलियम

आर्य लक्ष्मीनारायण पाटीदार

उपप्रधान- मध्य भा. आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल
विशेष प्रभार-उज्जैन सम्भाग
98270-78880

आर्य रवि पाटीदार
98270-78885
ravipatidar1228@gmail.com

सत्यता, सेवा, समर्पण
हमारी विरासत है...

मां तुलसी वेयर हाउस

मां तुलसी तौल
कांटा (६० टन)

आर्य कृषि फार्म

विक्रम नगर (मौलाना) वाले

ग्राहकों हेतु
क्रेडिट-डेबिट
स्क्रेच कार्ड मशीन
सुविधा उपलब्ध है

एम. पाटीदार नगर, उज्जैन रोड, बड़नगर (कजलाना), जिला उज्जैन (म.प्र.)

।। ओ३म् परमात्मने नमः ।।

आर्य जगत् में अतिशीघ्र सिरमौर स्थान बनाने में सफल पत्रिका वैदिक संसार के सातवें वर्ष में करने तथा प्रकाश पर्व पर समस्त स्नेहीजनों को

हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रेमनारायण पाटीदार
प्रधान
आर्य समाज देवास (म.प्र.)

विश्वसनीय आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माता

प्रभात आयुर्वेदिक संस्थान

सेवा एवं विश्वास हमारे मुख्य लक्ष्य

हमारे द्वारा उत्पादित उत्कृष्ट उत्पादों की श्रृंखला

प्रभात हवन सामग्री

१००% शुद्ध जड़ी बूटियों तथा यज्ञ चिकित्सा विज्ञान पर आधारित अनुसंधानपूर्वक तैयार की गई

थोकभाव पर भी उपलब्ध

विशेष ध्यातव्य

आर्य समाज द्वारा आयोजित आयोजनों में हमारे उत्पादों की स्टॉल की सेवा भी प्रदान की जाती है। कृपया सम्पर्क करें।

इनके अतिरिक्त-चोट-मोच पर प्रभावकारी प्रभात मल्हम भी उपलब्ध है।

4, कामना नगर, मिल रोड, सहजधाम के पास, देवास (म.प्र.)
Mo. 8989703980, 9926875022
Email: Prabhatayurvedic12@gmail.com, web:Prabhatayurvedic.in

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आईसीडी/१४०५/२०१५-१७
वर्ष-६, अंक-१२
अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ अक्टूबर, २०१७
आर्ष तिथि-कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी
सृष्टि संवत्-१,९७,२९,४९, ११९
शक संवत्- १९३९
विक्रम संवत्- २०७४, दयानन्दाब्द-१९४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१
(सायं ६ बजे से प्रात: ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

आवरण एवं शब्द संयोजन
लक्ष्य ग्राफिक्स - ९३०१४३३२११

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति	२५/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
करंट खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	१०
महत्वपूर्ण पर्व, दिवस एवं जयन्ति-पुण्यतिथि	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	१०
अपने ज्ञान चक्षुओं पर वैदिक ज्ञान का चश्मा...	सम्पादकीय	११
हमारी महान् विभूतियां-सुकीर्ति काक्षीवत्	शिवनारायण उपाध्याय	१३
- चन्द्रशेखर वेकट रमन	शिवनारायण उपाध्याय	१३
- ठाकुर विक्रम सिंह	वैदिक संसार	१५
आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान	आचार्य सोमदेव आर्य	१८
वेदों को जानें	राधेश्याम गोयल	१९
युग की पुकार-सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का घर...	पं. उम्मेदसिंह विशारद	२०
आर्य नहीं बन पाओ तो...	आर्य पी.एस. यादव	२१
प्रभु का नाम सुमिर नर प्यारे	प्रकाश पिड़वा	२१
सत्यार्थ प्रकाश का आठवां समुल्लास और वेद	पं.बाबूलाल जोशी	२२
आर्यो के सोलह संस्कार	राम आर्य 'व्यथित'	२५
वेदों में मन:शक्ति एवं परमात्मा प्राप्ति	मृदुला अग्रवाल	२६
इन्द्रियों की साधना	डॉ. रूपचंद दीपक	२९
वेदार्थ प्रतीति:- पुस्तक समीक्षा	भावेश मेरजा	२९
उपास्य और उपासक सम्बन्ध	नरेन्द्र आहूजा	३१
पिता के नाम पत्र	दिलीप भाटिया	३२
मानसिक तनाव एवं उससे बचने के उपाय	स्वामी हरिश्वरानन्द सरस्वती	३३
शरणागत कौन? विपत्तियों से पीड़ित अथवा...	आचार्य सोमेन्द्र श्री	३५
बृहस्पति का राशि संचरण	आचार्य दार्शनेय लोकेश	३५
मानवता का प्रकल्प-जीवन प्रभात गान्धीधाम	आर्य समाज गान्धीधाम	३८
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियां	संकलित	३९
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	४०
वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक.	वैदिक संसार	४५
शोक-सूचना	वैदिक संसार	४८

गायत्री महायज्ञ एवं वैदिक सत्संग

दिनांक : ४ से ८ दिसम्बर २०१७
आमंत्रित विद्वान - सुश्री अंजलि आर्या, करनाल (हरि.), पं. काशीराम जी अनल, कानड़ (म.प्र.)

प्रेरणास्त्रोत - लक्ष्मीनारायण जी पाटीदार, उज्जैन संभाग प्रभारी-चलभाष ९८२७०७८८८०
निवेदक एवं सम्पर्क : दीपक सोनी- चलभाष ७९८७३८८७६१, रमेशचन्द्र पाटीदार- चलभाष - ९९७७१०४७३७, देवनारायण सोनी (इन्दौर) चलभाष-९८२६०७६९३५

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्त्रप्रधनेषु च।
उग्र उग्राभिरूतिभिः।।ऋ.- १.७.४

भावार्थ- परमेश्वर का यह स्वभाव है कि युद्ध करने वाले धर्मात्मा पुरुषों पर अपनी कृपा करता है और आलसियों पर नहीं। इसी से जो मनुष्य जितेन्द्रिय, विद्वान्, पक्षपात को छोड़ने वाले शरीर और आत्मा के बल से अत्यन्त पुरुषार्थी तथा आलस्य को छोड़े हुए धर्म से बड़े-बड़े युद्धों को जीत के प्रजा का निरन्तर पालन करते हैं वे ही महाभाग्य को प्राप्त हो के सुखी रहते हैं।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि -मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के नवम्बर २०१७ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

१० गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक शुक्ल द्वादशी २०७४	१ नवम्बर	चातुर्मास पूर्ण
११ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी २०७४	२ नवम्बर	प्रदोष
१२ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी २०७४	३ नवम्बर	पंचक समाप्त-२२:१३
१३ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा २०७४	४ नवम्बर	गुरु नानक, भाई परमानन्द एवं महात्मा सुदर्शन जयन्ति
१४ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा २०७४	५ नवम्बर	क्षय तिथि द्वितीया-२८:२०
१५ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक कृष्ण तृतीया २०७४	६ नवम्बर	रोहिणी-३०:२७
१६ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक कृष्ण चतुर्थी २०७४	७ नवम्बर	विपिनचन्द्र पाल जयन्ति
१७ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक कृष्ण पंचमी २०७४	८ नवम्बर	भगवान चैतन्य जयन्ति
१८ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक कृष्ण षष्ठी २०७४	९ नवम्बर	पं. इन्द्र विद्या वाचस्पति जयन्ति
१९ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक कृष्ण सप्तमी २०७४	१० नवम्बर	पुष्य-१७:५०
२० गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक कृष्ण अष्टमी २०७४	११ नवम्बर	काल भैरव जयन्ति
२२ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक कृष्ण दशमी २०७४	१३ नवम्बर	महावीर स्वामी दीक्षा दिवस
२३ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक कृष्ण एकादशी २०७४	१४ नवम्बर	पं. जवाहरलाल नेहरू जयन्ति, बाल दिवस, विश्व मधुमेह जागृति दिवस
२४ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक कृष्ण द्वादशी २०७४	१५ नवम्बर	चित्रा-२७:१३, प्रदोष, क्रान्तिकारी विरसा मुण्डा जयन्ति, महात्मा हंसराज एवं विनोबा भावे पुण्य तिथि
२६ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी २०७४	१७ नवम्बर	लाला लाजपत राय पुण्यतिथि, सन्त तुकड़ो जी महाराज जयन्ति
२७ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	कार्तिक कृष्ण अमावस्या २०७४	१८ नवम्बर	बटुकेश्वर दत्त जयन्ति, स्वामी दयानन्द पुण्यतिथि, स्वामी अखण्डानन्द पुण्यतिथि
२८ गते	सहस् मास १९३९ शक स.	अग्रहायण शुक्ल प्रतिपदा २०७४	१९ नवम्बर	झांसी की रानी लक्ष्मीबाई व इन्दिरा गान्धी जयन्ति
३० गते	सहस् मास १९३९ शक स.	अग्रहायण शुक्ल तृतीया २०७४	२१ नवम्बर	चन्द्रशेखर वेकट रमण पुण्यतिथि
०१ गते	सहस्य मास १९३९ शक स.	अग्रहायण शुक्ल चतुर्थी २०७४	२२ नवम्बर	उत्तराषाढ़-२०:२४, धनु संक्रान्ति-०८:३४, वीर दुर्गादास राठौर पुण्यतिथि, वीरांगना झलकारी बाई जयन्ति
०३ गते	सहस्य मास १९३९ शक स.	अग्रहायण शुक्ल षष्ठी २०७४	२४ नवम्बर	गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस
०४ गते	सहस्य मास १९३९ शक स.	अग्रहायण शुक्ल षष्ठी २०७४	२५ नवम्बर	पंचक प्रारम्भ-११:०८, सन्त तारण-तरण जयन्ति
०५ गते	सहस्य मास १९३९ शक स.	अग्रहायण शुक्ल सप्तमी २०७४	२६ नवम्बर	नरसी मेहता जयन्ति, संविधान दिवस
०७ गते	सहस्य मास १९३९ शक स.	अग्रहायण शुक्ल नवमी २०७४	२८ नवम्बर	महात्मा ज्योतिबा फूले पुण्यतिथि
०८ गते	सहस्य मास १९३९ शक स.	अग्रहायण शुक्ल दशमी २०७४	२९ नवम्बर	देवी अहिल्या बाई होल्कर पुण्यतिथि (प्रचलित पौराणिक पंचागों अनुसार देवी अहिल्या की राजधानी महेश्वर में भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी को देवी अहिल्या की पुण्यतिथि अहिल्या उत्सव के रूप में मनाई जाती है।- सम्पादक)
०९ गते	सहस्य मास १९३९ शक स.	अग्रहायण शुक्ल एकादशी २०७४	३० नवम्बर	स्वदेशी दिवस (पंतजलि योग पीठ), जगदीशचंद्र बोस जयन्ति

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

अपने ज्ञान चक्षुओं पर वैदिक ज्ञान का चश्मा चढ़ाइये
आपकी अज्ञानता का नाश होगा और आपको अपने दोष-दुर्गुणों के साथ आस्तिन के सांप जिन्हें तुम पाले बैठे हो वे भी दिखने लगेंगे

पहले आसाराम, नारायण स्वामी, रामपाल फिर गुरमीत राम-रहिम और उसके साथ-साथ अनेक बाबाओं और जैनमुनि के दुष्कृत्यों का भाँडा फोड़ हुआ है धार्मिक क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों को लोग सन्देहास्पद दृष्टि से देखने लगे हैं तथा प्राय: लोगों में आपसी सुगबुगाहट भी होती है और अनेकश: बार उपहास की दृष्टि से सम्बन्धित पर व्यंग्य बाण छोड़ दिया जाता है कि क्या राम-रहिम बन रहे हो? ऐसा होना स्वाभाविक भी है, किन्तु प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या ऐसा पहली बार हुआ है तथा यह वातावरण इसी प्रकार आगे भी बना रहेगा? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि नहीं ऐसा पहली बार नहीं हुआ है, ऐसे भाँडे समय-समय पर फूटते रहते हैं। पहले भी अनेक बार फूटे हैं और आगे भी फूटते रहेंगे। वैसे तो गुरमीत राम-रहिम का भाँडा तो ज्ञात स्थिति अनुसार १९वर्ष पूर्व ही फूट चुका था और अज्ञात स्थिति अनुसार तो पाप का भाँडा उसी दिन फूट जाता है जब पाप व्यक्ति के चित्त में उत्पन्न होता है, क्योंकि जिस व्यक्ति को चित्त में पाप अंकुरित होता है उसका व्यवहार स्वत: ही उसका भाँडा फोड़ देता है और उसके समीपस्थ लोग उसके व्यवहार से भलीभाँति जान जाते हैं कि सच्चाई क्या है, किन्तु भय, संकोच तथा लोभ आदि कारणों से वे चुप लगा जाते हैं और अन्यों के सामने स्वयं उपहास के पात्र बनने से बचने के कारण जानते हुए भी निर्लज्जता ओढ़कर समर्थक बन उन अपराधियों को बचाने में उतर जाते हैं तथा जाने-अनजाने में प्रश्रय देकर पाप को फलने-फूलने का मार्ग प्रशस्त कर देते हैं। इसमें एक प्रमुख कारण यह भी है कि उनके ज्ञान चक्षुओं पर वैदिक ज्ञान का चश्मा नहीं चढ़ा होने से वे समय पर ठीक-ठीक सत्य-असत्य का निर्णय नहीं कर पाते हैं तथा वैदिक ज्ञान के अभाव में उनका आत्मबल इतना क्षीण होता है कि पाप का प्रतिरोध करने की उनमें क्षमता ही नहीं होती और वे उसे सहन करते चले जाते हैं और कहीं न कहीं जाने-अनजाने में उस पाप वृद्धि के सहायक बन जाते हैं तथा पाप का प्रतिरोध नहीं होने से वह फलता-फूलता और जब फलता-फूलता है तो फैलता है, अर्थात् विस्तारित होता है और जब-जब पाप विस्तारित होता हो उसमें दम्भ अर्थात् अहंकार आ जावेगा और कहा भी गया है कि पाप सर पर चढ़कर बोलता है महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि जब तलाब फूटता है तो उसके पानी का फैलाव दूर-दूर तक हो जाता है, किन्तु वह अधिक दिन तक फैला हुआ नहीं रहता सूख जाता है। इसी तरह पाप भी एक बारगी फलता-फूलता और फैलता दिखता है, किन्तु वह स्थायी नहीं होता और नष्ट हो जाता है। कहा भी गया है कि प्रत्येक अति का अन्त होता है।

प्रश्न यह भी है कि क्या यह वातावरण ऐसा ही बना रहेगा? इसका उत्तर यह है कि नहीं यह वातावरण आगे भी इसी प्रकार ज्यादा समय तक नहीं बना रहेगा, और ठीक उसी तरह सामान्य हो जावेगा जैसे किसी ठहरे हुए शान्त पानी में एक कंकर डालो तो कुछ समय के लिए हलचल होती है और कुछ समय बाद कंकर पानी में अपना स्थाई स्थान बना लेता है और पानी पुन: अपनी पूर्व स्थिति में आ जाता है। ऐसा ही इस प्रकरण में ही नहीं इसके पूर्व भी अनेक बड़े-बड़े प्रकरणों में हुआ है और आगे भी जब तक वैदिक ज्ञान से समृद्ध ज्ञानियों की संख्या में वृद्धि नहीं होगी ऐसा ही होता रहेगा। प्रश्न उठता है कि इन प्रकरणों के उजागर होने और व्यापक प्रचार-प्रसार होने से आध्यात्मिक जगत् को लाभ होगा अथवा हानि होगी? कुछ क्षणिक तो लाभ होगा। सामान्य लोग कुछ समय के लिए धार्मिक क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों के प्रति सतर्क-सचेत रहेंगे और सभी को सन्देहास्पद दृष्टि से देखेंगे जैसे इस प्रकरण पश्चात् हो रहा है। जिससे कुछ ही आंशिक मात्रा में अन्धविश्वास और पाखण्ड अस्थायी तौर पर करने वाले लोग भी नहीं करेंगे और फंसने वाले मुर्गे भी नहीं फंसेंगे, किन्तु वैदिक ज्ञान से रहित आमजन में आध्यात्म के प्रति अविश्वास पैदा होगा। लोगों में अध्यात्म के प्रति निराशा उत्पन्न होगी, विशेष कर उच्च शिक्षित पीढ़ी जिसे शिक्षा में धर्म संस्कृति के माध्यम से मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ाया ही नहीं गया, उसने तो उसके जीवन में यही सीखा है कि उसका जो निर्धारित विषय है उसका पूर्ण ज्ञान उसे चाहे न हो, उसे तो कुछ ऐसे नोट्स मिल गए जिनके सहारे वह उसकी कक्षा, विद्यालय, उसके नगर, जिले तथा राज्य के समस्त प्रतिभागियों को पीछे छोड़ता हुआ वह टॉपर कैसे बन जाए और एक अच्छी डिग्री हासिल कर कैसे नैतिक, अनैतिक स्त्रोतों से अधिक से अधिक धन देने वाली एक नौकरी मिल जाए (नैतिक-अनैतिक क्या होता है? यह तो उसका विषय ही नहीं रहा। उसका तो जब नर्सरी कक्षा में प्रवेश हुआ, तब से लाखों रुपयों का इन्वेस्टमेंट उसके मम्मी-पापा ने किया। तब उसके स्कूल वालों ने भी नहीं जानने की कोशिश की कि उसके मम्मी-पापा यह पैसा नैतिक अनैतिक कहां से लाए हैं? उन्हें तो इससे कोई सरोकार नहीं था उन्हें तो बस पैसा चाहिए था, क्योंकि उन्हें भी स्कूल पंजीयन से लेकर संचालन तक के लिए नैतिक-अनैतिक स्रोतों पर धन व्यय करना होता है। नैतिकता का पल्ला पकड़ने से तो उनके स्कूल का पंजीयन भी नहीं हो सकता।) और उस धन के द्वारा कैसे अधिक से अधिक मौज-मस्ती के साधन जुटाए जाएं। ऐसी पीढ़ी के लिए अध्यात्मिक विकास व्यर्थ का विषय अथवा पुराने अनपढ़ गंवार लोगों का विषय होकर यह पीढ़ी ऐसे प्रकरणों से तीव्र गति से नास्तिकता की ओर अग्रसर होगी।

मैं अपने वेद प्रचार वाहन जिसके दोनों ओर महर्षि दयानन्द प्रतिपादित आर्य समाज के चार नियम तथा मनुस्मृति का वाक्य **वेदोंऽखिलो धर्म मूलम्** अर्थ सहित आगे की ओर बोनट पर तथा सामने की ओर मुख्य शिशे पर '**वेद प्रचार वाहन**' परमात्मा के निज मुख्य नाम '**ओ३म्** ' के साथ लिखा हुआ है तथा पीछे के शीशे पर महर्षि दयानन्द का सन्देश '**वेदों की ओर लौटो**' के साथ वैदिक संसार के विषयक जानकारी लिखी हुई है। जैसा कि अधिकांश पाठकगण परिचित है कि उपरोक्त वेद प्रचार वाहन के माध्यम से मैं स्थान-स्थान पर आयोजित आयोजनों में वैदिक साहित्य, यज्ञ, कुण्ड, सुर्वे, हवन सामग्री, महापुरुषों के चित्र आदि लेकर जाता हूं और

विक्रयार्थ प्रदर्शनी रूप में प्रदर्शित कर इच्छुकजनों को उपलब्ध करवाता हूं। इन यात्राओं के समय जहां भी कोई सम्पर्क में आता है अथवा जहां मैं जाता हूं वहां पर मेरे कोई परिवारजन, स्नेहीजन आदि होते हैं तो मैं समय, सुविधानुसार उनसे भेंट कर वैदिक धर्म विषयक उन्हें जानकारी देकर वैदिक धर्म सिद्धान्तों को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान करने का मेरा प्रयास हमेशा से रहता आया है। विगत दिनों दिनांक २२ से २४ सितम्बर तक आर्य समाज जनता कालोनी आदर्श नगर जयपुर के वार्षिकोत्सव में दिनांक २५ से २८ तक आर्य समाज ब्यावर के वार्षिक उत्सव में, २९ सितम्बर से २ अक्टूबर तक ऋषि स्मृति भवन जोधपुर के आयोजन में तथा दिनांक ४ से ६ अक्टूबर तक निम्बी जोधान् जिला नागौर के सामवेद पारायण यज्ञ में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दिनांक २१ सितम्बर से इंदौर से इस यात्रा का वेद प्रचार वाहन द्वारा प्रारम्भ ७ अक्टूबर को वेद प्रचार वाहन को ऋषि उद्यान अजमेर में छोड़कर लौहपथ गामिनी (रेल) द्वारा दिनांक ८ अक्टूबर को इंदौर लौटने पर इस यात्रा का समापन हुआ।

वैसे तो जब भी वेद प्रचार वाहन से मैं जहां-जहां भी जाता हूं जिन लोगों की भी दृष्टि वेद प्रचार वाहन पर पड़ती है बड़े विस्मय से देखते हैं तथा जहां भी वेद प्रचार वाहन को खड़ा करना होता है वहां-वहां लोग उसे चारों और घुमकर देखते हैं तथा उस पर लिखे वाक्यों को पढ़ते हैं।

गुरमीत राम-रहिम की कारगुजारी की व्यापक जनचर्चा के वातावरण में सम्पन्न गत दिनों की यात्रा में लोगों में कुछ विशेष प्रकार की सुगबुगाहट उपहासात्मक हंसी के साथ देखी गई। इसका स्पष्टीकरण जयपुर तथा कुचामन के पास स्थित प्रेमपुरा में अपने परिवारजनों के मध्यवार्ता में हुआ जब **उन लोगों ने उपहास की दृष्टि से प्रश्न किया कि क्या राम-रहिम बनने जा रहे हो?** तब समझ में आया कि वर्तमान समय में लोग धर्मक्षेत्र में कार्य करने वालों को राम-रहिम जान रहे अथवा समझ रहे हैं।

यह प्रश्न तो मेरे अपने परिवारजनों ने किया था किन्तु यह प्रश्न सबके मन में उठता है प्रत्यक्ष तो वही करता है जो निकट का व्यक्ति होता है, क्योंकि प्रश्न ही ऐसा है जो अपमानजनक तथा क्रोध को उत्पन्न करने वाला है, किन्तु **उन बेचारे प्रश्न करने वालों का क्या दोष उनका जितना ज्ञान है उस हिसाब से उनके मन में यह विचार अथवा प्रश्न उठना वर्तमान घटनाक्रम के वातावरण में स्वाभाविक है।**

यह प्रश्न उतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना महत्वपूर्ण मेरे द्वारा उनके प्रश्न का दिया गया उत्तर है। आइये जानिए जो उत्तर मेरे द्वारा दिया गया क्योंकि वह सभी के लिए जानना आवश्यक है।

मैंने उन महानुभावों से कहा कि आप लोगों का ऐसा सोचना अपनी जगह बिलकुल सही है, क्योंकि आप लोग वैदिक ज्ञान से अनभिज्ञ हैं वैदिक ज्ञान के अभाव में अभी आपको सभी राम-रहिम दिखेंगे, जबकि व्यवहारकाल में आपको राम-रहिम दिखते ही नहीं हैं जो आप लोगों के आस-पास प्रत्येक स्थान पर, प्रत्येक समय सक्रिय हैं, और वैदिक ज्ञान के अभाव में अज्ञानतावश तुम लोग उन राम-रहिम के पोषक बने हुए हैं। यहां यह भी ध्यान देने योग्य है कि धर्मक्षेत्र में सक्रिय अपराधी लोग इस क्षेत्र में पदार्पण के समय से अपराधिक प्रवृत्ति के नही थे? कुछ अपवाद छोड़कर अधिकांश लोग अन्ध ईश्वर आस्था, ग्रहस्थ की झंझटों तथा कमाने खाने की झंझटों से उकता कर तथा धार्मिकता का तमगा मात्र कपड़े रंग लेने से आध्यात्मिक ज्ञान विहिन जन सामान्य द्वारा सहज, मान-सम्मान, सुख सुविधा के साधन उपलब्ध करा देने के कारण इस क्षेत्र में पदार्पण कर जाते हैं जब वे पदार्पण करते हैं तब वे इतने भयंकर अपराधी नहीं होते, किन्तु एक तरफ तो वे स्वयं आध्यत्मिक ज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण ईश्वर के वास्तविक स्वरूप तथा ईश्वर के न्यायकारी कर्मफल सिद्धान्त को नहीं जान पाते हैं और सहज उपलब्ध मान-सम्मान, सुख-सुविधा के साधन आग में घी डालने के समान उनकी अज्ञानता में वृद्धि करते चले जाते हैं तथा उन्हें पाप रूपी नर्क के द्वार पर ला खड़ा कर देते हैं। जितने वे स्वयं दोषी हैं उसका दण्ड तो वे भोगते ही हैं उनका इहलोक और परलोक दोनों बिगड़ता है और ईश्वर प्राप्ति का सुनहरा विलक्षण अवसर मानव जीवन व्यर्थ नष्ट भ्रष्ट हो जाता है किन्तु वे भी कम दोषी नहीं हैं जो मानव जीवन के लिए आवश्यक परमात्मा प्रदत्त ज्ञान वेद से अनभिज्ञ तो हैं ही किन्तु उसे प्राप्त करने का प्रयास भी नहीं करते और जब प्राप्त होने का कोई अवसर उपस्थित होता है तो उपेक्षा करते चले जाते हैं और पशुवत मानव जीवन को व्यर्थ मात्र कमाने, खाने, सोने और बच्चे पैदा करने में व्यतीत कर देते हैं। ऐसी मूर्खों (अज्ञानियों) की फौज ही धर्म क्षेत्र में अपराधियों के जन्म लेने, फलने-फूलने तथा फैलने का सबसे बड़ा कारण है।

मेरा तो आप सभी से मात्र इतना अनुरोध है कि अपने ज्ञान चक्षुओं पर वैदिक ज्ञान का चश्मा चढ़ाइये इससे आपकी अज्ञानता का नाश होगा तभी आपको ज्ञात होगा कि आपके अपने भीतर कितने दोष-दुर्गुण हैं तथा आस्तिन के सांप जिन्हें राम-रहिम का छोटा भाई भी कहा जावे तो है अतिश्योक्ति नहीं होगी, ये लोग आपकी अज्ञानता का लाभ उठाकर सब जगह बड़े ठाठ से अपनी अधर्म की दुकानदारी चला रहे हैं तथा धर्म की हानि और अधर्म का साम्राज्य स्थापित कर रहे हैं। वैदिक ज्ञान का चश्मा आपके ज्ञान चक्षु पर चढ़ते ही ये आस्तिम के सांप तुम्हें दिखने लगेंगे? यह मेरी १००प्रतिशत ग्यारंटी है और आपको स्वयं की अनुभूति के साथ-साथ परमात्मा तथा धर्म-अधर्म को ठीक-ठीक जानने समझने के साथ परमात्मा प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

प्रश्न यह भी उपस्थित होगा कि ज्ञान का चश्मा कहां, कैसे मिलेगा? इस प्रश्न का समाधान है कि वैदिक ज्ञान का चश्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचयित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर चिन्तन- मनन करने से वैदिक ज्ञान चश्में की प्राप्ति होगी तथा महर्षि दयानन्द के सिपाही के रूप में धर्म क्षेत्र में सक्रिय आर्य समाज के विद्वानों द्वारा सरल भाषा में रचयित वेदानुकूल साहित्य व सत्संगों आदि में उपदेशित अमृत वचनों से ही अपने ज्ञान चक्षुओं पर वैदिक ज्ञान का चश्मा लगवाया जा सकता है। मेरी मानों तो जल्दी लगवा लो अन्यथा ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें सम्मुलास में लिखित निम्न वचनों को ही सार्थक करोगे-

गुरु लोभी चेला लालची, दोनों खेलें दाव।
भव सागर में डूबते, बैठ पत्थर की नाव।।

गुरु समझे कि चेले चेली कुछ न कुछ देवें हींगे और चेला समझे कि चलो गुरु झूठे सौगन्ध खाने, पाप छुड़ाने आदि लालच से दोनों कपटमुनि भवसागर के दुख में डूबते है। जैसे पत्थर की नौका में बैठने वाले समुद्र में डूब मरते हैं। ●

वैदिक ऋषिका- सुकीर्ति काक्षीवत्

सुकीर्ति काक्षीवत् जैसा कि उनके नाम से ही विदित हो रहा है वे काक्षीवत् के परिवार से संबंधित हैं। यह परिवार महर्षि अंगिरा को अपने पूर्व पुरुषों में देखता है। ये ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त १३१ की दृष्टा है। इस सूक्त में कुल सात ऋचाएं हैं जिनमें प्राण साधना के विषय में चर्चा की गई है। पहली ऋचा में परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमें चारों ओर से होने वाले शत्रुओं यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद-मत्सर आदि से बचावे।

अप प्राच इन्द्र विश्वां अमित्रानपापाचो अभिभूते नुदस्व।
अपोदीचो अप शूराधराच उरौ यथा तव शर्मन्मदेम।।
ऋ. १०.१३१.१

अर्थ- हे शत्रुओं के विदारण करने वाले प्रभो। कृपया सामने से आने वाले सब शत्रुओं को परे धकेल दीजिए। इसी प्रकार हे- शत्रुओं का अभिभव करने वाले प्रभो। दाहिनी ओर से आने वाले शत्रुओं को भी दूर कीजिए। हे शत्रुओं को शीर्ण करने वाले प्रभो। पश्चिम से आने वाले शत्रुओं को भी दूर कीजिए। उत्तर की ओर से आने वाले शत्रुओं को भी दूर कीजिए।

अगली ऋचा में वासना रिक्त हृदय से प्रभु को नमन किया है।

कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व वियूय।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमोवृक्तिं न जग्मुः।।२।।

अर्थ- हे प्रिय! जैसे जो कि खेती करने वाले निश्चय से जौ को क्रमशः पृथक-पृथक करके काट डालते हैं। इसी प्रकार जो व्यक्ति अपने हृदय क्षेत्र से वासनाओं को उखाड़ फेंकते हैं और इस वासना रहित हृदय में सदा प्रभु के प्रति नमन् की भावना को धारण करते हैं। इन व्यक्तियों के जब-जब आवश्यकता पड़े तब-तब पालन के साधनभूत पदार्थों को प्राप्त कराइये।

अगली ऋचा में परमात्मा से मित्रता स्थापित करने को कहा गया है।

नहि स्थूर्यृतुथायातमस्तिनोतश्रवोविवदे संगमेषु।
गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः।।३।।

अर्थ- एक बैल से युक्त शकट समय पर उद्दिष्ट स्थान पर प्राप्त नहीं होता है। गाड़ी में दो बैलों का होना आवश्यक है। एक बैल का न होना गाड़ी को निकम्मा कर देता है। इसी प्रकार अकेला जीव अपने शरीर रथ को उद्दिष्ट स्थान पर नहीं ले जा सकता है। सम्पूर्ण सफलता प्रभु से प्राप्त शक्ति पर निर्भर है। प्रभु को विस्मृत करने वाला जीव सभाओं में उपस्थित होकर ज्ञान को नहीं प्राप्त कर पाता है। इसलिए उत्तम ज्ञानेन्द्रियों एवं उत्तम कर्मेन्द्रियों की कामना करते हुए शक्ति की कामना करते हुए ज्ञानी पुरुष उस प्रभु को मित्रता के लिए चाहता है।

अगली ऋचा में वर्णन है कि प्राण साधना से सोम का रक्षण होकर मनुष्य अहंकार रहित हो जाता है।

युवं सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा।
विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम् ।।४।।

हे प्राणापानो। आप उत्तम रमण के साधनभूत सोम का विशेष रूप से पान करते हुए शुभ कर्मों के रक्षक होते हो। परस्पर मिलकर असुरों के अधिपति अत्यन्त कठिनता से पीछा छोड़ने वाले अहंकार के हनन करने वाले होते हो। इस असुर वृत्ति को नष्ट करके आप जितेन्द्रिय पुरुष को कर्मों में रक्षित करते हो। अगली ऋचा में पुनः इस विचार को विस्तार दिया गया है।

पुत्रमिव पितरावश्विलोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दजनाभिः।
यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ।।५।।

अर्थ- जैसे माता-पिता पुत्र की रक्षा करते हैं उसी प्रकार हे जितेन्द्रिय पुरुष! ये दोनों प्राणापान उत्तम ज्ञान के द्वारा तथा उत्तम कर्मों के द्वारा तेरी रक्षा करते हैं। हे इन्द्र ! तू सोम को विशेष रूप से पीने वाला होता है। ज्ञान की देवी सरस्वती प्रज्ञानों के द्वारा तथा उत्तम कर्मों को द्वारा तुझे सेवती है।

अब एक ऋचा और देकर लेखनी को विराम देते हैं।

तस्यवयं सुमतौ यज्ञियस्यापिभद्रे सौमनसे स्याम।
स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु।।७।।

अर्थ- इस यज्ञिय प्रभु की कल्याणी मति में हम होवें और उस उत्तम मन में हम स्थित होवें जो कि सबका भद्र ही सोचता है। उत्तम त्राण करने वाला, आत्मिक शक्ति को दोने वाला शत्रु संहारक प्रभु हमारे से द्वेष को बहुत दूर करके पृथक कर दे। अथर्ववेद काण्ड २० सूक्त १२५ में भी इन्हीं मन्त्रों को पाठभेद से दोहराया गया है। इति।

भारत रत्न-चन्द्रशेखर वेंकट रमन

- शिवनारायण उपाध्याय -
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा, (राज)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

चन्द्रशेखर वेंकट रमन का जन्म ७ नवम्बर १८८८ को दक्षिण भारत में तिरुचिरापल्ली शहर में हुआ था। इनके पिता चन्द्रशेखर अय्यर प्रारम्भ में एक विद्यालय में अध्यापक थे, परन्तु बाद में वे विजयपट्टम महाविद्यालय में भौतिकी के प्रोफेसर हो गए थे। चन्द्रशेखर वेंकट रमन जन्म जात अत्यन्त मेधावी और घोर परिश्रमी थे। उन्होंने १२ वर्ष की आयु में ही एन्ट्रेस परीक्षा उत्तीर्ण कर महाविद्यालय में प्रवेश पा लिया था। महाविद्यालय की कक्षा में उन्हें देखकर एक प्राध्यापक को तो यह भ्रम हो गया था कि यह स्कूली छात्र भूल से महाविद्यालय की कक्षा में आ बैठा है और उसने उन्हें कक्षा से बाहर चले जाने को कह दिया था, परन्तु बाद में उपस्थित पंजिका में उनका नाम देखा तो उसे अपनी भूल का अहसास हुआ। रमन की उच्च शिक्षा प्रेसीडेन्सी कॉलेज में हुई। उन्होंने केवल १६ वर्ष की आयु में मद्रास के इस कॉलेज से बी.एस.सी. की उपाधि प्राप्त कर ली। साथ ही वे विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की। फिर उन्होंने आगे पढ़ाई के लिए विदेश जाने की सोची, परन्तु उन्होंने अनुभव किया कि वे वहां की ठण्डी जलवायु को सहन नहीं कर पायेंगे और उन्होंने विदेश जाने का विचार छोड़ दिया। जब वे महाविद्यालय के छात्र

ही थे तभी उन्होंने भौतिक पर कुछ मौलिक लेख लिखे थे जो देश और विदेश की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे। इंग्लैण्ड की फिलोसोफिकल मेग्जीन ने भी उनके लेख प्रकाशित किए थे।

विज्ञान और प्रयोग के अतिरिक्त उनकी संस्कृत भाषा में भी गहरी रुचि थी। उन्होंने वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत का भी अध्ययन किया था। जब वह यौवनावस्था में थे तब वे विभिन्न वाद्य यन्त्रों की ध्वनि से भी प्रभावित होते थे। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में कोई भी भारतीय अपना सम्पूर्ण जीवन शोध कार्यों में लगाने की बात नहीं सोचता था। रमन अपने वैज्ञानिक अध्ययन को कला के आनन्द के साथ जोड़ना चाहते थे। उनके सैद्धान्तिक ज्ञान और विभिन्न संगीत वाद्य यन्त्रों जैसे वीणा, वायोलिन, पियानों, सेल्लो और मृदंग को मिलाना चाहते थे। ध्वनि विज्ञान के साथ इनको जोड़ा भी जा सकता था परन्तु उस समय की तीव्र बुद्धि सम्पन्न युवकों की तरह उन्होंने भी सरकारी सेवा में कोई पद प्राप्त करने का प्रयत्न किया। वह '**भारतीय आडिट एवं अकाउन्ट सर्विस परीक्षा**' में बैठे और सफल रहे। उन्हें इम्पेरियल गवर्नमेन्ट सर्विस में सहायक अकाउन्टेन्ट जनरल चुन लिये गए। सन् १९०७ वे उनका तबादला कोलकाता कर दिया गया, यहां उन्हें डॉ. अमृतलाल सरकार द्वारा स्थापित '**इण्डियन एसोसिएशन ऑफ साइन्स**' की प्रयोगशाला में शोध करने का अवसर प्राप्त हुआ। कोलकाता विश्वविद्यालय के उप कुलपति सर आशुतोष मुकर्जी रमन के शोध कार्य से प्रभावित हुए। उन्होंने रमन को कोलकाता विश्वविद्यालय के विज्ञान विभाग में उन्हें पलित प्रोफेसर का पद देना चाहा। सन् १९१७ में उन्होंने उसको स्वीकार कर लिया। फिर वे कोलकाता विश्वविद्यालय में सन् १९३३ तक अध्यापन कार्य करते रहे। सन् १९२१ में ही उनके शोध कार्य से प्रभावित होकर कोलकाता विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें डी.एस.सी. की उपाधि प्रदान कर दी गई थी। सन् १९२४ में वे रायल सोसायटी के सदस्य चुने गए। अब उन्हें विश्व के एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक के रूप में जान लिया गया था। सर सी.वी. रमन को रंगों के अध्ययन में बड़ा आकर्षण था। सन् १९२१ में वे यूरोप की यात्रा पर रवाना हुए। वे भूमध्यसागर में गहरे नीले पानी से बड़े आकर्षित हुए। इसी प्रकार स्विटजरलैण्ड में स्विस ग्लेशियर्स के बर्फीले नीले रंग ने भी उन्हें गहरा प्रभावित किया। जब वे भारत लौटे तब रंगों के अध्ययन ने सर सी.वी. रमन को प्रभावित किया। उन्होंने प्रकाश के विर्सजन पर कार्य किया। उन्होंने जब प्रकाश को स्वच्छ जल में प्रवेश कराया, पारदर्शक बर्फ के ढेलों में से पार कराया और इसी प्रकार दूसरे पदार्थों में से पार कराया तो निरीक्षण किया और देखा कि प्रकाश सभी पारदर्शक पदार्थों में से विकरीत हो जाता है, परन्तु विकरीण की मात्रा तथा ध्रुवीकरण की स्थिति एक से दूसरे पदार्थ में भिन्न-भिन्न होती है।

यद्यपि अलबर्ट आइन्स्टीन ने पूर्व में यह बताया था कि प्रकाश की किरणों का एक पुञ्ज छोटे रूप में भी विसर्जित हो जाता है, परन्तु रमन का ही यह शोध कार्य था कि जिसने वैज्ञानिकों को यह मानने को बाध्य कर दिया। काम्पट द्वारा काम्पटन के सिद्धान्त का प्रभाव भी खोज के बाद हेजन बर्ग ने भी सन् १९२५ में ऐसे ही सिद्धान्त की भविष्यवाणी की थी और कहा था कि दृष्टिगोचर प्रकाश में भी ऐसा ही प्रभाव होना चाहिए, परन्तु रमन तो उनके पूर्व ही इस नतीजे पर आ गए थे। उन्होंने अपनी मान्यता काम्पटन के पूर्व ही घोषित कर दी थी, सन् १९२८ में रमन ने वास्तव में प्रयोग द्वारा देखा कि छितरे हुए प्रकाश में बदली हुई वेव लेन्थ का कमजोर भाग होता है। फिर बताया कि फैली हुई विसर्जित प्रकाश की ठीक वेव लेन्थ इस बात पर निर्भर करती है कि विसर्जन करने वाले पदार्थ की प्रकृति क्या है। विसर्जन कराने वाले अणुओं की प्रकृति क्या है? इसे ही '**रमन इफेक्ट**' कहते हैं। '**रमन इफेक्ट**' और रमन स्पेक्ट्रा की खोज अपने आपको कुछ अणुओं की रचना को विस्तृत रूप में जानने में बड़ी उपयोगिता सिद्ध की। अपने प्रयोग के लिए उन्होंने सूर्य के प्रकाश के स्थान पर मरकरी आर्क लेम्प से मेनोक्रोमोटिक (एक ही रंग के) रेडिसन को काम में लिया। जब भी एक रंग के प्रकाश पुञ्ज किसी पारदर्शक पदार्थ जैसे बेन्जीन में से होकर गुजरती है तब प्रत्येक प्रकाश किरण पर निम्नांकित दो बातें होती है-

(१) यह द्रव्य के अदृश्य आन्तरिक आणविक रिक्त स्थान में बिना अणु के निकट स्पर्श से निकल जाती है और इस प्रकार अपनी प्रारम्भिक ऊर्जा को बनाए रखती है।

(२) इसके विपरीत वह बेन्जीन के अणु से सीधे टकरा जाती है, जब एक फोटोन किसी अणु से टकराता है तो वह बाहर निकलते समय अपनी कुछ ऊर्जा खो देता है और अणु वह ऊर्जा प्राप्त कर लेता है। फलस्वरूप फोटोन में बेन्जीन से बाहर निकलने पर कुछ ऊर्जा कम होती है। इसके विपरीत भी हो सकता है। इन्द्र धनुष में वायोलेट से लाल रंग, फोटोन में की प्रारम्भिक ऊर्जा लगातार कम होती जाती है। अब यदि अणु से टक्कर लगाने पर फोटोन की ऊर्जा लगातार कम होती है तो ऊर्जा में हुई कमी फोटोन के रंग में लाल रंग के स्पेक्ट्रम की तरफ बदलाव बताती है। रमन प्रभाव महत्वपूर्ण है, क्योंकि पहले के स्थान से प्रकाश की किरणों में जो बदलाव आया वह फोटोन के अन्दर हुए ऊर्जा के खोने के कारण है। चूंकि निकलने वाली किरण समूह में ऊर्जा की जो कमी आई है वह बेन्जीन में से निकलते समय बेन्जीन के अणुओं ने प्राप्त की है। यह हमको अणुओं ने कितनी ऊर्जा सोखी है यह नापने में सहायता करता है। एक तरह के रमन प्रभाव ने अणु अथवा परमाणु के अन्दर की बनावट जानने की हमें एक विधि दे दी है। रमन इण्डियन साइन्स कांग्रेस के सन् १९२८ में अध्यक्ष बने। सन् १९२९ में ब्रिटिश सरकार ने सर की उपाधि प्रदान की। सन् १९३० ई. में उन्हें अपनी खोज के लिए नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ। नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले एशिया के प्रथम व्यक्ति थे। स्टाकहोलम में जब उन्हें नोबल पुरस्कार दिया गया तब उन्होंने प्रयोग द्वारा 'रमण इफेक्ट' को दिखाया।

पारितोषिक प्रदान किए जाने के बाद एक पार्टी रमन के सम्मान में दी गई। वहां एक वैज्ञानिक ने मजाक में कहा कि हमने शराब पर 'रमन इफेक्ट' को तो देख लिया अब हम शराब का रमन पर प्रभाव देखेंगे। रमन ने नम्रतापूर्वक शराब पीना अस्वीकार कर दिया। सन् १९३३ में रमन की बैंगलोर में '**इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साइन्स**' का निदेशक नियुक्त किया गया। वे सन् १९४३ तक कार्यों के साथ संगीत वाद्य यन्त्रों पर भी कार्य करते रहे विशेष रूप से 'तम्बूरा' पर उन्होंने कार्य किया।

भारत के स्वतन्त्र होने पर सन् १९४८ में उन्हें भारत सरकार ने '**राष्ट्रीय प्रोफेसर**' घोषित किया। सन् १९५४ में उन्हें भारत रत्न के अलंकार से अलंकृत किया गया। सन् १९५७ में अंतरराष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार दिया गया। सन् १९७० ई. में उनका देहान्त हो गया। इति.

भ्रष्टाचार विरोधी योद्धा, वैदिक धर्म-संस्कृति रक्षक, दानवीर भामाशाह, आर्य हृदय सम्राट, क्षत्रिय कुलश्रेष्ठ, ओजस्वी वक्ता : वृद्ध तुर्क राजर्षि ठाकुर विक्रमसिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष : राष्ट्र निर्माण पार्टी के ७०वें जन्मदिवस १९ सितम्बर २०१२ को प्रकाशित 'भारतीय जागो' साक्षात्कार पुस्तक के माध्यम से जानिये ठाकुर सा. का जीवन परिचय....

'भारतियों जागो'

प्रश्न- ठाकुर साहब आपको वृद्ध तुर्क क्यों कहते हैं क्या श्री चन्द्रशेखर जी से कुछ सम्बन्ध रहा उन्हें युवा तुर्क कहते थे?

उत्तर- आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया श्री चन्द्रशेखर जी का मैं बहुत सम्मान करता था-उनकी सादगी वीरता, दृढ़ता और दबंगता का में कायल हूं। जब इन्द्रा की तूती बोल रही थी तब चन्द्रशेखर ही थे जो संसद में और संसद के बाहर भी राजपूती वीरता से गरजते थे और सारे जीवन, देश, विदेश में कभी किसी से दबे नहीं सच कहा और दबंगता से कहा।

मैं आज इस अवस्था में भी सच बात दृढ़ता और दबंगता से सर्वत्र कह सकता हूं और कह रहा हूं, इसलिए लोग मुझे वृद्ध तुर्क कहते हैं और चन्द्रशेखर की दबंगता देखते हैं।

प्रश्न- राजा विश्वनाथ प्रतापसिंह के बारे में आप क्या कहेंगे?

उत्तर- राजा साहब से भी मेरा बहुत निकट का सम्बन्ध रहा और जब उन्होंने जन मोर्चा का गठन किया तो उनकी कोठी पर ही मै सबसे पहले मोर्चे का सदस्य बना। उनकी पेंटिंग और कविताओं से भी मुझे बहुत लगाव था। उनकी ईमानदारी, सादगी, गरीब झुग्गी वालों के प्रति दया और सभी धर्म-जाति वालों के साथ समानता उनके गुण थे। बोफोर्स की तोप दाग कर भ्रष्ट सरकार को गिरा दिया। वे आज भी भ्रष्टाचार की आंधी में प्रकाश स्तम्भ के समान चमक रहे हैं।

प्रश्न- चौधरी चरण सिंह के बारे में क्या कहेंगे?

उत्तर- चौधरी साहब सीधे-सादे सज्जन व्यक्ति थे। कट्टर आर्य समाजी ईमानदार और दृढ़ प्रशासक थे उनसे भी मेरा निकट का सम्बन्ध रहा।

प्रश्न- जब कई प्रधानमन्त्रियों के साथ आपका सम्बन्ध रहा तो राजनैतिक लाभ क्यों नहीं उठाया?

उत्तर- यह कभी मन में नहीं आया।

प्रश्न- ठाकुरों की छवि जनता में अच्छी नहीं है ऐसे में आपके नाम के साथ ठाकुर लगा है क्या कहेंगे?

उत्तर- ठाकुर नाम के प्रति द्वेष जो फिल्मों ने फैलाया है कुछ राजनीतिज्ञों का भी उसमें हाथ रहा। किन्तु ध्यान रखे अगर राजपूतों के बारे में जानना है तो कर्नल टॉड को पढ़े।

आज भी संसार की सर्वश्रेष्ठ जाति और नस्ल कोई है तो वह आर्य जाति है और आर्यों में भी वीर-दयालु-दानी, दबंग दृढ़ प्रशासक है तो वह राजपूत (क्षत्रिय) ही हैं।

वैसे मैं आर्य समाजी हूं-जाति-पाति में विश्वास नहीं करता, किन्तु वर्ण व्यवस्था का कट्टर समर्थक हूं और व्यवहार में सबसे वर्तने के बाद इसी निर्णय पर पहुंचा हूं कि प्रशासन तो क्षत्रिय ही चला सकते हैं। वैसे तो बिहार में नााई भी ठाकुर लगाते हैं, भरतपुर में सब जाट ठाकुर लगाते हैं, राजस्थान में कुंवर चांदकरण शारदा वैश्य थे तो इसलिए इसमें ना जाकर खानदानी वीर लोगों को आगे लाओ। सरकार को चाहिए कि कोई भी न जाति लिखे, न जाति पूछे कानूनन जाति प्रथा समाप्त करें।

बिन भय होय न प्रीत-
राज न कसीदे से चलता है न दोहे से चलता है।
राज तो लोहे से चलता है।
जो बात और तलवार का धनी हो वही क्षत्रिय है।

बिना क्षत्रिय के आज भारत की दुर्दशा हो रही है वरना चीन और पाकिस्तान की हिम्मत होती, इधर आंख उठाकर भी नहीं देख सकते थे। भारत की ओर आंख उठाने वालों की हम आंख निकाल लेंगे। हाथ उठाने वालों के हाथ काट देंगे, अभी किसी वीर ने हूंकार कहां भरी है। ये आतंकवादी अपनी सौ पीढ़ियों को कह जाएंगे कि लाल किला और संसद में कोई क्षत्रिय बैठा है। सावधान।

प्रश्न- ठाकुर साहब अब आप राजनीति में क्यों आ गये?

उत्तर- वैसे तो मैंने २८ वर्ष की आयु में मेरठ से १९७१ में लोकसभा चुनाव लड़ा था, लेकिन देखा ईमानदार आदमी कहां से इतना पैसा लाये कैसे चुनाव लड़े या भ्रष्ट काम करें। तो मैं राजनीति से अलग हो गया, किन्तु आज अनुभव करता हूं कि अच्छे लोगों को राजनीति में आना चाहिए और देश को बचाना चाहिए।

प्रश्न- आरक्षण के बारे में क्या

आर्य समाज के गौरव

आर्य समाज के जिन लोगों ने तन-मन-धन से सेवा की है और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तानुसार जीवन पर चलते हुए आर्य समाज के गौरव को बढ़ाया है। ऐसे १०० विद्वानों का जीवन चरित्र, कार्य, उपदेश आदि को लिए हुए आर्य समाज के गौरव नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ होगा, जो आर्ट पेपर पर छपेगा। कृपया आप अपना एक रंगीन पासपोर्ट साइज फोटो, जन्म से आज तक का पूर्ण विवरण भेजने की कृपा करें। जिसमें संन्यासी, महोपदेशक, भजनोपदेशक, विदुषी महिलाएं, राजनेता, शिक्षाविद, लेखक, समाजसेवी, दानी एवं उद्योगपति आदि होंगे। जिनकी आयु ४० वर्ष से ऊपर हो। समिति के निर्णयानुसार प्रकाशन होगा।

आपका ठाकुर विक्रम सिंह
चलभाष-९५९९१०७२०७, दूरभाष-०११-४५७९११५२

कहेंगे?

उत्तर- धर्म-जाति, भाषा-प्रान्त आदि के आधार पर कोई आरक्षण नहीं होना चाहिए, न गरीब-अमीर के नाम पर, न आदिवासी वनवासी के नाम पर, न महिलाओं के नाम पर, भारत एक राष्ट्र सब नागरिक समान मेहनत करो, आगे बढ़ो बस।

प्रश्न- बूचड़खानों के बारे में क्या कहेंगे?

उत्तर- परमात्मा सब जीवों को कर्मों का फल देता है आप निरपराध प्राणियों की हत्या करके बच जायें ये असंभव है। परमात्मा ने गाय, भैंस, बकरी सभी प्रकार के पशु अत्यन्त उपकारी जीव बनाये हैं और इनसे ही मनुष्य का जीवन चलता है क्या बिना दूध के कोई बच्चा, स्त्री अथवा पुरुष गुजारा कर सकते हैं। खून की नहीं घी-दूध की नदी बहाओ। मुझे अवसर मिला तो सभी बूचड़खाने एक दिन में बंद कर दूंगा।

प्रश्न- अगर आपके हाथ में प्रशासन हो तो आप क्या करेंगे?

उत्तर- अभी दिल्ली दूर है अगर आप पूछते हैं तो बता देता हूं कि प्रजातन्त्र में सभी को अपनी बात कहने का अधिकार है तो सुनो प्रजातन्त्र की ऐसी की तैसी-ऐरे-गैरे नत्थू खैरे राजनीति में आ गए।

अनायका विनश्यन्ति, नश्यन्ति बहुनायका।

जहां नेता न हो तो वह राष्ट्र भी नष्ट हो जाता है और जहां सब नेता हो जायें वह राष्ट्र भी नष्ट हो जाता है। अगर मेरा बस चले तो सब विधानसभाएं भंग कर दूं। भारत में बंगाली-पंजाबी, मद्रासी, बिहारी, मराठी सब है पर हिन्दुस्तानी नहीं है?

प्रशासन- भारत में केवल ५०० जिले होने चाहिए। एक जिले से एक सदस्य चुनकर आए। एमपी कम से कम ग्रेजुएट हो, आयु ३० से ६० वर्ष के बीच होनी चाहिए। चुनाव ग्राम पंचायत से लेकर राष्ट्रपति तक एक साथ हो और पांच वर्ष में ही हो। देश का सब पैसा ५००० के करीब एमएलए, ७०० से ज्यादा एमपी, समस्त गवर्नर, इनके रिश्तेदार, दोस्त, लूट मची है लूट वाह भाई वाह अच्छा प्रजातन्त्र, अच्छा तमाशा चल रहा है। पांच सौ राजाओं को रोते थे आज एक लाख राजा बन गए लूट मची है सबको सलाखों के पीछे पहुंचाओं।

बड़े साम्राज्य में ९ रत्न रहते थे। महाराज विक्रमादित्य का शासन आज के भारत से बड़ा था दस आदमी सारा प्रशासन चलाते थे। महाराज ने ९३ वर्ष तक शासन किया। उन्हीं के नाम पर विक्रमी सम्वत् चल रहा है।

प्रश्न- वीआईपी या वीवीआईपी के बारे में क्या कहेंगे?

उत्तर- भारत के लोगों में अहं बहुत है, बनते बहुत हैं, और है कुछ भी नहीं। वीआईपी केवल और केवल एक दर्जन होने चाहिए। राष्ट्रपति-उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री-उपप्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, तीन जनरल, मुख्य न्यायाधीश, रिजर्व बैंक का गवर्नर, चुनाव आयोग का अध्यक्ष, योजना आयोग का अध्यक्ष, राष्ट्र गुरु, राष्ट्रकवि, राष्ट्र चित्रकार २१ से ज्यादा किसी कीमत पर नहीं, सब लाल-नीली बत्ती लगाये भ्रष्ट लोग घूम रहे हैं और हूटर लगाकर खुदा बन गये हैं, विदेशों से सीखे जहां प्रधानमन्त्री भी अपना बैग लेकर बस में बैठकर चल पड़ता है, तभी तो इन नेताओं को जनता के कष्ट का पता लगेगा, सड़के कैसी है? भीड़ कितनी है? गुंडागर्दी का क्या आलम है?, दो-दो कौड़ी के नेता और मन्त्री १००-१०० सुरक्षा कर्मी लगाये बैठे हैं। शर्म भी नहीं आती सब पैसा लूट ले गये बदमाश, चोरी और सीनाजोरी धिक्कार-धिक्कार।

प्रश्न- भ्रष्टाचार, कालाधन, लोकपाल, अन्ना हजारे एवं स्वामी रामदेव के बारे में क्या कहेंगे?

उत्तर- अन्ना हजारे एवं स्वामी रामदेव दोनों देशभक्त हैं मैं उनका पूर्ण समर्थन करता हूं।

भ्रष्टाचार के मुख्य कारण नेता, पुलिस, सरकारी कर्मचारी है नेता कम कर दूंगा, पुलिस को बर्खास्त कर दूंगा, सरकारी कर्मचारी कम से कम होंगे और उन्हें केवल साइकिल मिलेगी कार नहीं। साइकिल पर बस्ता टांगो घर-घर जाओ और जनता के सेवक हो काम करो, हराम की रोटी न खाओ, सब दफ्तरों के ऐसी समाप्त, सेवा करो सेवा।

प्रश्न-दंड व्यवस्था?

उत्तर- अधिकतर मामलों में सर कलम कर दो और हाथ-पैर काट दो। मौत के बदले मौत।

प्रश्न- यूपीए, एनडीए को क्या कहेंगे?

उत्तर- दोनों पाखण्डी, भ्रष्टाचारी, देशद्रोही हैं।

प्रश्न- किसान के बारे में कुछ कहे?

उत्तर- पच्चीस बीघे से कम जमीन न हो और ५०० बीघे से ज्यादा एक व्यक्ति पर न हो। खेती

विशेष

मेरे पूज्य दादा ठाकुर लटूर सिंह जी ने स्वामी दयानन्द जी महाराज के दर्शन सूरजकुंड मेरठ में किए, महाराज का व्याख्यान यज्ञ पर चल रहा था। दादा जी ने महाराज के पैर छुए और उनका आशीर्वाद पाया। अपनी बैठक बनवाई तो उसमें बड़ा हवनकुंड बनवाया। जिसमें यज्ञ आदि होते रहे। मेरे बाबा ठा. अमरसिंह जी कट्टर आर्य थे। आस-पास के सभी गांवों में अनेक आर्य समाजों की स्थापना की। मेरे ताऊ ठाकुर बलवीर सिंह बात के धनी मरोड़ गांव के ठाकुर थे। साथ ही पिता ठाकुर रणवीर सिंह पहलवान क्रान्तिकारी थे। पूज्य स्वामी भीष्म जी महाराज, जिन्हें राष्ट्रपति ज्ञान जैल सिंह भी अपना गुरु मानते थे। हमारे परिवार के गुरु थे। वह मेरे पिताजी के विवाह (बारात) में गए थे और मेरे विवाह में भी गए थे। अतः मैं जन्म से पूर्व और स्वामी दयानन्द जी के समय से ही आर्य समाजी हूं। अतः सत्य बात कहने में न डर लगता और न ही किसी से दबना सीखा। **दयानन्द के ये शब्द अन्यायकारी चक्रवर्ती सम्राट से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे।**इन शब्दों ने मेरे हृदय में अमिट छाप छोड़ी है।

राष्ट्र की स्वतन्त्रता के मुख्य सूत्रधार, आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द थे और १८५७ की क्रान्ति का सूत्रपात भी मेरठ से उन्हीं ने किया। रानी झांसी, तात्या टोपे, कुंवरसिंह, नाना साहब आदि उनके शिष्य थे राष्ट्र ने आज उन्हें भुला दिया। इसलिए राष्ट्र-जनता दुःखी है।

के अच्छे साधन जुटायेंगे और आर्गेनिक खेती करेंगे। सब रासायनिक खाद जहर समाप्त करेंगे।

प्रश्न- शिक्षा के सम्बन्ध में आपकी क्या योजना है?

उत्तर- गांव-गांव में प्राथमिक विद्यालय, बड़े गांव में दस श्रेणी तक बड़े शहरों में उच्च विद्यालय। सभी शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य होगी। वेदों से लेकर भारतीय संस्कृति-भूगोल, इतिहास का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। अंग्रेजी समाप्त करेंगे अन्य सब भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि लागू करेंगे।

प्रश्न- जो मुख्यमंत्री प्रॉपर्टी डीलर बन गये हैं उनका क्या करेंगे?

उत्तर- सभी को जेलों में डाला जायेगा और चक्की पिसवाई जायेगी।

प्रश्न- आप अपने जन्म से आज तक की कुछ कहानी सुनाए?

उत्तर- मेरा जन्म स्वतन्त्रता से ४ वर्ष पूर्व अर्थात् १९ सितम्बर सन् २०४३ तद्नुसार आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि श्राद्ध पक्ष, दिन रविवार विक्रमी सम्वत् २००० को ग्रा. खेड़ी राजपूतान पो. खतौली, मुजफ्फर नगर (उ.प्र.) में एक उच्च जमींदार राजपूत परिवार में हुआ। माता का नाम शरबती देवी, पिता का नाम ठाकुर रणवीर सिंह था। परिवार कट्टर आर्य समाजी था। स्वामी दयानन्द जी के समय से ही, इसलिए राजपूत होते हुए मांसाहार, शराब आदि दुर्गुणों से बचे रहे और समाज के निम्न वर्ग को साथ मिलाने, ऊंचा उठाने लिए बड़ा कार्य किया। आज भी वही भावना मौजूद है। **शेष भाग पृष्ठ ३६ पर**

भारत माता की जय भारत **निर्वाचन आयोग द्वारा पंजीकृत राजनैतिक दल** **वन्दे मातरम्**

राष्ट्र निर्माण पार्टी- घोषणा पत्र

ए-४१, लाजपत नगर-२, (निकट मेट्रो स्टेशन) नई दिल्ली-११००२४

भारत राष्ट्र सर्वोपरि है, इसकी उन्नति के लिए हम सब समर्पित हैं। भारत को संसार में सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनाया जाएगा। परिवहन, संचार बिजली, पानी, सड़कों की सर्व सुलभता के लिए प्रभावशाली योजनाएं बनाई जाएंगी। सभी नदियों को आपस में मिलाया जाएगा। नदी नाले प्रदूषण मुक्त होंगे। २४ घंटे बिजली और ० प्रतिशत क्राइम हमारा वादा।

स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियों को प्रोत्साहन दिया जाएगा। शाकाहार के लाभ जनता को बताये जाएंगे। शराब, धूम्रपान एवं अन्य नशों को बढ़ावा नहीं दिया जाएगा।

डॉ. वरुण वीर
सचिव

१. आरक्षण- धर्म, जाति, भाषा, प्रान्त आदि किसी भी आधार पर कोई आरक्षण नहीं होगा। भारत एक राष्ट्र है। सब नागरिक समान हैं। सबको उन्नति करने का समान अधिकार है। योग्यता का सम्मान करना सीखें, योग्य बनो और आगे बढ़ो। नेताओं की भी योग्यता लागू की जाएगी।

२. अहिंसा- किसी भी निरपराध प्राणी की हत्या नहीं होगी। गो-पालन और कृषि को विशेष प्रोत्साहन दिया जाएगा। देश में खून की नहीं घी- दूध की नदियां बहेंगी। मांस के आयात-निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध होगा।

३. शिक्षा- शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य की जाएगी। प्रोफेशनल शिक्षा भी मुफ्त दी जाएगी। भारतीय भाषाओं के साथ हिन्दी को विशेष प्रोत्साहन दिया जाएगा। महिलाओं को सम्मान एवं युवाओं को प्रोत्साहन दिया जाएगा।

४. न्याय एवं दण्ड- प्रत्येक मुकद्मे का फैसला अधिक से अधिक ६ महीने में होगा। न्याय में देरी अन्याय ही है। दंड व्यवस्था अत्यन्त कड़ी होगी। किसी भी नागरिक के साथ कोई भेदभाव नहीं बरता जाएगा।

५. परिवार नियोजन- सभी भारतीयों के लिए अनिवार्य रूप से लागू किया जाएगा।

६. चुनाव सुधार- ग्राम प्रधान से लेकर राष्ट्रपति तक के चुनाव ५वर्ष में ही होंगे और सब चुनाव एक साथ ही होंगे जिससे राष्ट्र के संसाधनों एवं समय का अपव्यय रुकेगा।

७. सेना- भारतीय सेना को सर्वश्रेष्ठ बनाया जाएगा, जिससे कोई भी देश हमारी ओर आँख न उठा सके। भारतीय सीमाओं का विस्तार किया जाएगा।

८ फांसी- आतंकवादी, भ्रष्टाचारी, बलात्कारी, रिश्वतखोर, मिलावटखोर, जमाखोरों को फांसी पर चढ़ाया जाएगा।

९. दफ्तर- जनता को अपनी सुविधाओं और अभावों से मुक्ति के लिए सरकारी दफ्तरों के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे। सरकारी कर्मचारी जनता के पास जाएंगे। समस्याएं जानकर तुरन्त निराकरण करेंगे। जनता की सुविधा का पूरा ध्यान रखा जाएगा और जनता पर ५ प्रतिशत से ज्यादा टैक्स नहीं होगा। प्रत्येक सप्ताह का काम सप्ताह में ही पूरा करना होगा।

१०. किसान- किसान राजाओं का राजा है, उसकी आर्थिक हालत सुधारी जाएगी। लागत के अनुरूप भाव होंगे और उसे अपनी फसल बेचने का पूर्ण अधिकार होगा। ●

आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान

समाधानकर्ता
- आचार्य सोमदेव आर्य -
महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल
ऋषि उद्यान, अजमेर (राजस्थानः
चलभाष- ८६१९६३५३०७

जिज्ञासा- १ मनुस्मृति कितनी प्राचीन है?

२. महर्षि दयानन्द जो सृष्टि उत्पत्ति काल १ अरब ९६ करोड़ वर्ष पूर्व बताया है, उन्होंने इस अवधि का निर्धारण किस आधार पर किया है?

जिज्ञासु-प्रो. अरविंद दुबे **akvig.pec.iit.xlri@gmail.com**

समाधान- हमारा वैदिक साहित्य प्राचीन है, मनु स्मृति को अत्यधिक प्राचीन माना जाता है। इसका काल आदि सृष्टि महर्षि दयानन्द व अन्य वैदिक विद्वान मानते हैं, जो मनु का काल है, वही मनुस्मृति का काल है। **अर्थात्** - आदि सृष्टि में हुए महर्षि ब्रह्म के पौत्र मनु हुए। उन्हीं मनु से मनुस्मृति मानव का संविधान रचित हुआ। इससे आदि सृष्टि, मनुस्मृति का काल सिद्ध होता है। दूसरा- हमारा प्राचीनतम साहित्य वेद व ब्राह्मण आदि ग्रन्थ हैं, उनमें वेद अपौरुषेय है। पौरुषेय ग्रन्थ तैतिरिय आरण्यक आदि ग्रन्थों में मनु की घटनाओं का वर्णन है, इससे भी मनु स्मृति का प्राचीन होना सिद्ध होता है।

इस विषय में मनुस्मृति के अधिकारिक वैदिक विद्वान मनुस्मृति के भाष्यकार गुरुकुल कांगडी के उपकुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने विस्तार से लिखा है, हम यहां उनके लेख को ज्यों का त्यों उद्दृत कर रहे हैं।

''मनु और मनु स्मृति काल निर्धारण-

मनुस्मृति में हुए प्रक्षेपों ने जिन बातों को सर्वाधिक क्षति पहुंचायी है, उनमें एक है मनु और मनुस्मृति का काल निर्णय। लेखकों ने मनु स्मृति में प्राप्त वर्णनों पर विचार किया है और उनके अनुसार ही काल का अनुमान लगाया गया है। कालनिर्णय के लिए आधार बनाए गए उन वर्णनों पर आगे विचार किया जाएगा, जिसके आधार पर मनुस्मृति को अर्वाचिन घोषित किया है। यहां प्रथम मनु और फिर वर्तमान मनुस्मृति के काल निर्धारण सम्बन्धी अन्य आधारों पर विचार किया जाता है। पूर्वोक्त विवेचन से यह मत स्थिर हो गया है कि स्मृति, धर्म, नियम आदि प्रसंग में प्राप्त होने वाला मनु स्वायम्भूव मनु ही है। इस समस्त विवेचन और ग्रन्थ में मनु नाम से यही अभिप्रेत होगा

(क) प्राचीन भारतीय साहित्य में स्वायम्भूव मनु का काल-

मनु के काल का अनुमान लगाने में मनुस्मृति तथा मनुस्मृति से भिन्न भारतीय साहित्य में प्राप्त वंशावलिया ही सहायक हैं। मनुस्मृति में तीन स्थानों पर मनु के वंश की चर्चा है। (क) ब्रह्म से विराज, विराज से मनु, मनु से मरीचि आदि १० ऋषि उत्पन्न हुए। (मनु. १.३२.३५) , (ख) ब्रह्म से मनु ने धर्मशास्त्र पढ़ा, मनु से मरीचि, भृगु आदि ने यह विद्यावंश के रूप में वर्णन है। (मनु. १.५८.६०), (ग) हिरण्यगर्भ=ब्रह्म के पुत्र मनु हैं और मनु के मरीचि आदि। (३.१९०) यद्यपि मनु स्मृति के प्रसंगों में ये तीनों ही स्थल प्रक्षिप्त होते हैं, किन्तु पारम्परिक जनश्रुति के रूप में यदि उन्हें स्वीकार करें तो स्वायम्भूव मनु पुत्र या शिष्य के रूप में ब्रह्मा से दूसरी पीढ़ी में उल्लेखित है। यही तथ्य इसके स्वायम्भूव (स्वायं भू=ब्रह्मा, उसका पुत्र या शिष्य) विशेषण से स्पष्ट होता है।

२. महाभारत तथा पुराणों में भी वंशावलियां प्राप्त हैं उनमें भी मनु को ब्रह्मा का पुत्र बताया गया है अथवा शिष्य के रूप में उसका सीधा सम्बन्ध ब्रह्मा से वर्णित है। (महा. आदि. १.३२/ शान्ति ३३५.४४)

प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक मान्यताओं के अनुसार ब्रह्मा को आदि सृष्टि में माना जाता है और भारत का प्रत्येक कुलवंश तथा विध्यावंश ब्रह्मा से ही प्रारम्भ होता है। इस प्रकार मनु का काल भी आदि सृष्टि का स्थिर होता है।

३. इसी मान्यता को निरुक्त ने मनु का मत उद्घृत करते हुए एक श्लोक से पुष्ट किया है -

अविशेषेण पुत्राणां दायो भवति धर्मतः।
मिथुनानां विसर्गादौ मनुः स्वायं भुवोऽब्रवीत ।।३.४।।

अर्थात् - दायभाग में पुत्र और पुत्री, दोनों का अधिकार होता है- यह विसर्गादौ- आदि सृष्टि के आदि काल में स्वायम्भुव मनु ने कहा है।

यहां स्पष्टतः मनु का काल आदिसृष्टि बताया गया है, महर्षि दयानन्द इसी मत का समर्थन करते हुए लिखते हैं- महर्षि मनु आदि सृष्टि में हुए।

४. भारतीय चतुर्युग और मनवन्तर कालगणना पद्धति- मनुस्मृति प्रथम अध्याय की श्लोक संख्या ६४, ७३, ७९,९० अनुसार सृष्टि उत्पत्ति को हुए एक अरब,

आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान
प्रश्न आपके, उत्तर मूर्धन्य वैदिक विद्वानों के

समस्त पाठकगणों से अनुरोध है कि आपकी ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति, पुनर्जन्म, कर्मफल व्यवस्था, मनुष्य जीवन, धर्म- संस्कृति आदि विषयों से सम्बन्धित कोई जिज्ञासा, शंका, अथवा प्रश्न हो तो लिख भेजें। आपकी जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्नों का समाधान वेद शास्त्रों के मर्मज्ञ मूर्धन्य विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत किया जावेगा।अपनी जिज्ञासाएं डाक से अथवा वाट्सएप नं. ७८६९०७३९१३ पर भेजें। उपरोक्त नं. पर अन्य कोई सामग्री न डालें तथा एक माह में मात्र एक जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्न करें। उपरोक्त नम्बर पर वार्तालाप पूर्णतः निषेध है।

छियान्नवे करोड़ आठ लाख, तरेपन हजार, एक सौ चौदह वर्ष बीत चुके हैं और पंद्रहवा सृष्टि संवत् इस वर्ष अर्थात् ईस्वी सन् २०१७ और विक्रम सं. २०७४ में चल रहा है। इकहत्तर (७१) चतुर्युगियों का एक मनवन्तर होता है। स्वायम्भूव, स्वरोचिव औत्रामि, तामस, रैवत, चाक्षुष- ये छह मन्वन्तर बीत चुके हैं। सातवां वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है। इस मन्वन्तर की चतुर्युगी में यह कलियुग का समय चल रहा है।

इस सृष्टि उत्पत्ति के समय को सुनकर पाश्चात्य और आधुनिक लोग अत्यधिक आश्चर्य करते हैं और विश्वास भी नहीं करते। उन्हें यह जिज्ञासा होती है कि कालगणना का इतना हिसाब कैसे रखा गया। इसके उत्तर में उन्हें एक व्यवहार में प्रचलित प्रमाण सम्पूर्ण देश में उपलब्ध हो जायेगा। भारतीयों ने वर्षों की बात तो छोड़िये पल और प्रहर तक का हिसाब रखा है। ज्योतिषीय पंचागों में यह आज भी उपलब्ध है। विवाह आदि धार्मिक कृत्यों में संस्कार के समय एक संकल्प की परम्परा है, उसमें '**आर्यावर्त्ते वैवस्वत मन्वन्तरे कलियुगे अमुक प्रहरे...**' आदि बोलकर विवाह का संकल्प लिया जाता है। इस प्रकार परम्पराबद्ध रूप से समय का हिसाब सुरक्षित है।

उपलब्ध भारतीय वंशावलियों के अनुसार ब्रह्मा को आदि वंश प्रवर्तक माना जाता है और मनु उससे दूसरी पीढ़ी में परिगणित हैं। इस प्रकार इस सृष्टि में जब से मानवसृष्टि का प्रारम्भ हुआ स्वयांभुव मनु उस आदि सृष्टि या आदि समाज के व्यक्ति सिद्ध होते हैं। यह मनु स्मृति के भाष्यकार डॉ. सुरेन्द्र जी का मत है, यह मत महर्षि दयानन्द के अनुकूल व तर्क संगत है। इससे सिद्ध होता है कि मनु स्मृति की प्राचीनता आदि सृष्टि से है।

इस विषय में आधुनिक विद्वानों का मत भिन्न मिलता है वे पाश्चात्य विद्वानों से प्रभावित होते हुए हमारे वैदिक साहित्य को ईशा के पूर्व व ऊपर ही देखते हैं। इस विषय को विस्तार से देखने के लिए विशुद्ध मनुस्मृति का अवलोकन करें।

(ख) महर्षि दयानन्द का सृष्टि उत्पत्ति काल गणना का आधार उस समय के पंचाग, सूर्य सिद्धान्त आदि ग्रन्थ और श्रुति परम्परा है। महर्षि ने इस बात को '**ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका**' के वेदोत्पत्ति विषय में अच्छी तरह से स्पष्ट किया है। ●

पृष्ठ २४ का शेष भाग **सत्यार्थ प्रकाश का ...**

षड्शास्त्रानुसार- **सांख्य प्रकृति से दर्शाता, योग कहत पुरुषार्थ।**
न्याय दिखाता परमाणु, वैशेषिक कालार्थ।
मीमांसा कर्म विस्तारत, ब्रह्म कहत वेदान्त।
सृष्टि रचयिता ईश वह, क्षण से काल परान्त।

षड्शास्त्रों में सांख्य प्रकृति, योग पुरुषार्थ, न्याय- परमाणु, वैशेषिक काल, मीमांसा कर्म विस्तार, और वेदान्त ब्रह्म को सृष्टि रचना का कारण मानते हैं। अर्थात् वेद, उपनिषद्, षड्शास्त्र आदि सभी प्रकारान्तर से परमात्मा को ही सृष्टि रचयिता मानते हैं। परमात्मा जीव और प्रकृति जगत् का नियन्ता है। तीनों अनादि हैं।

संदर्भ ग्रन्थ- महर्षि दयानन्द कृत उपलब्ध वेद भाष्य, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका एवं ऋषिकृत साहित्य, २. चतुर्वेद भाष्य (दयानन्द संस्थान), ३. आर्य पत्रिकाएं, आर्य साहित्य व वैदिक विद्वानों के भाष्यं, ४. उपनिषद् एवं दर्शन। ●

वेदों को जाने

अजब रंग देखा यहां जिन्दगी का,
सलीका है, सबका अलग बन्दगी का!
कोई जा के मन्दिर में घण्टी बजाये,
कोई चढ़ के मस्जिद में बांग लगाये!
गुरुद्वारे जा कोई मत्था टिकाये,
चर्च में जा यशु की प्रेयर सुनाये!
सदियों से पंथों में अटक रहा आदमी है।
भूल ज्ञान वेदों का भटक रहा आदमी है,
धर्म से दूर होता चलन जिन्दगी का... सलीका है...
मजहब का ऐसा यहां रंग देखा,
जिसका न कोई सही ढंग देखा!
दहशत ही दहशत यहां जिसका मतलब,
दानवता को करते यहां जंग देखा।
क्यों ऐसा कुकृत्य कर रहा आदमी है
हाथ शोणित से क्यों धो रहा आदमी है?
ये अच्छा नहीं है, चलन जिन्दगी का... सलीका है...
वेदों को जाने पुराणों की मानें,
राम कृष्ण को माने पर उनकी न माने!
धर्म की बातें तो बढ़-चढ़ के करता,
धर्म के अर्थ को वो फिर भी न जाने!
थाम झूठ का दामन जी रहा आदमी है,
जानकर नित जहर पी रहा आदमी है।
ये कैसा चलन चल रहा जिन्दगी का... सलीका है...
धर्म के नाम पूजा पद्धति को माने,
धर्म के लक्षणों को विपरित जाने!
विश्व में ये द्वन्द सारा इसी बात का है,
इंसानियत के दुश्मन अब तक न जाने।
आतंक से त्रस्त हो रहा आदमी है,
जीवन अधूरा जी रहा आदमी है।
कब तक चलेगा ये चलन जिन्दगी का...सलीका है...
वेदों को जिनने जहां अपनाया,
उन्नत हो मानव को, मानव बनाया!
घोर तम में रोशनी की राह दिखाकर
'**तमसो मा ज्योर्तिगमय**' का गौरव बढ़ाया।
इंसानियत की शिक्षा दे रहा आदमी है।
सु-संस्कारों की रक्षा कर रहा आदमी है।
देकर सुखद आनन्द जिन्दगी का...सलीका है
सबका अलग बन्दगी का!

- राधेश्याम गोयल 'श्याम'
न्यू कालोनी कोदरिया (महू)
चलभाष- ९६१७५९७९१०

युग की पुकार -सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का घर-घर हो प्रचार

सत्य आत्मज्ञान तथा वैचारिक क्रान्ति का मूल स्रोत्र

- पं. उम्मेदसिंह विशारद -
गढ़निवास, मोहक्कमपुर, देहरादून
(उत्तराखण्ड)
चलभाष- ०९४११५१२०१९

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन चरित्र को जिस किसी ने समझा और उनके सम्पर्क में आया उस पर चिरस्थायी प्रभाव पड़ा। सहस्त्रों मनुष्यों के जीवन तो उन्होंने अपने जीवनकाल में ही बदल डाले। उनका भौतिक शरीर आज भले ही हमारे बीच विद्यमान न हो, परन्तु उनके विचार सृष्टि पर्यन्त गुजांयमान होते रहेंगे।

उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ की रचना करके मानव जाति का अवर्णनीय उपकार किया है। सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करना ही इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य है और यही सब सुधारों का मूल भी है महर्षि दयानन्द जी ने इस ग्रन्थ की भूमिका में लिखा है कि ''**सत्योपदेश**'' के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है, वह सत्य उपदेश मनुष्यकृत अनार्ष ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं होता जिससे मानव का कल्याण हो सके। हितकारी प्रमाणिक एवं महत्वपूर्ण विषयों का सुगमता से प्रतिपादन तो आर्ष ग्रन्थों में ही उपलब्ध होता है।

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका से-

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखते हैं कि मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान पर सत्य का प्रकाश किया जाए, किन्तु जो जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत रहता है, इसलिए वह सत्यमत को प्राप्त नहीं हो सकता।

इसीलिए विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर देना, पश्चात् मनुष्य लोग स्वयं अपना हिता-हित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहे। मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने हारा है, तथापि अपने प्रयोजन हठ दूराग्रह और अविधा आदि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य पर झुक जाता है।

इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी और न ही किसी का मन दुखाना व किसी की हानि का तात्पर्य है किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो सत्यासत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है बिना सत्योपदेश के।

प्रत्येक मत के विद्वान पक्षपात छोड़ कर सर्वतन्त्र सिद्धान्त बर्ते- बतावें

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में है वे पक्षपात छोड़कर सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य है, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बाते हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रति में बर्ते-बतावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे, क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विधि दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुःख सागर में डूबो दिया है। इनमें से जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य में धर प्रवृत्त होता है, उससे स्वार्थी लोग विरोध करने में तत्पर होकर अनेक प्रकार विध्न करते हैं।

सत्यमेव पजति नानृतं सत्येन पन्था वितो देवयानः - अर्थात् - सवर्दा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य से ही विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आलम्ब से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी नहीं सत्यार्थ प्रकाश करने से हटते।

महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश से उत्पन्न और बसता हूँ तथापि इस देश के मतमतान्तर की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देश व मत वालों के साथ भी वैसा ही वर्त्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्त्तता हूँ। वैसा विदेशियों के साथ भी सब सज्जनों को भी वर्त्तना योग्य है, क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं वैसे ही मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्य पन में बहिः है।

यह ग्रन्थ चौदह समुल्लास अर्थात् चौदह विभागों में रचित हुआ है। आत्म ज्ञान हेतु पढ़ें-

१. प्रथम समुल्लास में ईश्वर के ओकांराआदि नामों की व्याख्या।

२. द्वितीय समुल्लास में सन्तानों की शिक्षा।

३. तृतीय समुल्लास में ब्रह्मचर्य, पठन-पाठन व्यवस्था, सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने- पढ़ाने की रीति।

४. चतुर्थ समुल्लास में विवाह और ग्रहाश्रम का व्यवहार।

५. पंञ्चम समुल्लास में वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम की विधि।

६. छठे समुल्लास में राजधर्म।

७. सप्तम समुल्लास में वेदेश्वर विषय।

८. अष्टम समुल्लास में जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय।

९. नवम समुल्लास में विद्या, अविद्या, बन्ध और मोक्ष की व्याख्या।

१०. दशवें समुल्लास में आचार, अनाचार, भक्ष्याभक्ष्य विषय।

११. एकादश समुल्लास में आर्यावर्त्तीय मतमतान्तर के खण्डन मन्डन विषय।

१२. द्वादश समुल्लास में चारवाक, बौद्ध और जैन मत का विषय।

१३. त्रयोदश समुल्लास में ईसाई मत का विषय।

१४. चौदहवें समुल्लास में मुसलमानों के मत का विषय। और चौदह सम्मुलास के अन्त में आर्यों के सनातन वेदाविहित मत की विशेषतः व्याख्या लिखी है, जिसको मैं भी यथावत मानता हूँ।

सम्पूर्ण मानव जगत् से आत्म निवेदन

वेद ईश्वर की वाणी है और वेद सृष्टि का संविधान है। वैदिक धर्म व संस्कारों पर चलना ही सच्ची ईश्वर भक्ति व जीवन में सुख शान्ति का मार्ग है, महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को जीवन का सुख पाने के लिए श्रद्धा व जिज्ञासा से अवश्य पढ़े। आपके विचारों में सत्य के क्रान्तिकारी विचार उत्पन्न होंगे। आज के मानव जगत् में विषैले वातावरण में आज के युग की यही पुकार है कि सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का घर-घर हो प्रचार। ग्रन्थ के प्राप्ति का स्थान आर्य समाज मन्दिर व बुक सेलरों से भी प्राप्त हो सकता है। (**वैदिक संसार से भी सम्पर्क कर सकते हैं- सम्पादक**) •

आर्य नहीं बन पाओ तो.....

श्रेष्ठ (आर्य) नहीं बन पाओ तो, सहज सामाजिक बन जाना।
जितनी भी बन सके, उतनी, केवल मानवता ही अपनाना।।
अगर बुरा बनना चाहो तो, रावण से आगे मत जाना।
प्राचीन इतिहास ग्रन्थ में, इसको महा बुरा है माना।।
तब के लोगों की सभ्यता, शिक्षा संस्कृति और थी।
चाहे अच्छा हो या बुरा, पर मर्यादा काबिले गौर थी।।
रावण महा बुरा था, राक्षस था, सीता को चुराया था।
जिसने सुना बुरा माना, सारा समाज गुर्राया था।।
पर नारी को छल कपट से, हरने का अपराध किया।
पर सच मानो साफ लिखा है, बस इतना ही अपराध किया।।
खूब मनाया था, सीता को, महल में तक न लाया था।
कष्ट न हो सीता को कोई, सेवा में तन्त्र लगाया था।।
जिसके बस में तीनों लोक, कर सकता था सारे भोग।
पर बिन मर्जी के बलात्कार का उसको नहीं लगा था रोग।।
राक्षस होने पर भी उसने अपनी मर्यादा को निभाया था।
बुरे बने? पर ये भी कितना? बुरों ने भी सिखलाया था।।
जितना नाम था तीनों लोकों में, सारा धूल में मिलाया था।
पर इससे आगे कृतघ्नता का, ना कोई गुल खिलाया था।।
पर केवल इतने से अपराध पर परिजन सहित मृत्यु मुख देखा।
केवल इतने से अपराध में सोचो उसने क्या सुख देखा।।
लोग कहते हैं कर ली है उन्नति, हमने बहुत ही ज्यादा है।।
आज के उन्नत अपराधों से, वह अपराध बहुत ही सादा है।
वह रावण लगता नन्हा, मुन्ना, अब तो सब उसके दादा हैं।
जितने आते अपराध प्रचार में, उससे तो बहुत ही ज्यादा है।।
एक-एक अबला नारी पर, कई-कई दरिन्दे टुट रहे।
यह जाने कैसी उन्नति हो गई, या भारत के मुकद्दर फूट रहे।।
सीता को रावण ने चुराई, राम ने वैसी ही पाई।
रावण की तो इस बात पर, करनी पड़ेगी बढ़ाई।।
अब तो बुरे को महाबुरे को, यह भी पड़ेगा समझाना।
बुरा बना रह, तू भले ही पर, रावण से आगे मत जाना।।
श्रेष्ठ नहीं बन पाओ तो, रावण से आगे मत जाना।
आर्य नहीं बन पाओ तो, रावण से आगे मत जाना।।

आर्य पी.एस. यादव, आर्य समाज मण्डीदीप
जिला-रायसेन, (म.प्र.),
चलभाष- ९४२५००४३७९

प्रभु का नाम सुमिर नर प्यारे...

प्रभु का नाम सुमिर नर प्यारे, कभी भुलाना ना चाहिए।
पाकर मानुस तन दुनिया में, कभी गंवाना ना चाहिए।
देकर के विश्वास, फिर हट जाना ना चाहिए।
अपना करना भरना, दोष दूजे को लगाना ना चाहिए।
पर नारी से कभी भूल कर, प्रीति लगाना ना चाहिए।
लोक बढ़ाई में आकर के, धन को लुटाना ना चाहिए।।१।।
प्रभु का नाम सुमिर नर प्यारे, कभी भुलाना ना चाहिए।
पाकर मानुस तन दुनिया में, कभी गंवाना ना चाहिए।
झूठ-कपट और चोरी-जारी से, जीवन को चलाना ना चाहिए।
कर के दान, कभी किसी से फिर नट जाना ना चाहिए।
मनुष्य जन्म लेकर के, अच्छे कर्मों से हट जाना ना चाहिए।
नशा-पता करके, कोई रोग लगाना ना चाहिए।।२।।
प्रभु का नाम सुमिर नर प्यारे, कभी भुलाना ना चाहिए।
पाकर मानुस तन दुनिया में, कभी गंवाना ना चाहिए।
हो जो सच्ची बात करो, निन्दा को बढ़ाना ना चाहिए।
भाई-भतीजों, कुटुम्ब-कबीलों को आपस में लड़ाना ना चाहिए।
दया धर्म का मूल है, हत्या का पाप चढ़ाना ना चाहिए।
घर में आया माँ का जाया, आतिथ्य भुलाना ना चाहिए।।३।।
प्रभु का नाम सुमिर नर प्यारे, कभी भुलाना ना चाहिए।
पाकर मानुस तन दुनिया में, कभी गंवाना ना चाहिए।
निर्धन का साथ न दे सको तो, मजाक बनाना ना चाहिए।
रोते हुए को ओर हंसाओ, हंसते को रुलाना ना चाहिए।
किस्मत के सताए को, और सताना ना चाहिए।
कन्या बेलवंश की इसे मिटाना ना चाहिए।।४।।
प्रभु का नाम सुमिर नर प्यारे, कभी भुलाना ना चाहिए।
पाकर मानुस तन दुनिया में, कभी गंवाना ना चाहिए।
काम, क्रोध और लोभ के कारण, जीवन को जलाना न चाहिए।
माता-पिता का आदर करना, ये बात भुलाना ना चाहिए।
पौधे लगा कर प्रदूषण मिटाना, पेड़ काटना ना चाहिए।
कचरा फैला कर धरती माता को, गन्दा करना ना चाहिए।।५।।

जांगिड कुलगौरव प्रकाशचन्द्र पिड़वा
राजस्थान-पाली
चलभाष-९८२९०३२५२९

सत्यार्थ प्रकाश का ८वां समुल्लास और वेद

- बाबूलाल जोशी -
बी-६२ रविशंकर नगर,
एमआईजी कॉलोनी, इंदौर (म.प्र.)
दूरभाष - ०७३१-२४३२२८५

''ईश्वर जीव और प्रकृति के अनादित्व के प्रमाण'

ईश्वर जीव और प्रकृति तीनों अनादि और अनन्त हैं। ईश्वर जीव और प्रकृति का नियन्ता है, सर्वशक्तिमान है, क्योंकि वह बिना किसी की सहायता के अपने सर्व कार्य पूर्ण करता है।

तीनों अनादि तत्व भ्राता के समान है।

अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्नः।
तृतीयो भ्राता घृतपृष्ठो अस्यात्रापश्यं विश्पतिं सप्तपुत्रम् ।।

- ऋग्वेद १/१६४/१

भावार्थ- सर्वगुण सम्पन्न परमात्मा बड़ा भाई, इसका मंझला भाई भोक्ता जीव और अनुज योग्य पदार्थों का आधार घृतपृष्ठ (प्रकृति) है। प्रकृति के सात पुत्रों (महत्तत्व, अहंकार और पञ्च तन्मात्राएं यथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध) इनको मैं देखूं।

काव्यानुवाद

यह जो सारा जगत् है, इसका अधिपति ईश।
योग्य गुणों से पालता, अग्रज है जगदीश।।
मंझला भ्राता जीव है, अनुज भाई घृतपृष्ठ।
सात पुत्र इस अनुज के, मैंने देखे श्रेष्ठ।।
सर्वज्ञ महान् परमात्मा, अल्पज्ञानी है जीव।
बन्धु तीसरा अज्ञ प्रकृति, पोषत सर्व सजीव।।
महत्तत्व और अहंकार, तन्मात्राएं पांच।
सूक्ष्म तत्व सातों रक्षक, यह जगती का सांच।।

दो पक्षी एक वृक्ष पर

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वादत्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।।

ऋ. १/१६४/२०

भावार्थ- दो सुपर्णा (पक्षी) व्यापक और व्याप्त एक परमात्मा और एक जीव (जीव जगत्) तीसरे अनादि प्रकृति वृक्ष पर बैठे हैं। इनमें जो जीव हैं इस वृक्ष रूप संसार में पाप पुण्य रूपी फलों का भोग करता है और दूसरा परमात्मा कर्मों के फलों को न भोगते हुए भीतर और बाहर प्रकाशमान हो रहा है और वह कर्म फल दाता है। इस प्रकार ईश्वर जीव और प्रकृति तीनों अनादि है।

काव्यानुवाद

सुन्दर पंखों के दो पक्षी, प्रकृति वृक्ष सम योग।
उन दोनों में एक जीव है, चखे स्वाद फल भोग।।
अन्य दूसरा पर-ब्रह्म वह, सृष्टा साक्षी है ईश।
जीव और प्रकृति रहती, फलदाता जगदीश।।

वैदिक त्रैतवाद

त्रयः केशिन ऋतुथा विचक्षते संवत्सरे वपत एक एषाम् ।
विश्वमेको अभि चष्टे शचीभिर्ध्राजिरेकस्य ददृशे न रूपम् ।।

ऋ. १/१६४/४४

भावार्थ- ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों प्रकाशमय तत्व हैं जो अपने नियमानुसार कार्य करते हैं। प्रकृति में बीज डालने वाला परमपिता परमात्मा है। जीव (जीव मण्डल) शक्ति और कर्मबुद्धि से भले बुरे कर्म कर सुख-दुःख में सांसारिक व्यवहार सम्पादित करता है। प्रकृति वेग को धारण करती है। इस प्रकार तीनों अनादि जगत् के आधार हैं।

काव्यानुवाद

तीन प्रकाशमय तत्व हैं, कार्य नियम अनुसार।
बीज डालता प्रकृति में, प्रभु सबका आधार।।
जीव शक्ति से कर्म बुद्धि से, देखत जग व्यापार।
भले बुरे कर्मों से पाता, सुख दुःख मय व्यवहार।।
प्रकृति वेग को धारती, देखत है संसार।
वेग रहत अदृश्य सदा, त्रय अनादि आधार।।

सुपर्ण- ईश का इशत्व

एकः सुपर्णः समुद्रामाविवेश स इदं विश्वं भुवनं विचष्टे।
तं पाकेन मनसा पश्यमन्तितस्तं मातारेळिह स उ रेळिह मातरम् ।।

-ऋ. १०/११४/४

भावार्थ- एक सुपर्ण (पक्षी) विश्व में प्रविष्ट होकर इशे प्रकाशित करता है। उसे पवित्र मन और अन्तरात्मा से अनुभव किया जा सकता है। प्रकृति माता अपने अदिति स्वरूप में उसे प्राप्त करती है।

काव्यानुवाद

सुन्दर ज्ञानी एक पक्षी, होता विश्व प्रविष्ट।
सर्व भुवन में भासत है, जानें पवित्र इष्ट।।
ईश व्यापता आत्म में, प्रकृति करती प्राप्त।
सर्व भांति जग रचयिता, निज सत्ता से व्याप्त।।

सुपर्णं विप्राः कवयोवचोभिरेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति।
छन्दांसि च दधतो अध्वरेषु ग्रहान्त्सोमस्य मिमते द्वादश।।

- ऋ. १०/११४/५

भावार्थ- विद्वान और कविगण उस एक ईश्वर को अनेक नामों से पुकारते हैं। यज्ञों में छन्दों की धारणा से सोम (आध्यात्मिक रस) की १२ पात्रों में कल्पना करते हैं।

काव्यानुवाद

विप्र और कवियों द्वारा, बहु विधि कल्पित ईश।
एक मात्र उस ईश को, कहते हैं जगदीश।।
उपमा उत्प्रेक्षा रूपक, धर लेते हैं रूप।

सोम पात्र द्वादश द्वारा, कल्पन यथा स्वरूप।।

इस प्रकार वैदिक त्रैतवाद का समर्थन वेदों में कई स्थानों पर दर्शाया गया है। सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास के प्रश्नोत्तरों से भी यही स्पष्ट है कि ईश्वर ने प्रकृति का निर्माण नहीं किया अपितु प्रकृति के कारण को कार्य स्वरूप प्रदान कर सृष्टि की रचना की और वही इसका पालनकर्ता और प्रलय करता है।

विशाल सृष्टि की स्थिति विस्मयपूर्ण

ऋग्वेद मण्डल १० का १२९वां सूक्त ७ मन्त्रों का नासदीय सूक्त है।

नासदसीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत् ।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम् ।।
- ऋ. १०.१२९/१

भावार्थ- (१) तब उस समय अर्थात् सृष्टि रचना के पूर्व न असत् था और न ही सत् था तात्पर्य यह है कि तब न अभाव था न भाव था, न परमाणु न आकाश जो सबसे सूक्ष्म हैं, वह आवरण क्या था, जानने में कठिन गम्भीर जल कितना गहरा था?

(२) इसी प्रकार इस सूक्त के द्वितीय मन्त्र के अनुसार न मृत्यु थी न अमरत्व का विचार। बस था तो केवल ईश्वर का अस्तित्व।

(३) सूर्यादि के तेज का आधार यह जगत् जो हुआ है और होगा वही परमात्मा पूर्व में था वही उपास्य है।

(४) इस प्रकार चेतन प्रभु के संकल्प से अव्यक्त जगत् ने व्यक्त स्वरूप प्राप्त किया।

(५) परमात्मा की अनन्त सामर्थ्य और महिमा थी, प्रकृति सूक्ष्म और सीमित थी।

(६) इस विषय को ठीक से कोई व्यक्त नहीं कर सकता।

'यथा स्थिति बस प्रभु जाने, वेद का ज्ञान योग।
विद्वन् प्रकटे बाद में, सृष्टि पूर्व संयोग।'

सृष्टि और वेद के गम्भीर ज्ञान को पूर्णरूप से केवल परमात्मा ही जानते हैं।

इयं विसृष्टिर्यत आ बभूव यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सयो अङ्गं वेद यदि वा न वेद।।
- ऋ. १०/१२९/७

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अष्टम समुल्लास का प्रारम्भ इसी मन्त्र से किया है।

भावार्थ- हे मनुष्य! जिसके कारण यह विविध रूपा सृष्टि प्रकाश में आई। जो इसकी उत्पत्ति स्थिति और प्रलयकर्ता है वह परमात्मा है।

काव्यानुवाद

विविध रूप युता यह सृष्टि, विरचित प्राप्त विकास।
निर्माता धारक, प्रलयङ्कर, प्रभु का दिव्य प्रकाश।।

पृथिवी का निर्माण क्रम है कि आकाश में अणु परमाणु धुन्ध रूप में भरे थे, अर्थात् गहरा कुहरा सा कुछ था जैसा कि नासदीय सूक्त से भी ज्ञात है। उसमें परमात्मा की प्रेरणा शक्ति के प्रादुर्भाव से गति का संचार हुआ। कुहरा कुछ स्पष्ट लगा आकाश का दृश्यमान स्वरूप प्रकट होने लगा। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से तलछट जमने की क्रिया से पृथिवी का टापू रूप प्रकट होकर विस्तृत होना। फिर वनस्पति जगत् अन्य जीवधारियों और फिर मनुष्य बस यही वैदिक क्रम है।

यार्णवेऽधि सलिलमग्रे आसीद्यां मायाभिरन्वचरन् मनीषिणः।
यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सेनावृतमृतं पृथिव्याः।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे।। अथर्व- १२/१/८

जल रूप से सृष्टि का होना। ईश्वर के सत्य सिद्धांतों से हमारी इस भूमि का निर्माण हुआ।

काव्यानुवाद

उत्पत्ति पूर्व सृष्टि, जल रूप द्रव्य थी यह।
बुद्धि व युक्तियों से, अनुकूलता से सेवित।।
यह सत्य नियम आवृत्त, आकाश में हृदय है।
ऐसी हमारी भूमि, बल और कांति देवे।।

जल रूप से व्यक्त का सृष्टि का रूप नासदीय सूक्त के तीसरे मन्त्र से पहले ही सारांश रूप में प्रकट किया जा चुका है।

अथर्ववेद के काण्ड ८-१० (२) सूक्त के निम्न ६ मन्त्रों से भी ईश्वर जीव और प्रकृति के अनादित्व को प्रतिपादित किया गया है।

सोदक्रामत् सान्तरिक्षे चतुर्धा विक्रान्तातिष्ठत् ।।१।।
तां देवमनुष्या अभवन्नियमेव बुद्वेद।
यदुभये उपजीवेमेमामुप ह्वयामहां इति।।२।।
तामुपाह्वयन्त ।।३।।
ऊर्ज एहि स्वध एहि सुनृत एहीरावत्येहीति।।४।।
तस्या इन्द्रो वत्स आसीद् गायत्र्यभिधान्य भ्रमूधः।।५।।
वृहच्च रथं तरं च द्वौ स्तनावास्तां
यज्ञा यज्ञियं च वामदेव्यं च द्वौ।।६।।
अथर्व- ८/१०(२) १ से ६

प्रारम्भिक स्थिति में एक रस परमात्मा की व्याप्ति विराट् शक्ति और मुक्ति से लौटे ईश्वरीय शक्ति से उत्पन्न जन थे। विराट् प्रकृति उन्मुक्त आकाश में चारों ओर अपने पराक्रम को दर्शाती हुई ठहर गई। विराट् शक्ति और देव मनुष्यों ने सोचा यही विराट् शक्ति है।।१-२।। उन्होंने उस विराट् शक्ति को पुकारा, उसकी आराधना की अर्थात् सोचा कि हमारे कर्मों द्वारा इस शक्ति का दोहन करेंगे।।३।।

लोक शक्ति और दिव्य मनुष्यों ने कहा हे ऊर्जस्वती धन धान्यदा सत्य स्वरूपा तू हमारे लिए प्राप्तव्य हो।।४।।

जीव ने उस विराट् शक्ति को गाने योग्य वेद विद्या के लिए शक्ति से मेघ की सेचन सामर्थ्य को जाना।

जगत् और बृहद आकाश दोनों द्वारा ईश्वर प्रदत्त वेदज्ञान तथा पञ्चभूत का ज्ञान मनुष्यों के लिए दो स्तनों के समान सिद्ध हुए।

काव्यानुवाद

वह विराट् ऊपर चढ़ी, अन्तरिक्ष के मध्य।
चहुं दिशि विक्रम से फैली, ठहर गई वह भव्य।।
लोक शक्ति दिव्य जन सोचे, यही जानती कर्म।
साधारण व सर्वहित में, यह अवलम्बन मर्म।।
और बुलाया पास से, शक्ति ऊर्ज मय रूप।

सत्यवाणी धन बलवती, प्रकटो सत्य स्वरूप।।
उस विराट का जीव वत्स, गान कथन द्वय शक्ति।
मेघ और सेचन क्रिया, यथा होम अभिव्यक्ति।।
रमणशील जग व्योम द्वाय, वैदिक यज्ञ विधान।
वाम देव्य से प्रकट हुआ दो स्तन दुग्ध प्रदान।।

इस सूक्त के अंशभाग इन ६ मन्त्रों में ईश्वर, जीव और प्रकृति का मनोहारी चित्रण है। जो परमात्मा और अदिति रूपा माँ (प्रकृति) को समझ लेता है, वह धन्य हो जाता है।

ईश्वर ने सृष्टि को कितनी आयु प्रदान की?

ईश्वर सृष्टि रचयिता, पालक और प्रलयकर्ता है। सृष्टि रचना सम्बन्धी मन्त्रों के अवलोकनोपरांत एक सहज प्रश्न मन में उभरता है कि 'ईश्वर ने सृष्टि को कितनी आयु प्रदान की' अथर्व के एक मन्त्र में इसका उत्तर समाहित है।

शतं ते अयुतं हायमान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः।
इन्द्राग्नि विश्वेदेवास्ते ऽनु मन्यन्तामहृणीयमानाः।।
- अथर्व- ८/२/२१

भावार्थ- हे मनुष्य! तेरे लिए सौ और दस हजार वर्षों को दो तीन चार युग हम करते हैं, सब देव अर्थात् दिव्य पदार्थ बिना किसी संकोच के अनुकूल बने रहें।

व्याख्या- मन्त्र के भावार्थ को विस्तृत करने पर सृष्टि की आयु का निर्धारण निम्नानुसार हैं-

शत्म × अयुतम् = दस लक्ष
१००× १०,०००= १०,००,०००
द्वे त्रीणि चत्वारि- गणित में जहां कोई चिन्ह न हो गुणित होता है।
अतः २× ३×४=२४ गुने
२४×१०,००,०००=२,४०,००,००० देववर्ष
यह आयु युगे है अर्थात् सृष्टि और प्रलय युग्म की।
= २,४०;००,००० देव वर्ष
२,४०,००,०००×३६० मानव वर्ष
सृष्टि की आयु = २,४०,००,०००×३६० / २
= ४,३२,००,०००००वर्ष = ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष

गणना विधि संदर्भ- श्रीमान् इन्द्रदेव जी यति द्वारा प्रदत्त शंका समाधान जैसा पं. लेखरामजी ने सर्व प्रथम ज्ञात कराया।

काव्यानुवाद

तीन चार दो का गुणा, अतः हुए चौबीस।
दस हजार सौ से गुणें, रक्षक सबका ईश।।
चौबीस पर छःशून्य से, हुए देव के वर्ष।
गुणित तीन सौ साठ से, मनुज वर्ष उत्कर्ष।।
सृष्टि प्रलय दोनों हुए, युगे शब्द पर ध्यान।
आधा इसको फिर करे, सृष्टि आयु लें जान।।
चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष,काल का योग।
अग्निवायु सब दिव्य पदार्थ, दें अनुकूल सुयोग।

वर्तमान सृष्टि में ७वें मनु (वैवस्वत मनु) का काल चल रहा है। सृष्टि की पूर्णायु १४ मन्वन्तर होती है। एक मन्ववन्तर ७१ चतुर्युगियों का होता है। कलियुग ४,३२,००० वर्ष, द्वापर दूना, त्रेता तिगुना, सतयुग चार गुना एक चतुर्युगी= ४३,२०,००० वर्ष।

१४ मन्वन्तरों की गणना-१४×७१× ४३,२०,०००वर्ष
+ संधिकाल ६× ४३,२०,०००वर्ष
योग ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष= १००० चतुर्युगियां

सर्वशक्तिमान ईश्वर बिना किसी की सहायता से कारण प्रकृति अर्थात् (बीज) से कार्य प्रकृति निर्माण करता है। जीवों को पूर्व कल्प में कृत कर्मों के आधार पर जन्म देता है। वह सब कार्य अपने सत्य सिद्धान्तानुसार ही करता है।

मनुष्य शतायु

शतं ते अयुतं..... मन्यन्तामहृणीयममाना :। अथर्व ८/२/२१

इसी मन्त्र से मनुष्य की आयु सौ वर्षों की हो, यह पं. श्रीपाद दामोदर सातवळेकर जी ने सिद्ध किया है।

शब्दार्थ- ते शतं हायमान= तेरी सौ वर्षों की आयु हो
द्वे युगे= दो सन्धियां (दिन और रात)
त्रीणि = शीत, ग्रीष्म और वृष्टि
चत्वारि=बाल, तारुण्य, मध्यम और वृद्ध
अयुतं कृण्मः = अटूट करते हैं।
इन्द्राग्नी विश्वे देवाः =इन्द्र अग्नि और सब देव
अहृणीयमानाः = बिना संकोच
ते अनुमन्यन्तां = तेरा (तेरी आयु का) अनुमोदन करें।

काव्यानुवाद

हे मनुष्य तेरी पूर्णायु, सन्धि समय दिन रात।
शीत ग्रीष्म वर्षा ऋतुएं, सुखद बहे बस वात।।
बाल तरुण मध्यम व वृद्ध, मिले अखण्डित आयु।
अग्नि वायु सब देव कहें हो तव आयु शतायु।।

सृष्टि रचयिता परमात्मा हिरण्यगर्भ है

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
- यजु. १३/४

तस्माद्वा एतस्मादात्मान आकाशः सम्भूतः। आकाशद्वायुः वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधिभ्योऽन्नम् । अन्नाद्रेतः। रेतसः पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः।।- तैत्तिरीय उपनिषदानुसार

परमेश्वर और प्रकृति से आकाश, अवकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथिवी, पृथिवी से औषधियां, औषधियों से अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से पुरुष। इस प्रकार पुरुष अन्न रसमय है।

शेष भाग पृष्ठ १९ पर

सोलह संस्कार और उनकी महत्ता

संस्कार वह जीवन-साँचा, जिसमें जीव ढलता है।
जैसे-जैसे आयु बढ़ती, अपने आप सँभलता है।।

गर्भाधान बीजारोपण है, यह जीवन का सृजन है।
नर-नारी का मधुर मिलन है, यह पावनतम् बंधन है।
यही प्रथम संस्कार मनुज का, सबसे पहले होता है।
पुष्ट बीज विकसित धरती में, जैसे कृषक बोता है।
वैसे ही मानव अपना आचरण करे, ऋतुदान करे।
क्रमोन्नत वह होता जाता, जो विधियों से चलता है।।
संस्कार वह जीवन साँचा...।

फिर संस्कार पुंसवन आता, संयम पालन करें सदा।
रतिक्रिया से दूर रहें, शिशु जन्म तलक, न यदा कदा।
यज्ञादि विधियाँ अपनायें, खानपान व्यवहार मधुर।
कभी दुखी हो नहीं भार्या पति का हो आचरण मधुर।
यह सीमंतोन्नयन कहाता, विधिपूर्वक पूर्ण करें।
यह संस्कार उसे बल देता, जो गर्भाशय में पलता है।।
संस्कार वह जीवन साँचा...।

जातकर्म फिर आ जाता है, जन्म समय जो होता है।
शिशु में नव स्फूर्ति भर आती, नवसंदेश पिरोता है।
नामकरण का समय उचित है, एकादश दिन में उत्तम।
ऐसा नाम रखें सब मिलकर, मिले प्रेरणा सर्वोत्तम।
फिर तृतीय, चतुर्थ माह में, शिशु को बाहर ले जाएं।
यही निष्क्रमण संस्कार है, शिशु अब आप उछलता है।।
संस्कार वह जीवन साँचा...।

करें अन्नप्राशन की क्रिया, शिशु की छठे माह में तब।
शहद, घृत, दधि साथ भात के, शिशु को अन्न खिलायें अब।
चूड़ाकर्म करें तब आगे, तीन वर्ष में बालक का।
यज्ञ विधि से मातृ पितृ यह कर्म निभायें पालक का।
तीन वर्ष में कर्णभेद भी, कर सकते हैं बालक का।
अष्टवर्ष में करें उपनयन, शिक्षा सत्र निकलता है।।
संस्कार वह जीवन साँचा...।

गुरुकुल में, विद्यालय में अब भेजें, विद्या प्राप्त करें।
कन्या, बालक मनोयोग से वेद, शास्त्र का ज्ञान भरें।
पढ़े उपनिषद्, स्मृतियां, विषयों का ज्ञान करें पूरा।
चढ़ें नित नये सोपानों पर अध्ययन हो पूरा-पूरा।
जब षोड़सी युवती होवे, युवक बने पच्चीस बरस।
यह विवाह का समय उचित है, गृह आश्रम अब चलता है।।
संस्कार वह जीवन साँचा...। •

लौकिक और पारलौकिक सुख, चाहें तो शुभ कर्म करें।
गृहआश्रम की मर्यादाएं मानें, उत्तम कर्म करें।
ईश्वर स्तुति और प्रार्थना व उपासना करें सभी।
धर्मपूर्वक प्रजा बढ़ायें यम, नियमों के व्रती सभी।
कुर्वन्नेवेह कर्माणि शतवर्ष जियें, यश-बल पायें।
मोक्ष मार्ग भी, इसी मार्ग पर चलकर आगे मिलता है।।
संस्कार वह जीवन साँचा...।

अब आता है वानप्रस्थ, जब घर में जन्मे पौत्र प्रथम।
छोड़ें तब घर द्वार, साधना करें वनों में नित्य नितम।
भार्या को भी वन लें जावें, चाहें अपने साथ सभी।
रहें साथ पर मिले नहीं, संयम साधें मुनिव्रती सभी।
योगासन द्वारा, अपनी खोई शक्ति फिर प्राप्त करें।
उत्तम शिक्षा दें जन-जन को, जीवन मार्ग बदलता है।।
संस्कार वह जीवन साँचा...।

जब वैराग्य जगे अंतर में, तब संन्यास ग्रहण कर लें।
काम, क्रोध, मद, मोह, त्याग कर, आध्यात्मिक ऊर्जा भर लें।
भ्रमण करें निर्भय, निशंक हो सदुपदेश सद शिक्षा दें।
उदरपूर्ति के लिए न भटकें, सद्पात्रों से भिक्षा लें।
नित अष्टांग योग को धारें, ध्यान समाधि में विचरें।
जीवन तो नश्वर है, एक दिन तन से जीव निकलता है।।
संस्कार वह जीवन साँचा...।

जो अंतिम संस्कार मनुज का, वह नर मेघ कहाता है।
यह संस्कार भस्म करने तक, यजुर्वेद बतलाता है।
यह अंत्येष्टि संस्कार है, संबंधी सब इसे करें।
देह बराबर घृतादि ले, दाह क्रिया कर भस्म करें।
दिवस तीन पर अस्थि चयन कर, उन्हें खेत, वन में डालें।
यज्ञ विधि से शुद्ध करें गृह, फिर जीवन क्रम चलता है।।
संस्कार वह जीवन साँचा...।

इसके बाद न कोई कर्म है, न कोई संबंध रहा।
प्रिय के आदर्शों हित जीवें, यह पावन अनुबंध रहा।
संस्कार से तन, आत्मा, संतान, प्रजा, गणतंत्र प्रबल।
राष्ट्र सबल होता है, इससे मानवता होती उज्जवल।
यह सोलह संस्कार करें सब प्रदूषण से मुक्त बनें।
भारत माँ का वैभव लौटे, सूरज कभी न ढलता है।।
संस्कार वह जीवन साँचा...

- राम आर्य 'व्यथित' -
१८६, शिक्षक कॉलोनी, विदिशा (म.प्र.)
चलभाष - ८९६२११८९०८

वेदों में मानव मनःशक्ति एवं परमात्मा की प्राप्ति

- मृदुला अग्रवाल -
१९ सी, सरतबोस रोड, कोलकाता-
चलभाष- ९८३६८४१०५१

विश्व में मानव ही ऐसा प्राणी है जिसको परमात्मा ने विवेकपूर्ण मस्तिष्क एवं 'मन' को संयत करने की बुद्धि प्रदान की है। केवल मानव ही अपनी बुद्धि के सहारे अपने मनोवेगों पर अंकुश लगाकर '**मन**' की संयमित, संतुलित शक्ति को भावात्मक स्तर से ऊपर उठाकर परमानन्द प्राप्त कर सकता है। **अथर्ववेद, काण्ड-२, सूक्त-११, मन्त्र-५ के अनुसार परमात्मा ने सूर्यादि के सदृश्य प्रकाशमान, तेजस्वरूप स्वर्ग (सुखधाम) देकर मानव के मन को शक्तिशाली बनाया। वैदिक काल में मन-इन्द्रियों को रोककर आत्मा साक्षात्कार करने की दार्शनिक क्रिया का बड़ा महत्व था।** इसीलिए प्राचीन ऋषियों ने मानव को सर्वोत्तम प्राणी घोषित किया था। मानव प्राणी ही आध्यात्मिक एवं नैतिक आचरण को अनायास ही अपने जीवन में लाकर पूर्णता की ओर स्वयं को विकसित कर सकता है। सांसारिक वस्तुओं के प्रति अनासक्ति, दृढ़ संकल्प, वैराग्य, धैर्य, संतोष, आत्म-संयम, शान्तभाव, मन का निग्रह, मन की प्रसन्नता, अन्तःकरण की पवित्रता, भगवत् मनन, चिन्तन करने का स्वभाव ये सब मन-सम्बन्धी तप कहलाते हैं एवं ये सब सुविकसित मन की विचारधारा ही तो है। अनुशासन द्वारा लाई गई ऐसी '**मनःशक्ति**' शान्ति ही '**शम**' का तात्पर्य है। भक्ति में भी यही तो होता है कि भक्त अपने प्रियतम परमात्मा के ध्यान में मग्न हो जाता है और सांसारिक चेष्टाएं खुद-ब-खुद छूट जाती है। ज्यों-ज्यों हम 'मन' को संयमित करने में सफल होंगे, मन सांसारिक विषयों से हटता जाएगा। '**सन्मार्ग में लगे हुए मन को जो मनुष्य सतावे, उसे परमेश्वर सब तरह से कठिन फांस में बंधा हुआ जीवन देता है-' अथर्ववेद काण्ड-२, सूक्त-१२, मन्त्र २ ।।** 'मन' विचार प्रवाह है। मन के सन्मुख कोई ऊंचा, महान् विचार या लक्ष्य हो तो वह सांसारिक क्षेत्रों में विचरण नहीं करेगा। सर्वव्यापी चैतन्य ब्रह्म के चिन्तन में जब 'मन'ध्यानस्थ होता है, तभी सफलतापूर्वक विषयों से विरक्त हो पाता है जब मन संसार के विषयों से विरक्त होकर अन्तर्मुखी होता है, तभी वह गुणातीत होकर परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयास करता है। अपनी इन्द्रियों एवं चित्तवृत्तियों को संयम में रखकर जो अविचल रहता है, वह जीवात्मा सदैव कीर्ति को प्राप्त करता है।

शुभ और अशुभ विचार मन में ही आते हैं। 'विचार' जो आत्मा और मन को प्रफुल्लित करते हैं जैसे नदियां, किनारों को तोड़कर मैदान में प्रवाहित होती है, वैसे ही मन बुरे विचारों को छोड़कर अच्छे विचारों को प्रवाहित करता है।- ऋग्वेद काण्ड-१

वेद कहते हैं कि मानव जीवन आननन्दमय है। अच्छे विचारों से स्वयं ही जीवन में आनन्दता आती है। मन की तरंग और चित्त की प्रवृत्तियों को पहचानकर 'मन' को पवित्र किया जा सकता है। पवित्र मन ही सबसे बड़ा तीर्थ है। 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' रैदास के निर्मल हृदय से भक्ति के ये दो शब्द अनायास ही निकल पड़े। 'मन' जिसका सुन्दर है, उस घर में परमात्मा का वास होता है। परमात्मा कल्याण द्वारा मन की बुराइयों के छिद्र भर देवे- यजुर्वेद, ३६/२

''**निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भा-वा।**''

– रामायण

जो मानव निर्मल मन का होता है वही परमात्मा को पाता है। शुद्ध अन्तःकरण को परमात्मा को अर्पित करना ही 'अनासक्त योग' कहलाता है। 'मन' समूहवाची है। '**मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार**' ये चारों अन्तःकरणों को मन स्वयं में समेटकर रखता है। योगी पुरुष के अन्तःकरण की वृत्तियां ही उसे परमज्योति परमात्मा को प्राप्त करने में समर्थ होती है, अन्तःकरण से उद्भावित परमात्मा ही उपासक पर नये-नये अनुग्रहों को बरसाता है। हे परमात्मा! आप मन के वेग से भी शीघ्रगामी है अर्थात् मन के पहुंचने से पहले ही सर्वस्व विद्यमान रहते हैं। वेद में परमात्मा के गुणकीर्तन से मन समाहित हो कुटिलताओं से लोहा लेने के लिए ऐसा कठोर हो जाता है जैसा कि वज्र। समाहित मन बलवान व अडिग बन जाता है। यम-नियम इत्यादि योग के साधनों से समाहित मन से शरीर की प्रत्येक नाड़ी में वीर्य का आधान होता है, वीर पुरुष इसी तरह बलवान होते हैं। प्राण-अपान की गति को नियन्त्रित कर एकाग्रता के अभ्यास से मन को दुर्भावनाओं के घेराव किये जाने से बचाना अनिवार्य है। सद्भावनाओं से ओतप्रोत मन शक्ति अमर प्रतीत होती है। यही उसका वास्तविक स्वरूप है।

''मनोजवा अयमान आयसी मतरन्पुरम् ।
दिवं सुपर्णो गत्वाय सोमं वज्रिण आभरत् ।।''

- ऋग्वेद, मण्डल-८, सूक्त-१००, मन्त्र-९ ।।

पदार्थ- ''मन के तुल्य वेगवान, आगे बढ़ता हुआ शुभगति युक्त लोहे के जैसे अति कठोर तत्वों से बनी इसी पुरी (मानव शरीर) को पार कर जाता है। पुनश्च दिव्यता को प्राप्त हो व वीर्यवान इन्द्र हेतु दिव्य सुख को लाता है।''

भावार्थ- 'मानव शरीर को 'पुरी' कहा गया है। 'आयसी' दुष्प्रवेश्य है। यह पुरी 'चेतन-तत्व' आत्मा का निवास स्थान है। इसमें प्रवेश का तात्पर्य है भली-भांति समझना। इसको समझकर ही जीवात्मा परमात्मा का साक्षात्कार कर सकता है। 'सुपर्ण' का एक अर्थ ज्ञानवान है। ज्ञानवान चेतन साधक इस पुरी को भलीभांति जानकर दिव्यता पाकर जीवात्मा को दिव्य सुख प्रदान करता है। शुद्ध मन से अधर्म को त्याग

धर्म के आचरण करने की अत्यन्त प्रशंसा हुई है। धर्मानुकूल आचरण करने से आत्मिक प्रसन्नता प्राप्त होती है। यह मन की शान्ति का प्रतीक है जो पुरुष कार्मिक, वाचिक और मानस तीनों प्रकार से शुद्ध भाव से ओतप्रोत तथा सत्यवादी रहते हैं उनके सामने कोई असत्यवादी ठहर नहीं सकता। वे ही मानवीय एवं महात्मा होते हैं। केनोपनिषद के अनुसार 'मन' सत्य की ओर आकर्षित अवश्य होता है, परन्तु जब तक मन में नाना प्रकार के विकार भरे पड़े हों, तब तक उसे सत्य की ओर ले जाना असम्भव हो जाता है। वैसे मन को सत्य की ओर लाना आज के वैज्ञानिक ढंग से इलेक्ट्रोन और प्रोटोन (परमाणु एवं सूक्ष्माणु) हैं। इलेक्ट्रोन 'मन' है, क्योंकि वह गतिशील है। प्रोटोन 'सत्य' है, क्योंकि वह स्थायी है। मन में नकारात्मक एवं सत्य में सकारात्मक शक्तियां हैं। प्रोटोन (सत्य) के चारों ओर इलेक्ट्रोन (मन) घूमता है। ऋतु अर्थात् सत्य व सृष्टि का आदि तत्व प्रोटोन है। प्रोटोन इलेक्ट्रोन को चुम्बकीय शक्ति से आकर्षित करता है। वेद में **'ऋतुं च सत्यं चामीद्धातपसोऽध्यजायत'' - ऋग्वेद मण्डल-१० सूक्त १९०, मन्त्र-१ में सृष्टि की उत्पत्ति बताई गई है।** तात्पर्य यह है कि मन की गति तथा चेष्टाएं असीम हैं, जिसे परमात्मा ही पूरा कर सकता है। 'मन' ही मानव के सभी दोषों को दूर करते हुए सदा गतिमान रहता है और मस्त हाथी के समान किसी के आधीन नहीं रहता। मन को अपनी सच्चाई पर सदा दृढ़ रहना चाहिए। मन स्वप्न और जाग्रत अवस्था में किसी भी समय तीव्र गति से दूर-दूर तक पहुंच जाता है। जो इच्छाएं, कामनाएं अपने विवेक, बुद्धि-विचार आदि की वजह से जागृत अवस्था में मनुष्य पूर्ण नहीं कर पाता, उन्हें नींद में सोते समय स्वप्नावस्था में, लोक-लज्जा की अनुपस्थिति में, मन द्वारा दुराचरण, कुकर्म आदि के रूप में तीव्रगति से कर बैठता है। यह तो मन की चंचल वृत्ति हुई। ज्ञानपथ के साधकों का प्रारम्भिक लक्ष्य मन को स्थिर एवं एकाग्र करना होता है। स्थिर मनःशक्ति को समाधान भी कहा जाता है। **स्थिर मन से परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है-चंचल मन से नहीं। मन के संकल्प शिव और मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग हैं। शिव-अर्थात् - कल्याणकारी- ''तन्मे मनःशिव संकल्पमस्तु'' यजुर्वेद में ३४वें अध्याय के १ से ६ तक के मन्त्र इसके प्रतीक भी हैं। भोगों से ग्लानि ही मुक्ति की राह होती है।** यह सब मन के द्वारा ही सम्भव है। मन ही मोक्ष और बन्धन का कारण है। **''जितं जगत् केन, मनो येन''** जो मन पर संयम कर लेता है, वह संसार में सदा विजयी होता है। **''हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें, दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें''**- बड़ी अच्छी प्रार्थना है। बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय ने मन के ऊपर बड़ा अच्छा विवरण दिया है- **आकर्षक प्रलोभन के आगे दुर्बल मन फिसल जाता है, झुक जाता है, किन्तु चरित्रवान, व्यक्ति उन्हें ठुकरा देता है, वासनाओं के तूफान के बीच भी अडिग रहता है। विषम परिस्थितियों में भी सुन्दर मन हारता नहीं और न कभी विषय वासनाओं से पराजित होता है। अगर हम युवकों में व्यक्तिगत चरित्र की पवित्रता पैदा कर सकें और उनके इस चरित्रबल को राष्ट्रकल्याण की दिशा में मोड़ सकें तो यह देश की सर्वोत्तम सेवा होगी।** मानव-समाज बहुत बिगड़ गया है। भौतिक विलासिता एवं भौतिक आनन्द ही सर्वस्व छा गया है। मानवीय मन में धन का विस्तार घर कर बैठा है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर मानव कुत्सित कर्म में ज्यादा प्रविष्ट हो रहा है। मानव अगर स्वयं के मन की परिस्थितियों को नहीं सुधारेगा तो अन्धकाररूपी गर्त में गिरता चला जाएगा। वेदों के अनुकूल चलना जरूरी है। वेद ऐश्वर्य देकर भी शान्ति देता है। **मानव जब सुकर्म में प्रवेश करता है तभी से परमात्मा को अपना स्वामी मानने लगता है।** समाज-सुधार के लिए, बच्चों के मन और चरित्र को उज्जवल बनाने के लिए, उनमें संस्कार, दृढ़ संकल्प, सत्कार्य करने की भावना डालनी होगी, तभी वे प्रगति के पथ पर प्रशस्त होंगे। **संसार एक भयानक रणभूमि है। इसमें प्रतिक्षण अपने-अपने अस्तित्व हेतु प्रत्येक जीव संघर्ष कर रहा है। अच्छे कर्मों से मन का उत्थान एवं चरित्र निर्माण अति आवश्यक है। मनुष्यता का एक ही लक्ष्य है- आध्यात्मिकता अन्तःकरण का निर्माण। समाज को ज्ञान-विज्ञान देकर धर्म में लगाना व सुधारना एक महान् प्रयास है।**

ज्ञान मन से उत्पन्न होता है। ज्ञान का लक्ष्य है निर्माण, कल्याण और उत्थान। 'वेद' का अर्थ भी ज्ञान है। ज्ञान हमारा नेतृत्व करे और विज्ञान हमारी सुख-सुविधा का कारण होवे तो हम ऐहिक तथा पारलौकिक आनन्द और शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हे परमात्मा! हमारे 'मन' को अपने प्रकाशित स्वरूप में लगाओ। शुभ संकल्पों के मन में उत्पन्न हो जाने से परमात्मा इन्द्रियों से आनन्द देने के लिए स्वयं को प्रकाशित करता है। मन ही इन्द्रियों का स्वामी है। मनरूपी सूर्य की इन्द्रियां किरणें हैं। मानव के सोते समय मनरूपी सूर्य की किरणें अस्त हो जाती है। सामवेद, मन्त्र १९- के अनुसार- **''मनुष्य श्रद्धा से परमात्मा का ध्यान करते हुए बुद्धि को प्राप्त हो इसलिए सूर्य किरणों के साथ परमेश्वर को हृदय में विराजित करें। मन्त्र में यह सुझाया है कि परमात्मा की उपासना से बुद्धि बढ़ती है, जिससे मिथ्याज्ञान निवृत्त होता है। मिथ्याज्ञान की निवृत्ति से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। ''मनसा'' पद इसलिए है कि 'मन' से परमात्मा का ध्यान करता है, वह हृदयकुण्ड में ज्योतिस्वरूप अग्नि-परमात्मा को सुलगाता है।''** इस ज्योति से मनुष्य के मन में अज्ञान से उत्पन्न अन्धकाररूपी बुरे विचार नष्ट हो जाते हैं और भक्त का मन शुभ और दिव्य हो जाता है। अच्छे विचार 'मन' को तृप्त करते हैं और मन पवित्र हो जाता है।

मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य दिव्य ज्योति परमात्मा को प्राप्त करना है। वेदवाक्यों द्वारा परमात्मा विषयत श्रवण किये हुए अर्थ को

युक्तियों द्वारा मन से विचारने का नाम 'मनन' है- 'मनन को निश्चित बुद्धि द्वारा धारण करने को 'निदिध्यासन' कहते हैं। ''**परमात्मा उपदेश करते हैं कि हे संसार के यात्री! तुम इस दिव्य रथ को मन से धारण करते हुए सर्वत्र विचारों अर्थात् मन को दमन करते हुए इस रथ में इन्द्रियरूप बड़े बलवान घोड़े जुते हुए हैं जो मनरूप रासों को दृढ़ता से पकड़े बिना कदापि वशीभूत नहीं हो सकते, इसलिए तुम मनरूप रासों को दृढ़ता से पकड़ो अर्थात् - मन की चंचल वृत्तियों को स्थिर करो ताकि यह इन्द्रियरूप घोड़े इस शरीर रूपी रथ को विषय मार्ग में ले जाकर किसी गर्त में न गिरायें।**''

-ऋग्वेद, मण्डल-७ सूक्त-९६, मन्त्र-२ एवं कठोपनिषद् १-२-३ में भी। अपने सदाचारों से सम्पूर्ण दुराचारों को त्याग कर, सारथी रूपी बुद्धि से मनरूपी रासों से अमृतपान करते हुए रथी जीवात्मा को धर्म की अन्तिम सीमा पर पहुंचाकर परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार संस्कृत आत्मा द्वारा संसार की यात्रा करने से सब मार्ग सुगम हो जावेंगे। विद्वान् अपने मन की विचार शक्ति द्वारा हमारा मार्ग दर्शन करते हैं। 'मन' ३३देव में एकादश इन्द्रियों में से एक है। परमात्मा जब इन देवों पर कृपा करते हैं, तभी इनको प्रकाश मिलता है- इस कारण भी वह वन्दनीय देव हैं।

नियमित दिनचर्या, सात्विक आहार, आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, दुर्बल मन:शक्ति को मजबूत बनाता है। खाने-पीने के उपयोग में आने वाले पदार्थों का सात्विक, राजसी एवं तामसिक प्रभाव शरीर, मन एवं आत्मा पर पड़ता है। 'मन' अन्नमय हैं। इसकी उत्पत्ति के लिए मेघ निमित्त है। अगर अन्न सुन्दरता से न बनाया गया हो तो उसे ग्रहण करके मन आनन्दित नहीं होता, जिससे परमात्मा का स्मरण भी ठीक से नहीं हो पाता। अन्न व भोजन से 'मन' प्रफुल्लित होता है तो मानसिक तनाव भी कम होता है जिससे मनुष्य का मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। स्वस्थ मन में दूसरे के सुख की एवं हित की कामना रहती है। मानसिक रोगी का मन विभिन्न दिशाओं में भ्रान्तिवश भटक जाता है। वह क्षण-क्षण में बातों को बदलता है। कभी भूतकाल तो कभी भविष्यकाल के बारे में बोलता रहता है। ऐसे मानसिक रोगी को उचित आश्वासन प्रदान कर विविध उपचारों से शान्त व स्वस्थ किया जाना अपेक्षित है। स्वच्छ अन्त:करण में ही परमात्मा होते हैं-इसी का नाम सुखदायी स्थिति (स्वर्ग) है। किसी की प्रशंसा सुनकर ईर्ष्या न हो तो उसका मन स्वस्थ है। चरित्र अच्छा है, उसमें सज्जनता है। दुर्बुद्धि वाले द्वेषी व्यक्ति से हम सदैव दूर ही रहें। ''**योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्म:**'' अर्थात् -जो अज्ञान से हमसे द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं, उन सबकी बुराई को उन बाण-रूपी मुख के बीच दग्ध कर देते हैं। परमात्मा से हमारी यही प्रार्थना भी है। मन के राग-द्वेष समाप्त हो जाते हैं जिनसे पाप से मुक्ति प्राप्त होती है। मन को पापरहित होना चाहिए।

पुरुषस्य मन एवं ब्रह्मा (कौ.१७-७) कौषीतकि ब्राह्मण के अनुसार पुरुष का 'मन ही ब्रह्मा है' मानव का एकमात्र स्तुत्य (इन्द्र) परमेश्वर है। हम शास्त्र-वचन से परमात्मा के न केवल गुणगान करें, अपितु उनका 'मनन' करना भी जरूरी है। शतपथ (१/५/१/२१) में 'मन' को अध्वर्यु कहा गया है। जीवन यज्ञ के 'होता' आत्मा का यह एक सहायक 'ऋत्विक' ही हैं। यज्ञ की वेदी के स्थान पर वेदी रचना तथा अन्य सामग्री जुटाना अध्वर्यु का ही काम है। जीवन यज्ञ की साधक सामग्री 'प्राणशक्ति' को जुटाना 'मन' का काम है। प्राणशक्ति युक्त सुदृढ़मन ही जीवात्मा की शत्रुभूत दुर्भावनाओं को रुलाकर भगाने में समर्थ बना पाता है। स्वार्थ-त्याग पदार्थ के लिए प्रयत्न करना ही 'महायज्ञ' होता है। यज्ञ से 'इदन्न मम' अर्थात् (सब तेरा है मेरा कुछ नहीं) की भावना आती है, जिससे 'मन' को शान्ति प्राप्त होती है। भगवद् -गीता में ८ प्रकार के यज्ञ का वर्णन मिलता है- मानस ज्ञान यज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ, द्रव्य यज्ञ, दान-यज्ञ, जप-यज्ञ, तप-यज्ञ, देव-यज्ञ एवं महायज्ञ। सभी यज्ञ किसी न किसी रूप में मानव मन को शान्ति प्रदान करते हैं। दान और त्याग की भावना से मन उन्नत होता है। मनुष्यता के 'तप' से मन भी तपे तो परमात्मा आते हैं। ऐसा भाव '**तेन त्यक्तेन भुंजीथा**' यजुर्वेद, अध्याय-४०, मन्त्र-१ अर्थात् - सब कुछ परमात्मा का ही तो है, ऐसी त्यागपूर्ण भावना से 'मन' में शान्ति ही शान्ति होती है।

'मन' बड़ा चंचल और प्रमथन स्वभाव वाला है, बड़ा दृढ़ और बलवान है, इसलिए उसका वश में करना वायु की भांति अति दुष्कर है। परन्तु दुष्कर प्रकृति के मन को भी अगर बारम्बार अभ्यास द्वारा वश में किया जा सकता है तो ऐसे ही प्रयत्नशील मनुष्यों द्वारा मन को वश में कर योग को प्राप्त करना सहज हो जाता है। **योग द्वारा परमात्मा का भी साक्षात्कार संभव है, क्योंकि अच्छी तरह शान्त अन्त:करण वाला सावधान एवं भयरहित पुरुष ही मन को वश में कर परमात्मा के परायण स्थित होता है। मन को एकाग्र कर, मन द्वारा इन्द्रियों को वश में कर, दृढ़ निश्चय वाला, कर्मफलों के त्याग द्वारा परमात्मा ने स्वयं को अर्पण करने वाला, परमात्मा के स्वरूप का मनन करने वाला मानव ही श्रेष्ठ होता है। जो ज्ञानद्वारा, पापरहित, आसक्ति को त्यागकर अन्त:करण की शुद्धि के लिए कर्म करते हैं, वे ही निष्काम कर्मयोगी कहलाते हैं एवं परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं।** मानव मन:शक्ति अपरम्पार है। मानव सभ्यता और संस्कृति में आने वाले नए-नए परिवर्तन मन की चाहत से ही सम्भव है। ऋग्वेद के अन्त में मंडल-१०, सूक्त-१९१, मन्त्र- २,३,४ 'मन' की समानता के लिए परमात्मा की आज्ञा है। **पूरे विश्व में 'एक ही मन है' यह अनुभूति मानव को अपना जीवन सार्थक बनाने में सहायक होती है। मानव, मन की सम्पूर्ण कामनाओं का जिस समय त्याग कर देता है, आत्मा में आत्मा को अनुभव करता है, प्रिय-अप्रिय में समत्वभाव रहता है, उस समय उसे शीघ्र ही परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। ●**

इन्द्रियों की साधना

- डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक' -
३१४, आचार्यकुलम्
पतंजलि योगपीठ फेज-२ हरिद्वार,
चलभाष- ९८३९१८१६९०

जीवन को यज्ञमय बनाने के लिए इन्द्रियों की साधना आवश्यक है। यज्ञ में आचमन के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों से अङ्ग-स्पर्श किया जाता है-

(१) ओं वाङ्म आस्येऽस्तु।
(२) ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु।
(३) ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।
(४) ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।
(५) ओं बाहवोर्मे बलमस्तु।
(६) ओम् ऊर्वोर्मेऽओजोऽस्तु।
(७) ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गनि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।।

१. मेरे मुख में वाणी हो- अर्थात् मेरे मुख से निकले वचनों में दोष न हो और श्रेष्ठता हो। मनुस्मृति में वाणी के चार दोष बताये गये हैं-

पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः।
असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ।।
(अध्याय-१२, श्लोक- ६)

वाणी के चार दोष हैं- पारुष्य (कठोरता), अनृत (असत्य), पैशुन्य (निन्दा-चुगली) और असम्बद्धप्रलाप (अनावश्यक- गलत समय और चीखकर बोलना) वाणी में दो गुण होने चाहिए- सत्य और प्रिय भाषण।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात।

मनुस्मृति- अध्याय-४, श्लोक- १३८, अर्थात् हमारी वाणी उपर्युक्त चार दोषों से मुक्त और दोनों गुणों से युक्त हो। यह इन्द्रियों में वाणी की साधना है।

२. मेरे दोनों नासिका छिद्रों में प्राण होवे-अर्थात् मैं लम्बे समय तक प्राण को धारण करूं। मनुष्य की नासिका में श्वास का भरना और प्रश्वास का निकलना तो स्वाभाविक रूप से होता रहता है, किन्तु यज्ञमय जीवन के लिए इतना पर्याप्त नहीं है। यदि मनुष्य का जीवन सार्थक नहीं

वेदार्थ प्रतीति- पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का शीर्षक - वेदार्थ प्रतीति (भाग-१)
संकलयिता और सम्पादक - स्वामी धुव्रदेव परिव्राजक (कार्यकारी आचार्य : दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, गुजरात)
प्रकाशकः दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट, आर्यवन, रोजड़, पत्रालय-सागपुर, तालुका- तलोद, जिला-साबरकांठा, गुजरात
फोन- ०२७७०-२८७४१८, ९४०९४१५०११
ईमेल- darshanyog@gmail.com
कुल पृष्ठ - १४८
छपाई - दो रंगों में एवं उत्तम
गेटअप - आकर्षक
संस्करण- प्रथम- जून २०१७
मूल्य - ९० रुपए

श्री स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक (रोजड़) संस्कृत व्याकरण, दर्शन शास्त्र एवं निरुक्त के विद्वान हैं। वे वेदों का गहन अध्ययन करते रहते हैं। इस हिन्दी पुस्तक में कुल १२४ वेद मन्त्रों के आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत आध्यात्मिक भाषार्थ, व्याख्यान व भावार्थ का संकलन किया गया है।

इस पुस्तक में महर्षि दयानन्द रचयित वेद भाष्य, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों से संग्रहित कर १२४ वेद मन्त्रों के अर्थ को उत्तमता से संकलित किया गया है।

कहीं-कहीं अर्थ की स्पष्टता के लिए आवश्यक टिप्पणियां भी दी गई है।

महर्षि दयानन्द ने वेदों का मुख्य प्रयोजन ईश्वर प्राप्ति या ब्रह्म विद्या को बताया है। वेदों में ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव का वर्णन करते हुए अनेकानेक मन्त्र पाए जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने ऐसे मन्त्रों के रहस्य अपने वेद भाष्य तथा अन्य ग्रन्थों में खोले हैं। उन्हीं के पुरुषार्थ ने वेदों को कर्मकाण्ड की संकीर्ण कारा से मुक्ति दिलाई है और उन्हें सर्व सत्य विद्या के स्रोत के रूप में प्रतिष्ठित किए हैं।

स्वामी ध्रुवदेव जी की यह पुस्तक वेद स्वाध्याय के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। इसके अध्ययन से वेदों के आध्यात्मिक पक्ष का सुगमता से परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

आशा है कि पाठक वर्ग इस पुस्तक का स्वागत करेगा और आर्यों की सर्वाधिक पुरातन वैदिक अध्यात्म विद्या से स्वयं लाभान्वित होगा और अन्यों को भी इससे लाभान्वित करने का प्रयास करेगा।

आशा करते हैं कि इस पुस्तक का दूसरा भाग भी यथाशीघ्र तैयार होकर हमारे समक्ष प्रस्तुत होगा। ऐसे वेद विषयक उत्तम संकलन को प्रस्तुत करने के लिए स्वामी ध्रुवदेव जी तथा प्रकाशन संस्था दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट दोनों को बधाई! **- भावेश मेरजा**

तो वह जीवनवान् एवं प्राणवान कहां हुआ? प्राणवान तो वही व्यक्ति है जिसका प्रत्येक श्वास-प्रश्वास शुभचिन्तक, शुभभाषण एवं शुभकर्म में लगा हो। हमें प्राणायाम को भी जीवन में सम्मिलित करना चाहिए। श्वास बाहर निकालकर रोकने से संयम एवं पवित्रता आती है। श्वास भीतर भरकर रोकने से सब प्रकार की शक्तियां बढ़ती है।

३. मेरे नेत्रों में दर्शन-शक्ति हो- अर्थात् मैं सही, पूर्ण एवं उत्तम देख सकूं। यदि मनुष्य नेत्रवान होकर भी सत्य को सत्य और मिथ्या को मिथ्या नहीं देख पा रहा है तो वह नेत्रवान, कहां हुआ? अर्थात् नहीं हुआ। हम मार्ग में बिछे कांटों को अथवा गड्ढों को नहीं देख पा रहे, मित्र-शत्रु को नहीं देख पा रहे और जीवन की कल्याणकारी पगडण्डी को नहीं देख पा रहे हैं तो हम समाखे कहलाने के अधिकारी नहीं है। पर-स्त्री को मातृवत् , पर-धन को लोष्टवत् और प्राणिमात्र को आत्मवत् देखना भारतीय शास्त्रों का सार है। हमारे नेत्र खुले तो ऐसी ही दृष्टि सब ओर डालें।

४.मेरे कानों में श्रवण शक्ति हो- अर्थात् मैं सुनने योग्य बातों को ठीक प्रकार से सुन सकूं। हमारे कान सदैव खुले होते हैं। इनमें जो शब्द पड़ेगा। वह सुनने में अवश्य आएगा, परन्तु प्रत्येक शब्द ध्यान देने योग्य नहीं होता। हम ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना उपासना के वचन सुनते रहे, इससे मन में धैर्य बना रहता है और अभिमान नहीं आने पाता। वेद के मन्त्र दीर्घकाल तक सुनते रहें इससे यथार्थ दर्शन, यथार्थ चिन्तन एवं यथार्थ जीवन की प्राप्ति होती है। दीन-दुखियों की पुकार निरन्तर सुनते रहे, जो समर्थ व्यक्ति अथवा राज व्यवस्था दीन-दुखियों की उपेक्षा करती है, उसका पतन अवश्यम्भावी है। कभी निन्दा-चुगली और अपशब्द न सुनें, अर्थात् इनकी उपेक्षा करें, निन्दादि सुनने के व्यसनी व्यक्तियों को इन्हीं में रस आने लगता है और उनकी शक्ति निर्माण कार्यों की ओर नहीं लगने पाती। वेद में कहा गया है-

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम। -यजुर्वेदः अध्याय-२५, मन्त्र-२१
हम कानों से कल्याणकारी बातें सुनते रहें।

५.(ओ३म्) हे सर्वशक्तिमान परमात्मा! (मे) मेरी (बाहवोः) दोनों भुजाओं में (बलम्) शक्ति, (अस्तु) होवे- अर्थात् यज्ञमय जीवन के लिए दो प्रकार की शक्ति होनी आवश्यक है। (१) दुष्ट बलवान् को पराजित करने की शक्ति, जिससे राम ने रावण को और कृष्ण ने कंस को पराजित किया। (२) श्रेष्ठ निर्बलों की रक्षा करने की शक्ति, जिससे आर्य राजा लोग वैदिक विद्वानों की रक्षा करते आए और वैदिक विद्वान लोग अधर्मी कुराजाओं से संघर्ष करते आए हैं। इस संसार में सर्वत्र सर्वदा देवासुर संग्राम चलता रहता है। इसके चलते हमें ध्यान रखना चाहिए कि सत्य पक्ष की सदा जीत हो और असत्य पक्ष की हार हो। ऐसा स्वयमेव नहीं होता। भले लोगों में पर्याप्त शक्ति हो और वह भली प्रकार योजित हो, तभी ऐसा हो पाता है। महर्षि दयानन्द कहते हैं-"**जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सदा किया करें।**" ऐसा होना ही शक्ति का होना कहलाएगा। अतः समस्त शक्तियों के स्रोत्र परमात्मा से प्रार्थना है कि वह यज्ञकर्ताओं को ऐसी शक्ति से सम्पन्न करे।

६. (ओ३म्) हे गतिदायक निष्कम्प परमात्मा! (मे) मेरी (ऊर्वोः) दोनों जंघाओं में (ओजः) गति होवे- अर्थात् यज्ञमय जीवन में अच्छी मति के साथ अच्छी गति का होना भी आवश्यक है। एक विद्वान को वहां पहुंचना आवश्यक है जहां अविद्या है। वह ज्ञानरूपी गति से अज्ञान एवं अविद्या को हटाए। आवश्यक नहीं कि उसे आदरपूर्वक बुलाया ही जाए। जो अज्ञानी जन अपने अज्ञान को जान ही नहीं रहे हैं, वे विद्वान् को क्यों बुलाएंगे? जो अभिमान में फंसे हैं वे उसे आदरपूर्वक क्यों बुलाएंगे। अतः विद्वान् का धर्म है कि वह स्वयं कुआं बनकर प्यासों के पास जाए। इसी प्रकार पुलिस (वैदिक भाषा में क्षत्रिय) के लिए वहां पहुंचना आवश्यक है, जहां अपराध है। वह न्यायपूर्वक आवश्यक बल का प्रयोग करके अपराध को हटाएं। पुलिस के ऐसा करने पर ही विद्या एवं समृद्धि को बढ़ाने वाले लोग गतिमान हो सकते हैं। वह ऐसा न करे तो ये लोग भी गतिमान नहीं हो सकेंगे। इसके साथ सम्पन्न व्यक्ति-समूह (वैदिक भाषा में वैश्यजन) वहां पहुंचे जहां अभाव है। सभी आर्यजन वहां पहुंचे जहां उनके श्रम एवं सेवा की आवश्यकता हो। दूसरे शब्दों में आर्य (श्रेष्ठ) जनों की सर्वत्र निर्बाध गति होनी चाहिए। '**ऊर्वोर्मऽ ओजोऽस्तु**' का यही अभिप्राय है।

७. मेरा शरीर और इसके समस्त अंग निरोग होवें- आयुर्वेद में स्वस्थ व्यक्ति की परिभाषा इस प्रकार की गई है-

समदोषः समाग्निश्च समधातु मलक्रियः।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्याभिधीयते।।

स्वस्थ व्यक्ति वह है जिसके दोष सम हों अर्थात् - वात-पित्त-कफ संतुलित हो, अग्नि सम अर्थात् सम्यक हो, न मन्द और न अति तीव्र, सातों धातुएं सम अर्थात् सानुपातिक हो, ठोस-द्रव-गैस रूपों में निकलने वाले शरीर के मल भली प्रकार नियमित रूप से बाहर निकलते रहें। इन्द्रियां प्रसन्न अर्थात् निर्दोष एवं हल्की हो, मन प्रसन्न अर्थात् रजोगुण के कारण चञ्चल न हो। तमोगुण के कारण भारी न हो,

राग-द्वेष रूपी मलों से मुक्त हो और सत्वगुण के कारण सुख का अनुभव करे (आत्मा को कराए) आत्मा प्रसन्न अर्थात् - अन्तःकरण से अच्छे कर्म कराता हुआ आनन्द का अनुभव करे। अनेक बार भिन्न-भिन्न अंगों का दोष प्रमाणित न होते हुए भी शरीर में रुग्णता अनुभव होती है। कई बार हाथ-पैरों में अनेक घाव लिए हुए वीर सैनिक स्वस्थ हाथ-पैरों वाले शत्रु को परास्त कर देता है। वस्तुतः शरीर सब अंगों का योग-मात्र नहीं होता, अपितु उससे कुछ अधिक होता है। अतः पृथक-पृथक सब अंग भी स्वस्थ हों और शरीर भी स्वस्थ हो। दूसरे शब्दों में काया निरोग एवं स्वस्थ हो, इन्द्रियां शुद्ध एवं बलिष्ठ हो, मन विशाल एवं शान्त हो, बुद्धि निर्मल एवं तीव्र हो, आत्मा शिवसंकल्पी एवं आनंदित हो और आयु सत्कर्मों में लगी एवं दीर्घ हो। इसके साथ-साथ वाणी, नासिक, नेत्र, कर्ण, भुजाएं एवं ऊरू- स्थान भी सम्यक् एवं सुष्ठु हों। ये इन्द्रियों की साधना के चरण हैं। सब चरणों को सिद्ध करके इन्द्रियों की साधना पूर्ण होगी और यज्ञमय जीवन की सम्प्राप्ति अवश्य होगी। ●

उपासक-उपास्य सम्बन्ध

- नरेंद्र आहूजा 'विवेक' -
६०२ जी.एच. ५३, सेक्टर-२०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ९४६७६०८६८६

कोई भी उपासक किसी की उपासना क्यों करता है? उपासना की विधि क्या है और उपास्य देव कौन हो? ये प्रश्न किसी भी उपासक के मन में उपासना के लिए उद्यत होने से पूर्व अक्सर ही उठते हैं। किसी भी उपासक के लिए अपने उपास्य देव को जानना, मानना फिर उपासना करते हुए उस उपासना के उद्देश्य को प्राप्त करना होता है। उपास्य देव को पहचानने से पूर्व उपासक को अपनी स्थिति का बोध होना अत्यंत आवश्यक है। आइये इन प्रश्नों पर एक-एक कर विचार करते हैं।

प्रथम उपासक कौन? जिसमें भी किसी गुण विशेष का अभाव और उसके मन में उस गुण को प्राप्त करने की बलवती इच्छा जब उत्पन्न हो जाती है तो वह व्यक्ति सर्वप्रथम उस गुण विशेष सम्पन्न मित्र जो उसे वह गुण देकर कष्ट से मुक्त कर सके, उसकी खोज करता है। सरल शब्दों में यदि कोई निर्धन व्यक्ति धन चाहता है तो वह धन प्राप्ति की इच्छा से अपने ऐसे किसी मित्र की खोज करके उपासना करेगा जो उसे धन प्रदान कर निर्धनता के कष्ट से मुक्ति दिलवा सके। इसी प्रकार रोगी वैद्य की, भूखा किसी लंगर चलाने वाले की खोज करके उपासना करता है। दूसरे शब्दों में उपासक वह है जिसमें किसी गुण का अभाव है और उस गुण के अभाव के कारण वह कष्ट की स्थिति में है। उपासक के लिए आवश्यक हो जाता है कि उसे इस बात का बोध हो कि उसमें किस गुण का अभाव है और उस अभाव के कारण होने वाले कष्ट को दूर करने के लिए उसमें उस गुण की ग्राह्यता के लिए बलवती इच्छा उत्पन्न हो। तीसरा वह किसी ऐसे व्यक्ति की खोज जिसमें वह गुण पूर्व से ही विद्यमान हो। चौथा वह गुणी उपास्य उस गुण को उपासक को देने की इच्छा भी रखता हो। अन्तिम उपासक को अपने उपास्य देव की उपासना विधि का ज्ञान हो।

सामान्य लोक व्यवहार में हम अबोध मनुष्य उपासना के नाम पर क्या प्रपंच करते हैं। तेजी से गाड़ी चलाते सड़क के किनारे किसी पीर की मजार या मन्दिर के सामने धीरे से मस्तक झुका देना या फिर बहुत किया तो मन्दिर में जाकर किसी मूर्ति के समक्ष माथा झुकाना और चढ़ावा चढ़ा कर अपनी मांग रख देना जैसे उपासना ना हुई कोई व्यापार हो गया। सवा मणी करूंगा, मेरी लाटरी लगा दे। मेरी मन्नत पूरी होने पर ये चढ़ावा चढ़ाऊंगा या फिर हे बजरंग बली तोड़ दुश्मन की नली' इन सब में ना तो उपासक को अपनी स्थिति का बोध है ना उपास्य देव का और ना ही उपासना की विधि का। यह उपासक को पता ही नहीं कि उसमें कौन सा गुण न्यून है और वह गुण उपास्य देव के पास है या नहीं और वह उसे कैसे पा सकता है। एक चेतन जीव द्वारा जड़ की उपासना से चेतनता की वृद्धि कैसे हो सकती है।

कलियुग के इंसान की, उल्टी देखी चाल।
जड़ के आगे चेतना, क्यों झुकावे भाल।।

जड़ की उपासना से तो चेतना के भी जड़ बन जाने की संभावना होती है, जबकि यदि कोई जड़ पदार्थ किसी समर्थ चेतन कारीगर के हाथ लग जाए तो उसमें गति अवश्य आ जाती है जैसे घडीसाज के हाथ में घड़ी और मैकेनिक के हाथ में मोटर। इतना सब समझते हुए भी मनुष्य के रूप में मननशील होकर भी हम उपासक न हो तो अपनी स्थिति को जान पाते हैं ना तो अपने गुणों की न्यूनता को और ना ही उपास्य देव जिसके पास वह गुण हो और उन्हें देने की इच्छा और सामर्थ्य रखता हो।

आइये इन प्रश्नों के उत्तर खोजते हैं। मनुष्य के रूप में जीव एकदेशीय होने के कारण अल्पज्ञ व अबोध है और ज्ञान प्राप्ति के लिए वह अन्यों पर निर्भर है। सृष्टि के निर्माण से पूर्व और संहार के बाद भी रहने वाले सर्वव्यापी सृष्टिकर्ता सर्वज्ञ हैं और उस सर्वज्ञ ईश्वर ने सृष्टि के समस्त प्राणियों के लिए वेदरूपी ज्ञान एक नियमावली संहिता के रूप में दिया है। अब अल्पज्ञ उपासक के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह उस सर्वज्ञ प्रभु द्वारा दिए वेद ज्ञान को प्राप्त करे, इसीलिए **महर्षि देव दयानन्द ने वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म बतलाया है।** यदि हममें दया की कमी है तो हम परमदयालु परमपिता परमेश्वर से इस गुण को प्राप्त करे। ईश्वर न्यायकर्ता है तो हम भी अपने आचरण व्यवहार में दूसरों के साथ न्याय किया करें। हम अल्पशक्तिमान हैं और किसी भी सर्वहितकारी कार्य की सिद्धि के लिए व निष्काम भाव से यज्ञीय कार्य करने के लिए अपने सही दिशा में किए गए पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त ईश्वर से प्रार्थना उस शक्ति को प्राप्त करने के लिए व सहाय के लिए किया करें। वहीं ईश्वर हमारा सच्चा सहायक व मित्र है। **इन्द्रस्य युज्यः सखा** कहकर वेद भगवान परमात्मा को जीवात्माओं का सच्चा मित्र कहा। ऋग्वेद में **दूणाशं सख्यं** कहकर स्पष्ट कर दिया कि ईश्वर की मित्रता स्थायी और विश्वसनीय है और इसी मन्त्र में **गौरसि वीर गव्यते। तथा अश्वो अश्वायते भव** कहकर स्पष्ट कर दिया कि ईश्वर की मित्रता से गाय चाहने वाले को गाय और अश्व चाहने वाले को अश्व मिलता है। जिससे स्पष्ट है कि निष्काम भाव से किए जाने वाले परोपकार के यज्ञीय कार्यों के लिए सही दिशा में किए पुरुषार्थ के उपरान्त उपासना करते हुए हम उपासक मनुष्यों के लिए अपने उपास्य देव से निश्चित ही सहायता प्राप्त होती है, लेकिन यहां यह भी स्पष्ट है कि **इन्द्रस्य इज्जरत सखा** अर्थात् ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करने के लिए उद्यत हों।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि गुणों के अभाव के कारण हम अल्पशक्ति वाले अबोध अज्ञानी मनुष्य उन गुणों की प्राप्ति के लिए सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान दयालु सच्चिदानन्द स्वरूप सर्वव्यापी निराकार ईश्वर की उपासना उन गुणों की प्राप्ति के लिए किया करें और उपासक उपासना करते समय अपने आत्मा को सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा के आनंद में निमग्न क र दे और आत्मा परमात्मा के आनंद में निमग्न होकर नर्तन करने लगे, लेकिन कभी सत्य और चेतन के आधार के बिना प्राप्त नहीं हो सकता। उपासना करते हुए उपासक उपास्य देव से उन गुणों को प्राप्त करके एकरूप हो जाता है।●

पिता के नाम पत्र

प्रिय दिलीप अंकल, नमस्ते!

मैं? तमलाव गांव से ललिता।

आप हमारे गांव के स्कूल में परमाणु ऊर्जा के सदुपयोग पर बिजली घर से वार्ता देने आए थे। कई बार आते रहे। सेवानिवृत्ति के पश्चात आपने अपने परिचय में स्वयं को भूतपूर्व वैज्ञानिक अधिकारी बतलाया। पर हम स्कूल की भोली मासूम गरीब बेटियों को जो प्यार आपने दिया वह तो कोई भूतपूर्व अधिकारी नहीं, अभूतपूर्व व्यक्ति ही दे सकता है। अनुशासन, समय, संस्कार, चरित्र, कॅरियर, आत्मनिर्भरता के पाठ हमें आपने पढ़ाएं। गर्मी-सर्दी में हमारे जलते-गलते पैरों में आपने चप्पलें-जूते पहनाए। सर्दी में कांपती हम बेटियों को आपने स्वेटर, जर्सी, कार्डिगन पहनाए। पोषाहार बनाने वाली आंटियों को आपने नवसाड़ियां दी। आंटी की स्मृति में आपने हमारे स्कूल के हर कमरे में पंखे लगवा दिए। हम जंगली फूलों का गुलदस्ता आपको देते, उसे भी आप घर पर कई-कई दिनों तक पानी भरे गिलास में रखते थे। हमारे गांव की गुमटी की चाय नमकीन भी आप प्रेम से पीते-खाते थे। हर वर्ष आपकी दी गई नोटबुक में ही हम स्कूल का होमवर्क करती रहीं। कक्षा-आठ-दस की सभी छात्राओं की बोर्ड परीक्षा की फीस भी आपने भरी थी।

पूरे गांव में आप घूमते थे। गर्मी में एक निर्धन की बेटी के विवाह पर उसके आग्रह पर आपने नीचे बैठकर भोजन पत्तल-दोने में खाया। गांव की हर बेटी की शादी में कन्यादान का शगुन आपसे लिए बिना कोई बेटी विदा नहीं होती थी। हर आने वाली भाभी की मुंह दिखाई का शगुन भी आप देते थे। प्लांट वाले पानी या दवाइयों की एम्बुलेंस बंद कर देते थे, तो हमारे गांव वाले आपको ही समस्या के समाधान हेतु फोन करते थे। आपके पास हमारे स्कूल व गांव की हर समस्या का समाधान होता था। हमारे स्कूल एवं गांव से आपको बहुत लगाव था। अपना स्वयं का जन्मदिन भी आप हम सबके साथ मनाते थे। बिस्कुट, लड्डू लेकर आते थे, पोषाहार बनाने वाली बहन की खीर आपको काजू कतली से भी अधिक स्वादिष्ट लगती थी।

भाटिया सर से आप दिलीप अंकल बन गए। प्यार का सागर हैं आप तो। आपके रियाटरमेंट पर गांव वालों ने आपके विभाग के प्रमुख को प्रार्थना पत्र भी लिख दिया था। पर हम गरीब की पुकार बड़े लोगों ने नहीं सुनी। लेकिन रिटायरमेंट के पश्चात् भी आप स्कूल एवं गांव निरन्तर आते रहे। हां, प्लांट की समस्या पर आपकी आंखों में आंसू आ जाते थे कि अब मैं रिटायर हो गया हूं। कैसे तुम्हारी मदद करूं? उगते सूर्य को सब नमस्कार करते हैं, डूबते सूरज को कौन अर्ध्य देता है? रावतभाटा के कालेज में भी हम बेटियों की फीस आप भरते रहे। हममें से कुछ बेटियों को तो आपने बी.एड. भी करवा दिया। आपकी संजीवनी बूटी से आज मैं उसी स्कूल में शिक्षिका बन गई हूं। आत्मनिर्भर बनकर ही शादी करने वाला आपका मन्त्र मुझे अभी भी याद है। शहर में पले-पढ़े बड़े व्यक्ति गांव के प्रति इतना स्नेह रख सकते हैं यह आपने कथनी से नहीं करनी से सिद्ध कर दिया है।

क्या भुलूं, क्या याद करूं? एक अंकल को सांप ने काट लिया था, आपने झाड़ फूंक के अन्धविश्वास के लिए मना कर दिया। प्लांट के अस्पताल में उसका इलाज करवाया। स्वयं एक यूनिट खून भी देकर उसके प्राण बचाए। आज उन आंटी के हाथों में बची सुहाग की चूड़ियां आपके कारण ही हैं। हमारे गांव पर आपके इतने अधिक उपकार हैं, जिन्हें इस छोटे से पत्र में लिखना संभव नहीं है।

हां, गांव में कई मोर्चों पर आपको विरोध का भी सामना करना पड़ रहा है। तम्बाकू, गुटके का सेवन, बाह्य पदार्थों का उपयोग, बाल विवाह, मृत्यु भोज, हर घर में शौचालय, लड़कियों की उच्च शिक्षा, दहेज इत्यादि मोर्चों पर आपके प्रयासों को जब सफलता नहीं मिलती है तो आपकी आंखें भर जाती हैं, पर आप अपने प्रयास बंद नहीं करते। आपकी सहनशक्ति अपार है। गांव में दूषित राजनीति के कारण एक गुट आपको धमकियां भी देता है। पर आप चुप रहते हैं। आपका कहना है कि 'सत्य परेशान हो सकता है, पराजित नहीं।' स्कूल के टीचर्स को आप मार्गदर्शन देते हैं, पर अधिकांशतः आप 'एकला चलो रे' की तर्ज पर चलते रहते हैं। अंकल, स्वस्थ परम्पराओं हेतु आपके द्वारा प्रज्वलित दीपक को हम सभी टीचर्स चिराग बनाए रखेंगे।

परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा विकरणित बीज दाल, चावल के आपने हमें लाकर दिए। जिससे कम समय में अधिक मात्रा में फसलें होने लगी हैं। मूंगफली की पैदावार तो दुगुनी हो गई। गांव के सभी किसान आपके कृतज्ञ हैं। नए बच्चों को आपने प्रोत्साहित कर फिटर, कारपेंटर, इलेक्ट्रिशियन के कोर्स करवाए एवं अपने प्लांट में दैनिक भत्ते पर ही सही, रोजगार भी दिलवाया। नई पीढ़ी तो आपकी पूजा करती है। हमारे मिडिल स्कूल को क्रमोन्नत करवाकर माध्यमिक स्कूल बनवा दिया। पोषाहार रखने के लिए ड्रम दिए। पीने के पानी के लिए टंकी दी, आधुनिक स्वार्थी युग में इतना परोपकार कौन करता है।

स्नेह की गागर, प्यार के सागर हैं आप। कुछ गांव वालों ने आपके सीधेपन, भोलेपन का अनुचित लाभ भी लिया है। झूठी कहानी गढ़कर आपको बेवकूफ भी बनाया है। पर, फिर भी आप अपना सीधापन नहीं छोड़ना चाहते। मन में तो बहुत कुछ है, आज मैं उच्च शिक्षा प्राप्त कर आत्म निर्भर हूं। मनपसंद जीवन साथी मोहन को पाकर आत्मसंतुष्ट भी हूं। मुझे एक गुणवत्तापूर्ण जीवन देने के लिए मेरे पास के धन्यवाद, कृतज्ञता, आभार, शुक्रिया, थैंक्स के औपचारिक शब्द आप जैसे महान् व्यक्तित्व के समक्ष बहुत छोटे हैं। वाट्सएप, मैसेंजर, ई-मेल से यह पत्र मैं आपको मात्र अग्रिम सूचना भर देने के लिए भेज रही हूं। आप अपनी व्यक्तिगत परेशानी किसी को नहीं बतलाते। पर आपका उदास चेहरा बहुत कुछ बतला देता है। आगामी रविवार को मोहन आपको लेने आ रहे हैं। ललिता बेटी को भी आपकी सेवा करने का अधिकार है। निर्णय हम कर चुके हैं आपको साथ रखने का। ललिता बेटी आपके आने की प्रतिक्षा करेगी एवं स्वागत भी। शेष मिलने पर....

आपकी बेटी-ललिता

रावतभाटा (राज.)

चलभाष-९४६१५९१४९८

मानसिक तनाव और उससे बचने का उपाय

- स्वामी हरीश्वरानन्द सरस्वती
बी/५४ तेजेन्द्र नगर-७, त्रागड़ रोड,
चांदखेड़ा अहमदाबाद (गुजरात)
चलभाष- ८१५५०५५२६०

कहते हैं कि जब कभी आँधी या तूफान आता है, अथवा तेज हवायें चलती हैं तो कोई भी वृक्ष ऐसा नहीं बचता कि जिसको तेज हवाओं के झोंके, थपेड़े नहीं लगते।

आज के इस भौतिकवादी युग में एक ऐसी आंधी चल निकली है जिससे कोई भी मानव अछूता नहीं रह पा रहा है। भौतिक सुख सुविधाओं की प्राप्ति की दौड़ में मनुष्य इस प्रकार भाग रहा है कि मानो उसके पीछे कोई उसे मारने के लिए दौड़ रहा हो। सभी उन सुख सुविधाओं को यथाशीघ्र प्राप्त कर लेना चाहते हैं। वह सोचता है कि वे वस्तुएं मुझे मिली कि न मिली। प्रातः काल से सायं काल तक मानव इसी भागदौड़ में लगा हुआ है। यही एक प्रकार की आंधी या तूफान है। जिसको हम मानसिक तनाव की आँधी का नाम भी दे सकते हैं। जिस प्रकार कोई वृक्ष तेज हवाओं के झोकों से नहीं बच सकता, इसी प्रकार इस मानसिक रूपी तनाव की आंधी से भी कोई मानव नहीं बच सकता।

जिस प्रकार आंधी के थपेड़ों से वही पेड़ बच पाता होगा जो किसी मकान की आड़ में खड़ा होगा। इसी प्रकार भाग्य से ही कोई मानव इस मानसिक तनाव से बच पायेगा जो किसी योग्य ध्यान योगी की शरण में होगा।

आज का भौतिकवादी मानव यह नहीं सोचता है कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और मुझे कहां जाना है। मेरा जीवन लक्ष्य क्या है। आधी सोकर गुजार दी, आधी कमाने खाने में गुजार दी तो बचा क्या? आज का मानव यही सोचता है कि यह शरीर ही मेरी आत्मा है। यह वर्तमान ही मेरा जीवन है। इससे पूर्व कुछ नहीं था न बाद में ही कुछ होगा। खाओ पियो मस्त रहो। कल किसने देखा है। इसी विचार से मानव दुःखी हो रहा है।

आज हम एक सामान्य परिवार के छोटे से लेकर बड़े सदस्य को देखें अथवा सुनें तो प्रत्येक सदस्य यही कहेगा कि मुझे परेशान मत करो मैं बहुत टेंशन (तनाव) में हूं। परिवार के बच्चे कहते हैं कि हमें पढ़ाई का बहुत तनाव है। स्कूल में जाओ तो शिक्षक का दबाव, घर आओ तो होम वर्क का दबाव।

ट्यूशन जाओ तो वहां भी शिक्षक का दबाव, ट्यूशन के होमवर्क का तनाव, हम समझ ही नहीं पाते हैं कि क्या करें? क्या न करें? इसलिए हम तनाव में ही रहते हैं।

परिवार की माता-बहनें कहती हैं कि तुम अपनी-अपनी ही गाते हो कोई हमारी भी सुनता है कि हम प्रातः सबसे पहले जागती हैं, बच्चे तैयार करना, उनका नास्ता तैयार करना कि कहीं बच्चे भूखे ही स्कूल न चले जाएं। बच्चों को विदा करने के बाद घर का काम करना, इसके पश्चात पतिदेव को कार्यालय भेजने की तैयारी करना। उनके नखरे सहन करना। उन्हें विदा कर पुनः घर के काम में जुट जाना। न खाने का होश, न पीने का। आराम का तो सवाल ही नहीं आता। पुनः दोपहर से वही कार्य प्रणाली प्रारम्भ। बच्चों को स्कूल से लाना, उन्हें खाना खिलाना आदि-आदि.....।

इसी प्रकार शाम के क्रिया कलापों में जुट जाना। सबसे पहले जगना, सबसे बाद में सोना।

क्या यही हमारी जिन्दगी है, क्या कभी किसी ने हमारे विषय में भी सोचा है कि हम कितने तनाव में रहती हैं?

बच्चों और पत्नी की दास्तान सुनकर पति भी कहां चुप रहने वाले थे, वे भी भड़क कर कहने लगे कि सबने अपनी-अपनी कह ली मेरे विषय में भी कभी किसी ने सोचा है कि प्रातः उठ कर जल्दी-जल्दी तैयार होना कि कहीं कार्यालय जाने में देर न हो जाए, या दुकान पर जाने में देरी न हो जाए। कार्यालय में कहीं साहब नाराज न हो जाए, काम में कोई गल्ती न हो जाए। नहीं तो साहब की फटकार सुननी पड़ेगी। साथियों के साथ कोई वाद-विवाद न हो जाए, यदि कोई भाई व्यापारी है तो कहेगा कि नौकरी की चिन्ता, व्यवसाय के लेनदेन की चिन्ता, व्यापार में हानि-लाभ की चिन्ता। बैंकों के लेनदेन की चिन्ता आदि न जाने कितने प्रकार की चिन्ताएं मेरा पीछा ही नहीं छोड़ती है। शाम को थकाहारा घर पर आऊं तो तुम सब की शिकायतें, आवश्यकताएं सुनु कि मुझे यह चाहिए, उसे वह चाहिए, घर में यह नहीं है, घर में वह नहीं है। माता-पिता आदि सगे-सम्बन्धियों की चिन्तायें भी तो मेरा पीछा नहीं छोड़ती है। तुम्हारा क्या है, तुम तो घर में ही रहते हो। तुम लोग नहीं जानते कि मैं कितने तनाव में रहता हूँ। उपरोक्त वार्तालापों का परिणाम यह हुआ कि आपस में झगड़ा हो गया। वैसे भी सभी तनाव में थे, ऊंचे स्वरों में बोलने से पड़ोसियों का तनाव भी और बढ़ गया।

यह कहानी हमने एक परिवार की सुनी, सभी तनाव के कारणों को समझा। उनमें से एक प्रमुख कारण यह भी है कि अधिकतर प्रत्येक परिवार ऊधार लेकर घी पीने की बीमारी से त्रस्त है। इस प्रकार सभी परिवार मानसिक रूप से तनाव नामक बीमारी से परेशान है।

यह तनाव का रोग अब इतना असाध्य एवं असहनीय होता जा रहा है कि कम से कम अभी तो इस रोग का उपचार सम्भव नहीं है। अब तो इस की शल्य क्रिया ही करनी पड़ेगी।

उपरोक्त प्रकार का एक तनाव ग्रस्त रोगी किसी डॉक्टर के पास गया, डॉक्टर ने नींद की गोली देकर विदा किया, क्योंकि डॉक्टर जानता है कि इसे मानसिक आराम की आवश्यकता है, मगर यह स्थाई उपचार नहीं है। रोगी को स्थाई आराम न मिलने पर वह किसी वैद्य के पास जाता है और अपनी समस्या का बयान करता है कि वैद्य जी मुझे भूख, प्यास नहीं लगती, नींद नहीं आती, बैचेनी रहती है, मन नहीं लगता है, आदि-आदि।

अपनी तकलीफें बताईं। वैद्य जी ने अपनी उपचार विधि के अनुसार हाथ की नाड़ी पर उंगलियां रखकर निदान करने का प्रयास किया, रोगी को बात सम्बन्धी, कफ, सम्बन्धी अथवा पित्त सम्बन्धी कोई बीमारी तो नहीं है। नाड़ी स्पष्ट जवाब दे रही थी कि रोगी को कफ, बात, पित्त सम्बन्धी कोई बीमारी नहीं है। वैद्य जी ने कहा कि आपकी बीमारी का उपचार मेरे पास भी नहीं है। आपकी बीमारी का कारण मानसिक तनाव है इस बीमारी के उपचार हेतु किसी योग्य ध्यान योगी के पास जाना होगा। वहीं पर आपका उपचार सम्भव है।

इसके उपरान्त वह रोगी किसी योग्य ध्यान योगी की तलाश में निकल पड़ा और संयोग से एक योग्य ध्यान योगी उसे मिल भी गया। उस योगी के सामने भी यह रोगी अपनी समस्या का विवरण प्रस्तुत करता है। योगी जी समस्याएं सुनने के बाद रोगी से प्रश्न करते हैं कि क्या तुमने कभी ध्यान शब्द को सुना है? रोगी ने जवाब दिया कि जब मैं स्कूल में जाता था तो माता कहती कि बेटा रास्ते में ध्यान से जाना। स्कूल में अध्यापक कहते कि ध्यान से पढ़ना, पढ़ाई में ध्यान देने पर अध्यापक डाटते कि पढ़ाई में ध्यान नहीं देते हो। यदि घर पर कोई नुकसान हो जाता तो माता-पिता डाटते कि यदि ध्यान रखते तो यह नुकसान नहीं होता। आदि अनेकों स्थानों पर यह ध्यान शब्द सुनने को मिला।

इस पर योगी जी ने कहा कि फिर भी तुमने ध्यान शब्द पर कभी ध्यान नहीं दिया? यही तुम्हारी बीमारी का सबसे बड़ा कारण है, तुमने कभी ध्यान शब्द पर मनन चिन्तन नहीं किया। यदि दिन में एक बार भी इस शब्द पर मनन-चिन्तन किया होता तो आज तुम्हारे सामने यह समस्या ही नहीं आती। खैर अब तक जो होना था हो गया, अब आगे मैं जो कहूं उसे ध्यान से सुनो।

योगियों के मुकुट योग शिरोमणि महर्षि पतंजलि ने अपने योग दर्शन में तथा महर्षि व्यास जी ने महर्षि पतंजलि के ग्रन्थ का भाष्य करते हुए, ध्यान आदि का विस्तृत वर्णन किया है। यहां मैं आपको संक्षेप रूप में ही दर्शन कराता हूं।

ध्यान का अर्थ, मुख्य रूप से मन को एकाग्र करने का नाम ही ध्यान है। मन में उठती हुई स्मृति तरंगों को रोकने का नाम ही ध्यान है। मन में उठने वाली इन्द्रियों सम्बन्धी वृत्तियों, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द के उठते हुए विचारों को रोक कर मन को एकाग्र कर प्रभु के गुण कर्म, स्वभावों का मनन-चिन्तन करना ही ध्यान कहलाता है। योगियों की भाषा में यदि ध्यान की परिभाषा कहें तो जहां पर मन को धारण किया अर्थात् जहां पर मन को एकाग्र किया, वहां पर ही ईश्वर से सम्बन्ध बना कर एकरूपता अर्थात् एकपना तारतम्य बना रहना ही ध्यान है। जिस वस्तु को मनुष्य प्राप्त करना चाहता है, उसके विषय में शब्द प्रमाण अथवा अनुमान प्रमाण के द्वारा अच्छी प्रकार से जानना चाहिए। शब्द प्रमाण द्वारा यदि ईश्वर का ध्यान करना है तो जैसा कि वेद और वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रन्थों में ईश्वर का जैसा स्वरूप बतलाया गया है, वैसा ही समझना चाहिए। वेदों में और ऋषिकृत ग्रन्थों में ईश्वर को सच्चिदानन्द, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति प्रलय करने वाला इत्यादि लक्षणों वाला बतलाया गया है। इसी प्रकार के ईश्वर को मन में ढूंढना चाहिए।

इससे आगे थोड़ी सी जानकारी आपको योग की भी दे दी जाए तो ठीक रहेगा। आज के वर्तमान समय में अनेकानेक प्रकार के योगों का चलन हो गया है, जैसे राज योग, हठ योग, ज्ञान योग, कर्म योग।

ध्यान योग, जप योग आदि।

योग के निम्न आठ अंग बतलाये गये हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, ओर समाधि।

यम- यमों को निम्न पांच भागों में विभक्त किया गया है- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि।

नियम- नियमों को भी पांच भागों में विभक्त किया गया है- शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान।

उपरोक्त यम नियमों तथा योग दर्शन के आठ सूत्रों की विस्तार से चर्चा अन्य योग ग्रन्थों में पढ़कर अभ्यास कर लेना चाहिए।

एक उदाहरण देकर समझाने का प्रयत्न करता हूं कि जैसे आज भौतिक बिजली के उपकरणों को गति देने के लिए बिजली का एक बटन दबाना पड़ता है। उसके दबाते ही छोटे से छोटे उपकरणों को तथा बड़ी से बड़ी मशीनों को गति मिल जाती है। जब चाहों उन उपकरणों अथवा उन मशीनों से किसी भी प्रकार का काम ले लो। चाहे प्रकाश करो, चाहे ठण्डा करो, चाहे गर्म करो, चाहो जो करो। सब काम आसानी से हो जाते हैं। केवल बटन ही समस्त उपकरणों का केन्द्र बिन्दु है।

अब जब हम बटन से तारों के सहारे-सहारे आगे ढूंढते जाएंगे तो पता चलेगा कि हम बिजली घर पहुंच गए हैं तो पता चला कि बटन एवं उपकरणों का ऊर्जा स्त्रोत तो यह बिजली घर है।

यहीं से सभी को ऊर्जा अर्थात् शक्ति मिलती है। उपरोक्त प्रकार से ही समझने का प्रयत्न करते हैं तो अनुभव होता है कि जीव (मनुष्य) की गतिविधियों का ऊर्जा स्त्रोत बिजली घर की तरह मन ही है। हालांकि मन एक जड़ पदार्थ है, मगर फिर भी मानव शरीर में इसका विशेष महत्व है। इससे ही ऊर्जा अथवा आज्ञा पाकर ही समस्त इन्द्रियां अपना-अपना कार्य करने में लग जाती है। आंखें देखने लगती है, कान सुनने लगते हैं, वाणी बोलने लगती है, त्वचा अनुभव करने लगती है, नासिका सूंघने लगती है, यहां मन ही समस्त शरीर के गतिविधियों का बटन है।

उपरोक्त प्रकार से जब कारीगर के मस्तिष्क में बिजली घर ही ऊर्जा का स्त्रोत है ऐसा आभास होता है। ठीक इसी प्रकार अध्यात्मिक व्यक्ति को यह आभास हो जाता है कि समस्त संसार का स्त्रोत ऊर्जा स्त्रोत केवल और केवल परमात्मा ही है। तो वहीं पर वह अपने मन की समस्त वृत्तियों को रोक कर अपना मन परमात्मा के मनन, चिन्तन में लगा देता है।

अन्त में योगी जी ने मानसिक रोगी से कहा कि पुत्र तुम भी मन को एकाग्र करके परमात्मा के ध्यान में लग जाओ, तभी तुम्हारी सभी बीमारियों का इलाज स्वतः ही हो जाएगा।

तनाव से हानियां-भूख प्यास का न लगना, कामकाज में मन का न लगना। अनेकानेक रोगों का उत्पन्न होना, रोगों के उपचार के लिए धन का व्यय होना और अन्त में धन के अभाव में परिवार का अस्त-व्यस्त होना। उपरोक्त स्थितियां उत्पन्न होने पर अवगुणों का प्रवेश।

ध्यान से लाभ-उचित भूख-प्यास का लगना, उत्तम स्वाथ्य का लाभ। घर में शान्ति रहने से मानसिक शान्ति, रोगों का दूर भागना। धन की बचत, पारिवारिक शान्ति से मन की शान्ति। अवगुणों से दूरी बनी रहेगी।●

शरणागत कौन हो? विपत्तियों से पीड़ित अथवा विपत्तियों का जनक

- आचार्य सोमेन्द्र श्री -
ग्राम नित्यानन्दपुर, जिला- मेरठ (उ.प्र.)
चलभाष-०९४१०८१६७२४

भारत में आज सबसे ज्यादा चर्चा रोहिंग्या मुसलमानों को शरण देने को लेकर हो रही है। आये दिन उनको लेकर धरने प्रदर्शन हो रहे हैं। रोहिंग्या मुसलमान जो स्वयं के देश से विद्रोह करने व सेना पर हमले करने के जुर्म में वहां से भागने को मजबूर हुए उनको बसाने के लिए भारत में वकालत की जा रही है, जबकि सबको पता है रोहिंग्या मुसलमानों का आतंकी संगठनों से सम्बन्ध है, इसीलिए म्यांमार की सरकार को यह फैसला लेना पड़ा कि उन्हें देश से बाहर कर दिया जाये। रोहिंग्या समुदाय की हिमायत करने वालों को सोचना चाहिए कि उन्हें अपने देश से क्यों निकाला जा रहा है? जबकि म्यांमार बौद्ध धर्म की अधिकता वाला देश है जो शान्ति प्रिय धर्म है। जिस धर्म ने हमेशा शान्ति, सौहार्द्र व समरसता का सन्देश दिया है। उसी देश से यह भीषण समस्या उभरकर सामने आयी है कि खुद के देशवासियों को वहां से खदेड़ा जा रहा है। हमें उसकी मूल समस्या में जाने की जरूरत है। जब तक हम सही प्रकार से जानकारी प्राप्त नहीं करेंगे। कि रोहिंग्या समस्या कहां से और क्यों पैदा हुई तब तक हम सही निर्णय नहीं ले सकते। हम भावनाओं में बहकर उन देशद्रोहियों का समर्थन करते रहेंगे जो स्वयं देश के लिए खतरा है। रोहिंग्या समस्या आज की नहीं बहुत पुरानी है। म्यांमार में बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग है जो हमेशा शान्ति व सौहार्द्र की बात करते हैं। बौद्ध धर्म स्थापना काल से ही शान्ति प्रिय रहा है। जानकारी के अनुसार १६वीं शताब्दी में म्यांमार में बकरीद पर रोक लगा दी गयी थी जो १८वीं शताब्दी में राजा अलोग यापा के बाद भी जारी रही। उस समय भी कुर्बानी को लेकर संघर्ष होते रहे, लेकिन मुस्लिमों की संख्या कम होने के कारण यह संघर्ष उग्र रूप नहीं ले सका, जो वर्तमान में है। उसके बाद अफगानिस्तान में एक प्रान्त है बालयान यह कई शताब्दियों तक बौद्ध धर्म की आस्था का केन्द्र था यहां पर बौद्ध मठ-मन्दिर है। यह स्थान मोहम्मद साहब के जन्म से पहले तक बौद्ध तीर्थ स्थान था। उसके बाद औरंगजेब ने इन बौद्ध स्थलों को तोड़ने का प्रयास किया, परन्तु ये इतने मजबूत थे कि इनको तोड़ पाना मुश्किल था। अपनी वैमनस्यता के कारण वह उनको जो नुकसान पहुंचा सकता था, पहुंचाया, मगर वह उनको समूल नष्ट नहीं कर सका, जिसके अंश आज भी प्राप्त होते हैं। उसके बाद सन् २००१ में मुल्ला उमर ने इन स्थलों को फिर से तोड़ने का प्रयास किया वह काफी सफल भी हुआ और

बृहस्पति का राशि संचरण

आजकल विविध फलित शास्त्रियों या कथित ज्योतिषियों के द्वारा बृहस्पति का गोचर राशि परिवर्तन बताकर सभी राशियों के अनुसार फलित का वाचन जनता के सामने रखा जा रहा है। इसी शृंखला में एक महिला फलित शास्त्री ने कुछ इन शब्दों में एक-एक राशि के प्रति अपना ज्ञान बघारा है। वे लिखती है, बृहस्पति १२ तारीख ०८.३० बजे सुबह कन्या राशि को छोड़कर तुला राशि में प्रवेश करेंगे। बृहस्पति शुभ ग्रह है परन्तु शत्रु राशि में प्रवेश करेंगे इसलिए इतना आराम देय स्थिति में ना होंगे-इत्यादि...इत्यादि

मैं वैदिक संसार के पाठकों का ध्यान एक बहुत खास तथ्य की ओर दिलाना चाहूंगा कि जिससे फलित शास्त्रियों के ज्ञान की वास्तविकता ही नहीं फलित का भ्रामक आधार भी उनको बहुत ही आसानी से अवगत हो जाएगा।

सच्चाई ये हैं कि बृहस्पति सम्प्रति तुला में ही है और १० अक्टूबर को १८/५२ बजे तुला को छोड़कर वृश्चिक राशि क्षेत्र में प्रवेश करेगा। इस सत्य को गणितीय प्रमाण से जानने के लिए कृपया वर्तमान विरोधकृत संवत्सर का श्री मोहनकृति आर्ष पत्रकम् (एक मात्र वैदिक पचांग) पृष्ठ ७० देखें। आप समझ सकते है कि झूठ पर गढ़ा गया फलित भला, क्योंकर सही होगा?

बृहस्पति के भोगांश को उसके शर, विषुवांश एवं क्रान्ति आदि के साथ दिया गया है। बृहस्पति के गलत संचरण के कारण ही प्रचलित वर्तमान पचांग में संवत्सर का नाम ही गलत दिया हुआ है। श्री मोहनकृति आर्ष पत्रकम् (एकमात्र वैदिक पचांग) से मेल खाती हुई गणित की लिए राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा प्रकाशित 'सूर्य सिद्धान्तः (प्रथम भाग) पृष्ठ ११४ देखें जहां प्रचलित पचांगों के 'प्लवंग' नामक संवत्सर को कीलक संवत्सर होना चाहिए ऐसा स्पष्ट है। उद्घृत पंक्ति, ' **अन्तः निम्न संवत्सरकोष्ठाकानुसारं षोडशमः संवत्सरः कीलकः वर्तते। परञ्च पञ्चङ्गेषु पञ्चदशः सम्वत्सरः प्लवङ्गनामकः वर्तते।**'

खेद है कि इस त्रुति के चलते संकल्प पाठ में संवत्सर का उच्चारण ही गलत हो रहा है। एक तरह से कह सकते हैं कि पूजाओं के कर्मकाण्ड का तो श्रीगणेश ही गलत। पुरोहित वर्ग अथवा कर्मकांडिक पंडित बन्धु खास ध्यान दें क्योंकि संकल्प पाठ की उनको सम्यक सूचना बनी रहना बहुत आवश्यक है। इति निवेदनम् ।

आचार्य दार्शनेय लोकेश, सम्पादक एवं गणितक
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) मो. ०९४१२३५४०३६

उसने बौद्ध स्थानों को बहुत नुकसान पहुंचाया। उसने म्यांमार में अपने संगठन का प्रचार-प्रसार किया। रोहिंग्या मुसलमानों को अपना मोहरा बनाकर बौद्धों के खिलाफ हिंसा फैला दी और यह क्रम कई दशकों से म्यांमार में जारी है। जिसमें आतंकवादी संगठन भाग लेकर म्यांमार को अशान्त करने व बौद्धों को खत्म करने का प्रयास कर रहे हैं। अब जब म्यांमार में मुस्लिमों की संख्या लगातार बढ़ रही है तो उन्होंने म्यांमार की सेना पर हमला किया और बौद्धों के धर्म स्थलों को तोड़ना शुरू किया तब जाकर म्यांमार की सेना को यह ठोस कदम उठाना पड़ा कि रोहिंग्या मुसलमानों को देश से बाहर कर दिया जाये। रोहिंग्या मुस्लिम देश के खिलाफ षड्यंत्र रचने के जुर्म में लगातार पकड़े जाते रहे हैं। वो जहां भी बहुसंख्यक है उन्होंने बौद्धों को वहां से खदेड़ दिया है। उन्हीं रोहिंग्या मुसलमानों को भारत में बसाने की मांग की जा रही है। मैं पूछना चाहता हूं कि ५६-५७ इस्लामिक राष्ट्र है उन्होंने अपने देश में इनको क्यों शरण नहीं दी, जबकि सऊदी अरब की टैंट सिटी मीना ५० स्क्वायर कि.मी. जमीन पर ५ लाख एयर कंडीशन टैंट खाली है जो ५० लाख लोगों को बसेरा दे सकते हैं, लेकिन किसी भी देश ने मदद का हाथ नहीं बढ़ाया। यह बहुत ही चिंतन का विषय है। आखिर म्यांमार से चीन लगभग १००० किमी की दूरी पर है। जबकि भारत वहां से ४-५ गुना दूरी पर है फिर वे चीन जाने के स्थान पर यहां आने को क्यों आतुर है। उन्हें पता है कि भारत में ही हमारे सहयोगी आसानी से मिल सकते हैं। जो खाते भारत की है और गाते दूसरे देशों की है। शरणार्थियों के नाम पर पागल कुत्तों को नहीं बसाया जा सकता। जो देश के लिए घातक हो। मैं उन लोगों से पूछना चाहता हूं कि जो रोहिंग्या लोगों का शरण देने की बात करते हैं। उन्हें अपने ही देश में विस्थापितों का जीवन जीने के लिए मजबूर लाखों कश्मीरी पण्डित क्यों नहीं दिखाई देते। वे अपने ही देश में बेगानों की तरह जीवन यापन कर रहे है। उनके बच्चों एवं महिलाओं पर अत्याचार किए गए उनके लिए किसी ने सोचा है? किसी ने नहीं। भारत में प्रतिवर्ष तीन करोड़ लोग बाढ़ से प्रभावित होते हैं उनकी सुध किसी ने नहीं ली हजारों लोग भूखे पेट रात को सो सकते हैं। पाकिस्तान में १ करोड़ २५ लाख हिन्दू थे जो अब मात्र १० लाख रह गए हैं उनके बारे में किसी ने नहीं सोचा। बांग्लादेश में १९४७ में हिन्दू २८ प्रतिशत थे जो १९८१ में १२ प्रतिशत तथा २०११ में ९ प्रतिशत रह गए। उनकी घटती जनसंख्या एवं पलायन के बारे में किसी भी व्यक्ति ने उनके अधिकारों की बात नहीं की। हिन्दुओं पर लगातार अत्याचार किया जा रहा है और पलायन के लिए मजबूर किया जा रहा है। उसके लिए कोई आवाज क्यों नहीं उठाता। जो आवाज उठाएंगे वह साम्प्रदायिक कहलाएगा। भारत में सैक्यूलरिज्म के नाम पर जो नंगा नाच किया जा ररहा है उसके बहुत ही गम्भीर परिणाम होंगे यदि यह सिलसिला नहीं रुका तो देश गर्त में चला जाएगा। देश में कौन रहेगा या नहीं यह भारत की सरकार तय करेगी, न कि सड़कों पर भीड़ इकट्ठी करके देश को तोड़ने की बात करने वाले चंद जयचंद एवं विदेशी आक्रान्ताओं के वंशज। भारत ने शरणार्थियों को लेकर संयुक्त राष्ट्र के १९५१ के कन्वेंशन पर दस्तखत नहीं किये हैं जो हर प्रकार के शरणार्थियों को जगह दी जाए। सरकार को बहुत ही सोच समझकर निर्णय लेने की जरूरत है देश की एकता के लिए खतरा बनने वालों को इस देश में कोई स्थान नहीं है भारत की अस्मिता और सुरक्षा सबसे पहले हैं। भारतीय मानवाधिकार कार्यकर्ताओं एवं रोहिंग्या के समर्थकों को भावनाओं में बहकर नहीं सोच-समझकर एवं देशहित में समर्थन करना चाहिए। भारत प्राचीन काल से सहिष्णुता-प्रेम-भाईचारे, आपसी सौहार्द्र की भावना के लिए जाना जाता है। भारत ने विभिन्न संस्कृतियों को अंगीकार किया है जो उसकी महत्ता को प्रदर्शित करता है। परन्तु देश की सुरक्षा के साथ किसी भी कीमत पर समझौता नहीं किया जा सकता है, जो देशहित में होगा वही सर्वमान्य निर्णय होगा।●

पृष्ठ १७ का शेष भाग ...... 'भारतियों जागो'

बीस वर्ष की आयु तक गांव में रहा। प्रथम २ वर्ष तक गांव में खेती की और किसान रहा फिर शहर में आ गया। २० वर्ष से ४० वर्ष तक की आयु आर्य समाज के द्वारा समाजसेवा की। इसी बीच अपनी शिक्षा पूरी करते हुए मेरठ यूनिवर्सिटी से एम.ए. हिन्दी से किया। अंग्रेजी और संस्कृत का विशेष अध्ययन किया।

आर्य समाज के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महाराथी अमर स्वामी एवं रामचन्द्र देहलवी के चरणों में बैठकर सभी धर्मों का अध्ययन किया, इसलिए मुझे किसी धर्म और राजनीति का आदमी चुनौती नहीं दे सकता जो चुनौती देगा उससे शास्त्रार्थ करूंगा और वह मुंह की खाएगा। चालीस वर्ष की आयु में परिवार का बोझ बढ़ गया। घर-गृहस्थी, बच्चों का पालन पोषण आर्य समाज की सेवा से नहीं हुआ तो मैंने आर्य समाज छोड़ दिया।

चालीस वर्ष में अपना व्यापार शुरू किया। वैसे तो मैंने पचास वर्ष होते ही वैदिक परम्परानुसार वानप्रस्थ ले लिया था। फिर भी परिवार की जिम्मेदारी से मुक्त होने में समय लग गया और ६० वर्ष की आयु में बच्चों ने कार्य मुक्त कर दिया। फिर में समाज सेवा में जुट गया। समाज सेवा करते-करते अनुभव हुआ कि स्वतन्त्रता के बाद देश का माहौल बदल गया है। हजारों समाजसेवी वह कार्य नहीं करते हैं जो एक मन्त्री, मुख्यमन्त्री, प्रधानमन्त्री कर सकता है। अतः अच्छे लोग सत्ता में र हे तो जनता आनन्द ही आनन्द में रहेगी। अतः राष्ट्र निर्माण पार्टी का गठन किया और अब हम चुनाव मैदान में हैं। समस्या चुनाव में धन-बल, बाहुबल चाहिये। सच्चा ईमानदार आदमी कैसे चुनाव लड़े।

प्रश्न- क्या विदेश यात्रा भी की?

उत्तर- हां, अमेरिका, रूस, हॉलैंड, इंग्लैंड, रोम, फ्रांस, स्विट्जरलैंड, मॉरिशस, सिंगापुर, मलेशिया, दुबई आदि कम से कम २० देशों का भ्रमण किया। सबने अपने राष्ट्र को स्वर्ग बना रखा है और हम नरक में रह रहे हैं।

प्रश्न- कुछ लेखन आदि कार्य भी किया।

उत्तर- अनेक ग्रन्थों का सम्पादन व लेखन किया।

प्रश्न- गांव के बारे में क्या विचार है?

उत्तर- गांव-गांव में अखाड़े और गऊशाला बनवा दूंगा। गांव को स्वर्ग बना दूंगा।

सन्त कबीर की चटक चदरिया

- देवनारायण भारद्वाज -
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.
चलभाष -०५७१-२७४२०६१

कथन को 'सत्यार्थ प्रकाश' की पंक्तियों से प्रारम्भ करते हैं। कबीर के विषय में लिखा है- 'जब वह बड़ा हुआ तब जुलाहे का काम करता था। किसी पण्डित के पास संस्कृत पढ़ने गया। उसने उसका अपमान किया। कहा कि हम जुलाहे को नहीं पढ़ाते। इसी प्रकार कई पण्डितों के पास फिरा, परन्तु किसी ने न पढ़ाया। ऐसी पतन की कुवृत्ति उस समय नहीं थी, जब भारत में राजा भोज का शासन था। विज्ञान कला-साहित्य के प्रसार हेतु वे अपना धन पानी की भांति बहाते रहते थे और घोषणा करते थे कि मेरे राज्य में कोई अनपढ़ मूढ़ न रहने पाये। यथा-

विप्रोऽपि यो भवेन्मूर्खः, स पुराद् बहिरस्तु में।
कुम्भकारोऽपि यो विद्वान, स तिष्ठतु पुरे मम।।

ब्राह्मण भी यदि मूर्ख है तो वह मेरी नगरी में बाहर निकल जाये और कुम्भकार भी विद्वान है, वह मेरी नगरी में निवास करें। अस्तु धारा नगरी में कोई भी अविद्वान-मूर्ख नहीं रह पाता था। एक बार लक्ष्मीघर नामक कोई विद्वान धारानगरी में निवास हेतु पधारे। राजा भोज ने अपने मन्त्री से उनके लिए आवास की व्यवस्था हेतु कह दिया। मन्त्री जी को जब कोई अविद्वान नहीं मिला, तो उन्होंने बिना जाने-परखे एक जुलाहे को अपना आवास खाली करने हेतु आदेशित कर दिया। जुलाहा अविलम्ब राजा के समक्ष उपस्थित हुआ और सारी वस्तु स्थिति अवगत कराते हुए बोल पड़ा।

काव्यं करोमि नहि चारुतरं करोमि,
यत्नात्करोमि यदि चारुतरं करोमि।
भूपाल मौलिमणि मण्डित पाद पीठ।
हे साहसांक! कवयामि बयामि यामि।

नमन करने वाले राजाओं की मुकुट मणियों की कान्ति से रञ्जित चरण वाले साहस- मूर्ति सम्राट! मैं कविता कर लेता हूं, किन्तु वह सुन्दर नहीं होती है। अपने बुवाई के कार्य से समय निकालकर मैं सुन्दर कविता भी कर सकता हूं। आप ही बताइये कि मैं (कवयामि) कविता करूं, (वयामि) बुनाई करूं या (यामि) नगर छोड़कर चला जाऊं। राजा भोज ने जुलाहे के '**कवियामि, वयामि, यामि**' के काव्यालंकार पर रीझकर उसकी सराहना की और कविताओं के प्रत्येक अक्षर की गणनानुसार लाखों स्वर्णमुद्राओं का पुरस्कार देकर उसे नगर में ही रहने का अभय दान प्रदान कर दिया।

सर्वविदित है कि काशी नगरी के जुलाहे नीरू को नवजात अवस्था में प्राप्त शिशु को ही कबीर नाम से जाना गया। अपनी बाल-युवा-वृद्धावस्था की चमत्कृत करने वाली लीलायें काशी नगरी में की, किन्तु मरणासन्न वृद्धावस्था में उन्होंने काशीनगरी को स्वयमेव छोड़कर मगहर में जाकर डेरा जमा लिया। कबीर ने इस अन्ध मिथक को तोड़ दिया कि काशी में मरने वाला स्वमेव मुक्ति का अधिकारी हो जाता है। उन्होंने अपने सत्कर्मों पर भरोसा करते हुए काशी के इस प्रलोभन का त्यागकर दिया- '**जौं कबिरा काशी मरै तो रामहि कौन निहोरा**' बात कबीरदास की ही नहीं एक साधारण सा धुनिया जो वस्त्रों की बुनाई से पूर्व रूई की धुनाई करता था, समय मिलने पर स्वामी दयानन्द के सत्संग में भी आ जाता था। उसकी उत्कृष्ट अभिलाषा के अनुसार स्वामी जी ने उसे ओ३म् के जाप की विधि बता दी। एक दिन भक्त धुनिया के स्वामी जी से प्रार्थना की-जप के अतिरिक्त मुझे और क्या करना चाहिए, जिससे मेरा कल्याण हो। स्वामीजी ने उसे सहज में समझा दिया- 'जितनी रूई किसी से लो धुनकर उतनी ही उसे लौटा दो। यही सद्व्यवहार तुम्हारे लिए एक उत्तम कल्याण कारी कर्म है।'

बात रूई लौटाने की चली, तो सन्त कबीर सृष्टि रचयिता विधाता प्रभु को उसी के द्वारा प्रदत्त मौलिक स्वच्छ चटक चदरिया ही लौटाने के लिए समुद्यत हो गये। संसारी ग्राहकों की चदरिया तो उन्होंने चटक बनाई ही, अपनी चदरिया भी चटक (च=चक्षण-प्रभु की कृपा दृष्टि व अनुग्रह+ट=टसर-एक प्रकार का मोटा रेशम+क=कनक-गेहूं अन्न सी पोषक व स्वर्ण सी ऐश्वर्य युक्त) बनायी। कहा भी है '**जाति जुलाहा मति का धीर सहजि सहजि गुन रमैं कबीर**' परमेश प्रभु को लौटाते हुए भी उन्होंने निराभिमानता का विनम्र परिचय दिया।

झीनी-झीनी रे बीनी चदरिया
सो चदरिया सुर नर मुनि ओढ़ी,
ओढ़ि, ओढ़ि के मैली कीन्ही चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धरि दीन्ही चन्दरिया।।

वास्तव में बुनाई वह हस्तकला है, जिसके अभ्यास से न केवल वस्त्रों की रचना होती है। प्रत्युत बुनकर के मस्तिष्कस्थ सीमन्त (सूक्ष्म कोषिकाओं) के परिमार्जन से मधुर मेघा की संरचना भी होती रहती है। वह सारस्वत सामर्थ्य का अधिकारी बन जाता है। इसके लिए सन्त कबीर स्वयं आदर्श स्वरूप अभिलक्षित रहते हैं। वे चदरिया की बुनाई करते-करते कुशल कविताई भी करने लगे और हिन्दी साहित्य के शिरोमणि भक्त कवि के रूप में प्रतिष्ठित हो गये। बात सन्त कबीर तक ही सीमित न रहते हुए, बढ़ते-बढ़ते यह वेद के ऋषि तक पहुंच जाती है। देखो, वे चदरिया की बुनाई करते-करते मानवीय चित्त की धुनाई भी करने लग पड़ते हैं, जिससे उसकी मलीनता का क्षरण होकर सदाचरण की सलिलता का सौन्दर्य छलक उठता है।

तन्तु तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथोरक्षधिया कृतान्।
अनुल्वणंवयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यंजनम् ।।

(ऋ.१०.५३.६)

अरे मनुष्य! जुलाहे की भांति (**तन्तुं तन्वं रजसः**) संसार का ताना-बाना तानता हुआ (**भानुमन्विहि**) सूर्यलोक का अनुसरण करते हुए (**ज्योतिष्मतः पक्षोरक्ष**) ज्ञान प्रभा के **शेष भाग पृष्ठ ४८ पर**

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज गान्धीधाम

(ISO 9001: 2008 प्रमाणित भारत की मॉडेल, ३६५ दिन सक्रिय आर्य समाज)

महर्षि दयानन्द मार्ग, झण्डा चौक के पास, गान्धीधाम (कच्छ) ३७०२०१, फोनः ०२८३६-२३१२२३

मानवता का प्रकल्प जीवन प्रभात गान्धीधाम

जहां भारत का भविष्य निर्मित हो रहा है।

सन २००१ का कच्छ-गुजरात में आया विनाशकारी भूकम्प पूरे विश्व के लोगों को याद है सन् २००४ का दक्षिण भारत में आया सुनामी भी सबको याद है। ये दोनों आपदाएं वहां के लोगों के लिए अनेक समस्याएं लेकर आई और एक बहुत बड़ी चुनौती खड़ी कर दी मानव जाति के लिए कि वे मानव जाति को कैसे पुनः खड़ा कर दें। आर्य समाज गान्धीधाम जो कच्छ-गुजरात में ही स्थित है उसने इन दोनों आपदाओं को सहा। उसके आगे भी बहुत बड़ी चुनौती थी-पुनर्वास की। उसने इस चुनौती का सामना करते हुए उसे अवसर में बदल डाला। राहत व बचाव कार्य करते हुए उसने एक जीवित स्मारक बनाने का निर्णय किया जहां माता-पिता गंवा चुके बच्चों को रखा जाना था। (कच्छ में हर गांव में मृतकों की याद में स्मारक बने हैं) हमने जीवितों की याद में स्मारक बनाया) भूकम्प के तीन दिन बाद ही हमने आर्य जगत् की प्रेरणा से प्रकल्प स्थापित किया **जीवनप्रभात**। हम **अनाथ** शब्द की व्याख्या बदलना चाहते थे इस कारण हमने प्रकल्प का नाम ही **जीवनप्रभात** नहीं रखा वरन् उन बातों को भी लागू किया जिससे बच्चे **सनाथ** बन जाये। हमने पहले दिन से ही उन्हें नये कपड़े पहनाये, उन्हें पार्टियों, होटलों में बचा हुआ जूठा भोजन नहीं दिया। उनसे बर्तन नहीं मंजवाये, झाड़ू नहीं लगवाई, कपड़े नहीं धुलवाये, लेकिन उन्हें वेद मन्त्र सिखाये, संगीत सिखाया, क्रॉफ्ट कार्य सिखाया, प्रेरणादायक पुस्तकालय प्रदान किया, प्रेरणादायक पुस्तकालय प्रदान किया, खेलकूद के सभी साधन दिये, खुशी का माहौल दिया, जीवन का पुनः प्रभात किया। जीवन प्रभात में हर बच्चे की पढ़ाई का विशेष ध्यान दिया जाता है। भारत की २१वीं रैंकिंग इन्जीनियरिंग कॉलेज निरमा यूनिवर्सिटी अहमदाबाद में ३ बच्चे बी.टेक कर रहे हैं एक बच्चे का १ वर्ष का खर्च ३ लाख रुपए से ज्यादा आता है, ४ वर्ष का कोर्स है अर्थात् ३६ लाख रुपए, कई बच्चों को हम बी.सी.ए., बी.कॉम, डिप्लोमा, कम्प्यूटर कोर्स, नर्सिंग, आई.टी.आई जैसे विविध कोर्स करवाये हैं। हमारे कुल खर्च का ४० प्रतिशत शिक्षा पर खर्च किया जाता है।

हम ऋणी है पूरी मानवता के जो इस यज्ञ की अग्नि को कायम रखने के लिए निरन्तर आहुति दे रहे हैं। इस आहुति की निरन्तर ज्यादा से ज्यादा आवश्यकता है। सारे सहयोगी भाग्यशाली है कि उन्हें परमात्मा ने दान देने के लिए सशक्त बनाया। भगवान न करें हमें या हमारे परिवार को लेने की स्थिति में ला खड़ा करें। अपने बच्चे को पढ़ाने में आप भरपूर खर्च करते हैं- एक निराधार बच्चे को भी पढ़ा दीजिये। आवश्यकता है हम निरंतर पुण्य कार्य करते रहें व परमात्मा के आशीर्वाद के पात्र बनते रहे। हम कोई सरकारी सहायता नहीं लेते हैं मात्र दान पर निर्भर है और दान की एफडीआर भी नहीं रखते हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप देश के भविष्य इन बच्चों को दिल खोलकर सहयोग करें। गान्धीधाम में करीब १०० बच्चे हैं इन बच्चों की सहायता करें ऐसी प्रार्थना है। हम आगामी वर्षों में समाज के गरीब बच्चों तक भी पहुंच कर उनके शिक्षा खर्च को उठाना चाहते हैं।

दान योजना

एक बालक के पालक माता-पिता बनें	**३०,०००/-**	**एक बालक का वार्षिक शिक्षा खर्च**	**१२,०००/-**
सभी के लिए एक दिन का भोजन खर्च	**१५,०००/-**	**सभी के लिए एक समय का सादा भोजन**	**०५,१००/-**

विस्तृत जानकारी हेतु हमारी Swebsite www.aryagan.org अवश्य देखें, हमारा ई-मेल aryagan@aryagan.org है।

On line Donation आर्य समाज गान्धीधाम चेरिटेबल ट्रस्ट के पक्ष में कार्पोरेशन बैंक गान्धीधाम की शाखा के खाता नंबर ५२०१४१००१२६९४४१ में **IFSC CODE: CORP0000467** अथवा एचडीएफसी बैंक गान्धीधाम शाखा के खाता नंबर ०२१६१४५००००५५ में **IFSC CODE: HDFC0000216** जमा करें। आपका सात्विक सहयोग चेक/डीडी/ '**आर्य समाज गान्धीधाम चेरिटेबल ट्रस्ट**' के नाम आर्य समाज, झण्डाचौक के पास, गान्धीधाम (कच्छ) गुजरात- ३७०२०१ के पते पर भेजें।

विनीत

वाचोनिधि आर्य	गुरुदत्त शर्मा	मोहन जांगिड	राजेन्द्र गौड
प्रधान	महामन्त्री	उप प्रधान	कोषाध्यक्ष
९४२६३३६२३२	९४२६२१५३३८	९४२६२१५४५१	

ट्रस्टी

विमला बहन जांगिड

खेमचन्द जांगिड

जयंति कोरिंगा

दिव्य वैदिक सत्संग समारोह
दिनांक १२ से १४ जनवरी २०१८ तक

पूरे भारत के आर्यजनों में आर्य समाज गान्धीधाम के महोत्सव का इंतजार विशेष रूप से रहता है और सैकड़ों लोग इसमें शामिल होते हैं। आगामी जनवरी २०१८ में पुनः यह कार्यक्रम बड़े पैमाने पर पूरे उत्साह व धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की माननीया आचार्य नन्दिता शास्त्री जी (जो वेदों की प्रकाण्ड विदुषी है) व गुरुकुल की ब्रह्मचारिणी छात्राएं पधार रही है। माता साध्वी उत्तमायति जी (प्रधाना-आर्य वीरांगना दल, दिल्ली) तथा माननीय आचार्य श्री जयेन्द्र जी (गुरुकुल नोएडा) भी विशेष आमंत्रित विद्वान है।

तीन दिन के इस कार्यक्रम में प्रातः बहुकुण्डीय यज्ञ होगा, उसके बाद विविध पारिवारिक विषयों पर सम्मेलन होंगे। पूरे दिनभर का कार्यक्रम होगा जो प्रातः ८.०० से शुरू होगा व रात्रि १०.०० तक चलेगा। अंतिम दिन रविवार को दोपहर १२.३० बजे कार्यक्रम की पूर्णाहुति होगी। नगर शोभायात्रा, आर्य वीर दल का शक्ति प्रदर्शन भी होगा। इस अवसर पर विदेश से कई अतिथि व देशभर से अनेक गणमान्य व्यक्ति पधारेंगे तथा आर्य जगत् के मूर्धन्य व्यक्तित्व व अमेरिका निवासी श्री गिरीश खोसलाजी का ७०वां जन्मदिन धूमधाम से मनाया जाएगा। श्री विश्रुत आर्य जी (प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका), श्री भुवनेश खोसला (महामन्त्री-आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका) श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल (प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) श्री प्रकाश आर्य (महामन्त्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली), श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) श्री विनय आर्य (महामन्त्री- आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) विशेष रूप से पधारेंगे।

जीवनप्रभात गान्धीधाम को देखने अनेक लोग बार-बार आते हैं। हर वर्ष उन्नति देखकर खुश होते हैं और जो पहली बार आए हैं वे इस तीर्थस्थली को देखकर प्रेरणा प्राप्त करते हैं। गान्धीधाम अहमदाबाद से ३०० किलोमीटर दूर कच्छ जिले में स्थित है जो सड़क मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। पूरे दिन व रात प्रायवेट व सरकारी बसें चलती है। दिन में मुम्बई से दो ट्रेन आती है व एक ट्रेन रोज दिल्ली से आती है, इसके अलावा भी दो तिन ट्रेन विविध स्थानों से रोज आती है। गान्धीधाम मुम्बई-कांडला, मुम्बई, भुज विमान मार्ग से जुड़ा हुआ है, रोज तीन विमान मुम्बई से यहां आते हैं। आप महानुभावों से अनुरोध है कि इष्टमित्रों सहित सपरिवार पधारें, आपके आगमन की अग्रिम सूचना देवें। **(आर्य समाज गांधीधाम के सेवाकार्यों की झलक एवं सम्पर्क हेतु पृष्ठ ३२ देखें।)**

वेद प्रचार उत्सव
दिनांक १५ से १९ नवम्बर २०१७ तक

आर्य समाज गोल बाजार, श्रीगंगानगर (राज.) का वार्षिकोत्सव वेद प्रचार उत्सव के रूप में आयोजित किया जा रहा है। समस्त धर्मनिष्ठ जन सादर आमंत्रित है।

आमंत्रित विद्वानः यज्ञ ब्रह्मा- डॉ. पुनीत जी आचार्य, मेरठ (उ.प्र.)
वेदपाठी- गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के ब्रह्मचारीगण
भजनोपदेशक- पं. सुरेश जी शास्त्री, बटाला (पंजाब)

विनीत- प्रधान एवं मन्त्री तथा समस्त कार्यकारिणी के पदाधिकारी एवं सदस्यगण आर्य समाज गोल बाजार, श्री गंगानगर (राज.)
सम्पर्क- पं. रामनिवास गुणग्राहक (पुरोहित) ७५९७८९४९९१

२०वां सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव
दिनांक ०४ से ०६ नवम्बर २०१७ तक

निवेदक-श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान)
सम्पर्क-०२९४-२४१७६९४, ०९८२९०६३११०, ०९३१४५३५३७९

दयानन्द जनकल्याण आश्रम २३वां वार्षिकोत्सव
दिनांक २६ से २८ फरवरी २०१८ तक

पं. शिवशंकर शर्मा काव्य तीर्थ स्मृति भवन जरैल, जिला-मधुबनी बिहार (आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी) का २३वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास से आयोजित किया जा रहा है। प्राचीन राज्य मिथिला की धरती पर अवस्थित निःशुल्क संचालित इस गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में समस्त धर्मनिष्ठजनों का स्वागत अभिनन्दन है। अवश्य पधारे। दानी महानुभावों से अनुरोध है कि मुक्तहस्त से दान दें।

आमंत्रित विद्वान एवं अतिथि : आचार्य चन्द्रशेखर जी शास्त्री, दिल्ली, पं. सुमन जी आर्य दिल्ली, श्री गंगाप्रसाद जी, प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, डॉ. व्यास नन्दन जी शास्त्री, मन्त्री-आर्य प्र. सभा बिहार

निवेदक एवं सम्पर्क-सुशील, संचालक- आर्ष गुरुकुल वाणी एवं समस्त गुरुकुल परिवार, चलभाष- ८८०९८५२१८७, ९१९९७३७९०१

नोट- मधुबनी से बेनीपट्टी वाली बस से हनुमान चौक उतरकर गुरुकुल पहुंचे।

दर्शन योग महाविद्यालय, सुन्दरपुर द्वितीय वार्षिकोत्सव
दिनांक ०६ नवम्बर २०१७ तक

आर्य जगत् के महान् योगी स्वामी श्री सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा संस्थापित दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ की नवीन शाखा दर्शन योग महाविद्यालय महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरनगर, रोहतक हरियाणा का द्वितीय वार्षिकोत्सव आगामी कार्तिक कृष्ण तृतीया २०७४ सोमवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। आप सभी महानुभाव अपने प्रिय परिजनों के साथ आकर विद्वानों के उपदेशामृत से मानव जीवन के मुख्य लक्ष्य को प्रशस्त बनाकर पुण्य के भागी बने।

उपस्थित विद्वान- स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक, आचार्य नवानन्द जी आर्य

कार्यक्रमः प्रातः ०८.१५-९.०० तक यज्ञ, ध्वजारोहण, ध्वजगान, ०९.१५ से १२ बजे तक भजन, प्रवचन, दोपहर १२.१५ से ऋषि लंगर

निवेदक-दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़ (गुजरात) एवं दर्शन योग महाविद्यालय, सुन्दरनगर रोहतक (हरियाणा)।

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद का १०६वां वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम्, होशंगाबाद (म.प्र.) का १०६ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ८,९ एवं १० दिसम्बर २०१७ को भव्यता पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस भव्य समारोह में आप सभी गुरुकुल हितैषी धर्मप्रेमी सज्जन इष्ट मित्रों सहित सपरिवार सादर आमंत्रित हैं। कृपया अवश्य पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें।

सम्पर्क- आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक- ०९९०७०५६७२६, ०९४२४४७१२८८

चतुर्वेद पारायण यज्ञ

दिनांक १ जनवरी से ३१ जनवरी २०१८ तक

श्री दयानन्द जी शर्मा दक्षिण अफ्रीका (सत्यकाम इन्टर नेशनल स्कूल, मेरठ वालों) की गरिमामयी उपस्थिति में चतुर्वेद पारायण यज्ञ गुरुकुल नवप्रभात आश्रम,नौवावाली, जिला- बरगढ़, उड़ीसा में प्रारम्भ होगा, जिसकी पूर्णाहुति गुरुकुल के वार्षिकोत्सव के समापन दिवस ३१ जनवरी को होगी।

गुरुकुल नवप्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

दिनांक ३०-३१ जनवरी २०१८

वेदों के मर्मज्ञ स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल प्रभात आश्रम के विशेष सानिध्य तथा आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति में गुरुकुल का वार्षिकोत्सव दिनांक ३०-३१ को सम्पन्न होगा। गुरुकुल का निकटवर्ती रेलवे स्टेशन खरियार रोड (छत्तीसगढ़) रायपुर-तितिलागढ़ के मध्य रायपुर से १०५ किलोमीटर दूर है।

सम्पर्क- आचार्य भगवानदेव जी चलभाष- ८७६३३२४२००
गुरुकुल नवप्रभात आश्रम, नौवावाली, जिला- बरगढ़ उड़ीसा

गायत्री महायज्ञ एवं प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक- २४ से ३२ दिसम्बर २०१७ तक

आर्य समाज महू, जिला-इंदौर (म.प्र.) के द्वारा प्रत्येक दो वर्ष में आयोजित किया जाने वाला गायत्री महायज्ञ इस वर्ष के अन्त में दिनांक २४ से ३१ दिसम्बर तक वृहद स्तर पर आयोजित किया जा रहा है। इस वर्ष इस अवसर पर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल का प्रान्तिय आर्य महासम्मेलन भी दिनांक २९ से ३१ दिसम्बर तक सम्पन्न होगा। देश के सुविख्यात वेदों के मर्मज्ञ विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ इस अवसर पर उपस्थितियों को प्राप्त होगा। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर वृहद स्तर पर लाभ लेने का अनुरोध आर्य समाज महू द्वारा किया गया है।

निवेदक एवं सम्पर्क- प्रकाश आर्य, महामन्त्री- सा.आ. प्रतिनिधि सभा एवं मध्य आ. प्रतिनिधि सभा, भोपाल- ९८२६६५५११७
आर्य राधेश्याम बियाणी-९८२६२९८३६२

१३४वां ऋषि स्मृति समारोह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अंतिम कर्म स्थली जोधपुर स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती भवन में १३४वां ऋषि स्मृति समारोह मिति आश्विन शुक्ल पक्ष अष्टमी से द्वादशी संवत् २०७४ अर्थात् २८ सितम्बर से २ अक्टूबर २०१७ तक उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस सम्मेलन में आए आर्य संन्यसियों में गुरुकुल आश्रम आमसेना के संस्थापक स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल आबू पर्वत के संस्थापक स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती , उत्तरकाशी उत्तराखण्ड से स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती, दिल्ली से स्वामी शिवानन्द जी सरस्वता, भीनमाल से प्रसिद्ध वैज्ञानिक संन्यासी स्वामी अग्निव्रत जी नैष्टिक, सीकर सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुखानन्द जी महाराज अधिष्ठाता, गुरूकुल फतूही प्रमुख थे। आर्य विद्वानों में आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश, डॉ. वेदपाल जी मेरठ, आचार्य कमलेश कुमार जी चौकसी अहमदाबाद, आचार्या अन्नपूर्णा जी द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरूकुल महाविद्यालय देहरादून, आचार्य सत्यजीत जी अजमेर, आचार्य सोमदेव जी अजमेर, योगाचार्य चन्द्रेश जी गान्धीधाम तथा प्रमुख आर्य नेताओं में श्रीमान् सुरेशचन्द्र जी आर्य प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रीमान ठाकुर विक्रम सिंह जी दानवीर आर्यश्रेष्ठी व अध्यक्ष- राष्ट्र निर्माण पार्टी, आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ से आचार्य अंशुदेव जी इत्यादि महानुभावों ने आर्य जनता संबोधित किया। श्री चन्द्रप्रकाश जी देवड़ा दानवीर आर्यश्रेष्ठी जयपुर प्रतिबद्धता के बाद भी समयाभाव के कारण उपस्थित नहीं सके। कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः पांच से साढ़े पांच बजे तक आचार्य चन्द्रेश जी ने साधकों को ध्यान योग का अभ्यास कराया।

आर्य जगत् के यशस्वी विद्वान् आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश के ब्रह्मत्व में तथा द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरूकुल महाविद्यालय की आचार्या अन्नपूर्णा जी की तथा उनकी ब्रह्मचारिणी शिष्याओं के सुमधुर वेदपाठ के बीच प्रातः ऋग्वेद यज्ञ तथा सांय दैनिक यज्ञ का तथा संध्या प्रतिदिन आयोजित किए गए। महर्षि दयानन्द सरस्वती योग साधना-सत्संग भवन में अपने सात्विक दान से सहयोग करने वाले आर्य श्रेष्ठियों को यजमान बनाया गया। यज्ञ में आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश मन्त्रों की व्याख्या भी करते रहे।

प्रथम दिवस के ऋग्वेद के उपरान्त आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश, स्वामी धर्मानन्द जी महाराज व आ.प्र. सभा राजस्थान के प्रधान विजयसिंह भाटी द्वारा ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम का विधिवत् आरंभ हुआ। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास द्वारा नवनिर्मित महर्षि दयानन्द सरस्वती योग साधना सत्संग भवन का लोकार्पण किया गया। जिस पर कार्यक्रम के प्रथम दिन सौ फीट ऊंचा ओ३म् ध्वज फहराया गया। सभी आगंतुकों के लिए आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था न्यास की ओर से निःशुल्क की गई थी। कार्यक्रम में विद्वानों, संन्यासियों, अतिथियों तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती योगसाधना सत्संग भवन में अपने सात्विक दान से सहयोग करने वाले आर्य श्रेष्ठियों का अभिनन्दन, स्मृति भवन न्यास कर्मठ कार्यकर्ताओं व सहयोगियों का सम्मान तथा सेवकों का उत्साहवर्द्धन किया गया। न्यास के मन्त्री आर्य किशनलाल गहलोत द्वारा तन-मन-धन से पूर्ण समर्पित होकर की गई सेवाओं के लिए न्यास और जोधपुर की आर्यसमाजों की ओर से उन्हें अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। अभिनन्दन पत्र का मंच से वाचन डॉ. रामनारायण जी शास्त्री ने किया। कार्यक्रम के अंतिम दिन आधुनिक उपकरणों युक्त व्यायामशाला का शिलान्यास महात्मा श्री नारायण स्वामी अतिथि शाला के ऊपर किया गया। पांच दिवसीय इस कार्यक्रम में कुल ग्यारह सम्मेलन आयोजित किए गए। **इस गरिमामयी अवसर पर वैदिक संसार इन्दौर के प्रकाशक सुखदेव शर्मा सपत्निक वेदप्रचार वाहन के साथ उपस्थित हुए तथा भव्य स्तर पर वैदिक साहित्य तथा महापुरुषों के चित्रों की प्रदर्शनी लगाकर आयोजन की गरिमा में वृद्धि की गई।**

आर्यन अभिनंदन समारोह सम्पन्न

क्षत्रियों के गौरव, आर्य नेता श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी के ७५वें जन्म दिवस के अवसर पर आर्यन अभिनंदन समारोह का भव्य आयोजन १७

सितंबर-२०१७ को आर्य समाज, डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस भव्य समारोह की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानंद सरस्वती ने की। देश के अलग अलग प्रांतों से आए आर्य जगत् के आर्य महिला-पुरूष धर्माचार्य, उपदेशक-उपदेशिका, आर्य समाज के उत्थान में प्रचार-प्रसार के माध्यम से अहम योगदान दे रहे पुस्तक विक्रेता, प्रकाशकों, लेखकों, विद्वानों को आर्यन अभिनन्दन समारोह के विशाल मंच पर सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ। इस समारोह में सभी राज्यों से लगभग ५५० लोगों को भेंट स्वरूप एक-एक सुंदर शॉल, बिस्कुट, किताबें, नगदी चैक एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

ठाकुर विक्रम सिंह जी द्वारा अपना अमूल्य जीवन आर्य समाज की सेवा में समर्पित कर वैदिक धर्म, मानवता और राष्ट्र की महती सेवा में लगाने के संकल्प को अद्वितीय संकल्प मानते हुए हर प्रांत से आए महानुभावों ने आर्य समाज में मिशाल कायम करने वाला संकल्प बताया। क्षत्रिय सेवा संस्थान ट्रस्ट दिल्ली ने ठाकुर विक्रम सिंह जी के ७५वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर राजर्षि की उपाधि से शॉल ओढ़ाकर एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

समारोह में प्रसिद्ध आर्यजन श्री आनंद चौहान, श्री धर्मपाल आर्य, डा. रूप किशोर शास्त्री हरिद्वार, श्री अजय चौहान, श्री रामनाथ सहगल, श्री सत्यानंद आर्य, श्रीमती मृदुला चैहान, श्री अजय सहगल, श्री मेघश्याम वेदालंकार, श्री प्रेमपाल शास्त्री, राजपाल चौहान शास्त्री, विजयपाल आर्य मेरठ आदि की उपस्थिति मंच पर शोभायमान थी। महानुभावों ने अपनी-अपनी उपस्थिति दर्शाते हुए अपने-अपने विचारों से सभी का मनोबल बढ़ाया। महानुभावों ने अपने-अपने संदेश में ठाकुर जी के ७५वें जन्मदिवस के अवसर पर कार्यक्रम में शोभायमान होने के साथ-साथ युगों-युगों तक याद करने लायक कार्यक्रम बताया। समारोह के पश्चात् सभी ने स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। सभी प्रांतों से आए महानुभावों ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित

प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान, ओजस्वी वक्ता, प्रेरक, लेखक एवं अध्यात्म पथ के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी नई दिल्ली के भव्य सभागार में ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट की ओर से शाल, प्रशस्ति-पत्र एवं ५१ हजार रुपए की सम्मान राशि भेंटकर सम्मानित किया गया।

उन्हें यह सम्मान आर्य संस्कृति रक्षक, क्षत्रियों के गौरव एवं राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह जी ने विशाल जनसमुदाय की उपस्थिति में प्रदान किया। खचाखच भरे सभागार में ठाकुर विक्रम सिंह जी ने कहा कि विलक्षण प्रतिभा के धनी आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने अपना अमूल्य जीवन आर्य समाज की सेवा में समर्पित कर वैदिक धर्म, मानवता और राष्ट्र की महती सेवा की है। उन्होंने देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी जाकर वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार एवं मानव कल्याण के क्षेत्र में जो रचनात्मक कार्य किया है, वह अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। कार्यक्रम का सफल संचालन टंकारा समाचार के सुविख्यात सम्पादक श्री अजय संहगल ने किया। समारोह के अन्त में प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

आर्य समाज पिपलिया मण्डी गौरवान्वित

आर्य समाज पिपलिया मण्डी के स्तम्भ पं. सत्येन्द्र जी आर्य को ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट दिल्ली द्वारा १७ सितम्बर २०१७ को आर्य समाज डिफेंस कॉलोनी, दिल्ली में शाल, प्रशस्ति-पत्र के साथ ११ हजार की राशि से सम्मान किया गया।

वैदिक संसार परिवार भी हुआ सम्मानित

वैदिक धर्म साहित्य प्रचार-प्रसार हेतु उल्लेखनीय योगदान हेतु ठाकुर विक्रमसिंह जी द्वारा देशभर से पधारे उच्चकोटी के विद्वानों के मध्य मंच संचालक से माईक लेकर स्वयं के द्वारा वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा के द्वारा किये जा रहे कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा शाल, प्रशस्ति-पत्र के साथ एक लाख रुपए का चेक प्रदान कर सम्मानित किया।

सहधर्मिणी श्रीमती दुर्गा शर्मा को भी किया सम्मानित

वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा की धर्म पत्नी द्वारा सुखदेव शर्मा के कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग करने पर ठाकुर सा. द्वारा शाल, प्रशस्तिपत्र के साथ पांच हजार रुपए का चेक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

सम्पादक गजेश शास्त्री भी हुए सम्मानित

वैदिक संसार के सम्पादक गजेश जी शास्त्री को भी शाल-प्रशस्तिपत्र के साथ पांच हजार रुपए का चेक ठाकुर सा. के द्वारा प्रदान किया गया। उनकी अनुपस्थिति में उनके बड़े भाई निलेश शर्मा ने सम्मान गृहण किया।

कार्यालय प्रभारी कु. भाग्यश्री भी सम्मानित हुई

वैदिक संसार के कार्यालयीन कार्यों के दायित्व के कुशलतापूर्वक निर्वहन के लिए कु. भाग्यश्री शर्मा को ठाकुर सा. द्वारा शाल, प्रशस्ति पत्र के साथ ५ हजार रुपए का चेक प्रदान कर सम्मानित किया गया। आपकी अनुपस्थिति में आपकी बड़ी बहन श्रीमती जयश्री शर्मा ने सम्मान गृहण किया।

उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

ईश्वर की महती कृपा से दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड़ द्वारा दिनांक १९ से २४ सितम्बर २०१७ तक उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में भारत के विभिन्न (१०) प्रान्तों के ५० शिविरार्थियों ने तथा अनेक श्रोताओं ने भाग लिया।

शिविर में यम-नियम आदि अष्टांग योग का आदर्श रूप से आचरण, आत्मनिरीक्षण, विभिन्न दर्शन शास्त्रों के साधना के लिए महत्वपूर्ण सूत्र तथा शंका समाधान की कक्षाओं के मार्गदर्शन तथा यज्ञोपरान्त वेदमन्त्र व्याख्यान **शिविराध्यक्ष पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक** द्वारा किया गया। विशेष ध्यानाभ्यास स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक ने सम्पन्न कराया, विवेक वैराग्य अभ्यास के विषय को आचार्य ईश्वरानन्द जी ने रौचक शैली में प्रस्तुत किया गम्भीर निदिध्यासन के सिद्धान्त और विधि आचार्य दिनेश कुमार जी ने बतलाई। आचार्य प्रियेश जी ने शिविर के व्यवस्था संचालन में विशेष सहयोग प्रदान किया। आसन-व्यायाम प्रशिक्षण पिंजौर के श्री वीरेन्द्र

जी तथा दिल्ली के माता विमल जी ने दिया।

शिविर का समापन दिनांक २४ सितम्बर को प्रातः ९ से १२ के सत्र में चला, जिसमें शिविरार्थियों ने अपने अनुभव व उपलब्धियां सुनाई। पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक एवं पूज्य आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी के भी प्रेरक उद्‌बोधन हुए। शिविराध्यक्ष स्वामी विवेकानन्द जी ने उत्तम प्रेरणा दी। होशंगाबाद गुरूकुल से स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक, आर्यवन आर्ष कन्या गुरूकुल की आचार्या शीतल जी तथा वानप्रस्थ साधक आश्रम से आचार्य शक्तिनन्दन जी का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

शिविरार्थियों ने अपने जीवन में सद्‌गुणों को धारण करने एवं दोषों को छोड़ने सम्बन्धी अनेक व्रत धारण किए तथा भविष्य में स्वयं सेवक के रूप में विद्यालय की गतिविधियों को आगे बढ़ाने हेतु संकल्प लिया। शिविर काल में कक्षाओं को छोड़कर पूर्णकालिक मौन का नियम था इस नियम का पालन शिविरार्थियों ने यथा सामर्थ्य किया।

इस अवसर पर **पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक के करकमलों द्वारा 'सत्य सिद्धान्त' नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक के लेखक आचार्य धर्मवीर जी 'मुमुक्षु' है।**

शिविर को सफल बनाने हेतु दर्शन योग महाविद्यालय के अध्यापक, ब्रह्मचारी व कार्यकर्ता तथा अनेक स्थानों से आये सहयोगियों ने सराहनीय योगदान दिया। आर्यवन विकास फॉर्म ट्रस्ट की ओर से आवास, भोजन आदि में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

स्वामी सत्यपति जी के प्रेरक उद्‌बोधन के महत्वपूर्ण अंश-ईश्वर और हमारे अनेक सम्बन्ध हैं जिसमें व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध महत्वपूर्ण है, उसे व्यवहार में लाये। ईश्वर जैसे गुण स्वयं में धारण करना यह उपासना है। मोक्ष और ईश्वर एक ही है। प्रसन्नचित्त व्यक्ति का ही योग सिद्ध होता है, अप्रसन्नचित्त का नहीं। व्यवहार में सदा सार्वभौम रूप से यम नियमों का पालन करें। ध्यान, संध्या हेतु नियमित सुबह-शाम एक-एक घंटा लगाये। जो पदार्थ के स्वरूप को ठीक-ठीक जमा देवें वह सत्य विद्या है ऐसी सारी सत्य विद्याओं का तथा सारे पदार्थ हमारे शरीर, सोना, चांदी आदि इन विद्याओं से जाने जाते हैं इन सबका आदि मूल परमेश्वर है। इनको अपना मानना अनुचित है।

श्री कृष्ण जन्मोत्सव तथा स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया

आर्य समाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) में दिनांक १५ अगस्त २०१७ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व और स्वतन्त्रता दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। यजमान निशकुमार सपत्नीक थे। यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज के प्रधान आदित्यप्रकाश जी गुप्त ने कहा कि आज से लगभग बावन सौ वर्ष पूर्व भाद्रपद अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में भारत के शूरसैन देश की राजधानी मथुरा में श्रीकृष्ण जी का जन्म हुआ। बचपन से ही श्रीकृष्ण जी के अनुपम बलवान होने का प्रमाण उनके द्वारा अनेक दुष्टों, आतताइयों के विनाश से मिलता है। उज्जैन नगरी में सान्दीपनि गुरु के आश्रम में यज्ञोपवित संस्कार कराकर गुरूकुल में शिक्षाग्रहण की। अपने गुरुकुल के साथी सुदामा जी को ऊंच-नीच का भेद न रखते हुए मित्र बनाया और आप सभी परिचित है। यह मित्रता उन्होंने कितनी सुन्दरता से निभाई। महाभारत का युद्ध रोकने के लिए उन्होंने दुर्योधन को बहुत समझाया, परन्तु दुर्योधन किसी भी प्रकार से नहीं माना। युद्ध का निश्चय हो जाने पर अर्जुन को मोह होने पर गीता का ज्ञान देकर अर्जुन को समझाया। महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है उनका गुणकर्म, स्वभाव आप्त पुरुषों के सदृश है जिसमें कोई भी अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी जन्म से मरण पर्यन्त किया हो ऐसा नहीं लिखा। अन्त में प्रधानजी ने कहा कि लाखों लोगों के बड़े-बड़े संघर्ष और बलिदानों से हमने लम्बे वर्षों तक अथाह बलिदानों से प्राप्त स्वतन्त्रता का सुरक्षित रखना सभी भारतीयों का कर्तव्य है। प्रकाशचन्द जी आर्य और अमित आर्य ने बड़े ही सारगर्भित भजन सुनाये।

वैदिक ज्ञानवर्धिनी प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य समाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) और वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास के संयुक्त तत्वावधान में वैदिक संस्कृति ज्ञानवर्धिनी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आर्य समाज खेड़ाअफगान, ब्राइट फ्यूचर इन्टर कॉलेज हरपाल, स्वामी केलानाथ कन्या इन्टर कॉलेज फन्दपुरी, ज्ञानदीप इन्टर कॉलेज दैधनोर, अजीतसिंह सरस्वती विद्या इन्टर कॉलेज अम्बैहटा, विजय पथिक इन्टर कॉलेज ढकदेवी, रवीन्द्रनाथ टैगोर विद्या पीठ इन्टर कॉलेज नकुड़, आर्य कन्या इन्टर कॉलेज गंगोह, महन्त जगन्नाथदास इन्टर कॉलेज बान्दुखेड़ी, गुरुकुल शादपुर यमुना नगर सहित दस केन्द्रों पर लगभग एक हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान आदित्यप्रकाश जी ने बताया कि भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी गौरवमयी संस्कृति रही। इस आर्यावर्त्त देश से ही सदा से सारे विश्व में वैदिक संस्कृति पहुंची। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य भारत (आर्यावर्त्त को विश्व गुरु बनाना है। ताकि आज की भटकी युवा पीढ़ी में देश के खोये स्वाभिमान, संस्कृति पुनः स्थापित कर सके। इस प्रतियोगिता का परिणाम एवं पारितोषित वितरण समारोह ११ नवंबर २०१७ को होगा। इस अवसर पर कंवरपाल सिंह आर्य, मनोज कुमार आर्य, श्रवण कुमार, संजय कुमार, शिवम कुमार, वेदभूषण, सत्यप्रकाश, संजय कुमार, रणवीर, चन्द्रशेखर मित्तल, निशकुमार, बिरमसिंह, राजपाल, जशवीर, श्यामलाल आर्य, ओमपाल, गोवर्धनसिंह, सोनू, बृजेश कुमार, राजेश कुमार आर्य, बृजेश कुमार, विनय कुमार, चरणसिंह, संजय टोली, श्रीराम आर्य, निशान्त आर्य, वेदांशकुमार, प्रकाशचन्द, ब्रह्मसिंह, जितेन्द्र कुमार आदि का विशेष सहयोग रहा। अन्त में ऋषि लंगर (भोजन) किया गया।

आर्य समाज, फतेहपुर शेखावाटी का मासिक सत्संग सम्पन्न

फतेहपुर शेखावाटी। महान् समाज सुधारक, प्रखर राष्ट्रवादी एवं शास्त्रों के सूर्य स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मुंबई में सन १८७५ में धर्म प्रचारक संस्था आर्य समाज का गठन किया था। आज इस संस्था की भारतभर में लाखों संस्थाएं काम कर रही है। फतेहपुर शेखावाटी में १८ अक्टूबर १९४३ को पं. हरिकेश दत्त शास्त्री ने आर्य समाज की शाखा स्थापित की थी। आज ७४ वर्षों के बाद भी यह संस्था फतेहपुर में विधिवत संचालित है। इस संस्था सभी कार्यकर्ता प्रतिमाह प्रथम रविवार को जांगिड वैदिक विद्यालय की यज्ञशाला पर उपस्थित होते हैं तथा यज्ञ एवं सत्संग करते हैं। सितम्बर २०१७ के प्रथम रविवार को प्रातः ८ बजे से १० बजे तक निम्नांकित

कार्यकर्ताओं ने पहुंचकर यज्ञ किया। इनमें श्री सांवरमल जांगिड से.नि. सहायक लेखाधिकारी, आचार्य रामगोपाल शास्त्री, प्राचार्य चमड़िया संस्कृत कॉलेज, श्री रजनीकान्त शर्मा से.नि. प्रधानाचार्य, राजकीय सेवा, श्री सतीश शाडिल्य, अहिंसा प्रशिक्षक, अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र, फतेहपुर, श्रीमदनलाल जांगिड, विश्वकर्मा बस बॉडी बिल्डर्स, श्री कमलकुमार जांगिड, विश्वकर्मा बिस्किट बेकरी। श्री सतीश शांडिल्य ने सुझाव दिया कि आर्य समाज के ७५ वर्षों की विवरणिका/स्मारिका प्रकाशित की जाये। श्री रजनीकान्त शर्मा ने सुझाव दिया कि आर्य समाज का भूमि क्रय कर भवन बनवाया जाये तथा संस्था को रजिस्ट्रार संस्थाएं, सीकर से पंजीकरण करवाया जाये। मन्त्री आचार्य रामगोपाल शास्त्री ने बताया कि आर्य समाज फतेहपुर का पंजीकरण आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर राजस्थान में तो है, रजिस्ट्रार संस्थाएं राजस्थान के अन्तर्गत नहीं।

वेदप्रकाश जी शर्मा द्वारा वैदिक धर्म प्रचारार्थ ५१ हजार का सात्विक दान

आर्य समाज वैशाली नगर जयपुर (राज.) में श्रावणी पर्व पर आयोजित वेद प्रचार सप्ताह में आयोजित अथर्ववेद पारायण यज्ञ में श्रीमान वेद प्रकाश जी आर्य निवासी-भगवतगढ़ जिला-सवाई माधौपुर (वर्तमान निवासी-जयपुर-जोधपुर) ने अपने सुपुत्र स्व. आर्यवीर पुष्पेन्द्र शर्मा की तृतीय पुण्य स्मृति में सार्वदेशिक आर्यवीर दल शाखा जयपुर को वैदिक धर्म प्रचार प्रसार वाहन हेतु ५१ हजार रुपए का दान प्रदान किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री अशोक जी शर्मा डी.ए.वी. जयपुर, आचार्य श्री रामपाल जी विद्याभास्कर व आर्य समाज वैशाली नगर के प्रधान श्री मोतीलाल जी शर्मा द्वारा वेद प्रकाश जी का स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। वेद प्रकाश जी ने बताया कि मैं आभारी हूं श्री देवेन्द्र जी शास्त्री अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्यवीर दल व श्री दीपक श्री शास्त्री जी का जिन्होंने मुझे इस पुण्य कार्य को करने के लिए प्रोत्साहित किया।

जिला आर्य महासम्मेलन-२०१७ सम्पन्न

सराहनपुर। जिला आर्य महासम्मेलन एवं विशाल शोभायात्रा कार्यक्रम ९ सितम्बर २०१७ को प्रातः यज्ञ हवन के साथ प्रातः प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम ध्वजारोहण आचार्य स्वदेश आर्य अधिष्ठाता गुरुकुल वृंदावन ने किया और ध्वजगान के पश्चात् शोभायात्रा के मुख्य अतिथि प्रदेश सभा के प्रधान डॉ. धीरज सिंह रहे। विशाल शोभायात्रा का भव्य संचालन सर्वश्री आचार्य प्रियव्रत शास्त्री, मा. कोमल सिंह, डॉ. देवीसिंह आर्य, अनुराग आर्य, अनिल आर्य, अवनीश आर्य, नसीब सिंह वर्मा, आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री, विकास आर्य, देवेन्द्र आर्य, डॉ. भूपचन्द आर्य, विनोद आर्य, शिवकुमार शास्त्री, निर्मला आर्य, सुभाष रोहिला, शैली आर्या आदि के कुशल नेतृत्व में किया गया। शोभायात्रा में विभिन्न प्रान्तों- दिल्ली, चण्डीगढ़, हरियाणा, उत्तराखण्ड तथा उत्तरप्रदेश के कई जनपदों- शामली, मुजफ्फरनगर, मेरठ सहित सहारनपुर जनपद के हजारों आर्यजन सम्मिलित हुए।

लगभग ५ हजार आर्यजनों का यह जनसमूह बिना किसी बाधा व किसी को परेशान किए शान्तिपूर्ण ढंग से ऋषि देव दयानन्द के अनुशासित व सभ्य सिपाही होने का परिचय दे रहा था। सहारनपुर का पुलिस प्रशासन भी आर्यजनों की इस व्यवस्था की प्रशंसा किए बिना न रह सका।

शोभायात्रा के पश्चात् दोपहर भोज के बाद ३ बजे पहला सत्र प्रारम्भ हुआ। पहला सत्र **'आर्य समाज की विश्व को देन'** में मुख्य वक्ता आचार्य स्वदेश आर्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्य समाज ने सबसे पहले **'बेटी पढ़ाओ, बेची बचाओ'** अभियान को स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा शुरु किया था और देश की आजादी में आर्य वीरों ने प्रमुख भूमिका निभाई व स्वतन्त्रता संग्राम में ८५ प्रतिशत क्रान्तिकारी आर्य समाज ने ही दिए। महर्षि स्वामी दयानन्द ने दलितोद्धार, वेदोद्धार और अन्य बहुत से कल्याणकारी कार्य किए। आचार्य जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने लगभग ६ लाख लोगों को पुनः सनातन धर्म के साथ ही नहीं जोड़ा, बल्कि समाज में फैली कुरीतियों और पाखण्ड को दूर करने का भी कार्य किया और आज भी आर्य समाज की प्रासंगिकता एवं उत्तरदायित्व कम नहीं हुआ है।

आर्य समाज वडोदरा द्वारा ३२५ आम के पौधे का वितरण किया गया

आर्य समाज वडोदरा द्वारा पंचमहल जिले जिले के ईश्वरीया गांव में आम के पौधों का वितरण २ सितम्बर २०१७ को किया गया। मेहमानों का स्वागत गांव में सरकारी होस्टेल की बच्चियों ने स्वागत गीत गाकर किया। बाद में गांव में भूतपूर्व सरपंच ने आर्य समाज की ऐसी जनहित, लोक जागृति और लोकोपयोगी कार्यों की सराहना की। उसके बाद हवन, यज्ञ, भजन, प्रवचन का दौर चला, जिसमें लीला बहन ने हवन, यज्ञ की उपयोगिता, लाभ, अनिवार्यता के विषय में लोगों को बताया गया। भरतभाई ने यह आम के पौधे क्यों दिए जा रहे हैं, उनकी जानकारी देकर कहां हमें चोरी करने से परहेज करना चाहिए। समाज में शिक्षण का महत्व स्वीकार करते हुए बच्चों को पढ़ाना चाहिए और दूसरी सामाजिक बुराइयों छोड़ने की बात कहीं।

श्रुति बहन ने होस्टेल की बच्चियों द्वारा महर्षि दयानन्द के जीवन आधारित एक बढ़िया-सा नाटक प्रस्तुत किया। अंत में शांति पाठ और आम के पौधों का वितरण कर कार्यक्रम समाप्त किया। गांववालों ने उनमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और कार्यक्रम को सराहा।

आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली में वेद कथा सम्पन्न

आर्य समाज शकरपुर दिल्ली के सभागार में दिनांक १२ अगस्त २०१७ से १५ अगस्त तक वेद कथा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर देवयज्ञ प्रतिदिन किया गया, जिसके ब्रह्मा श्री विजय प्रकाश शास्त्री थे। यज्ञ में यजुर्वेद के विशेष मन्त्रों से आहुतियां दी गई। यज्ञ में सैकड़ों व्यक्तियों ने श्रद्धा से धर्म लाभ उठाया।

इस समारोह को आर्य जगत् के प्रख्यात कवि पंडित नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य बहीन (पलवल) ने अपने व्याख्यान में भजनों द्वारा योगिराज श्रीकृष्णचन्द्र को वैदिक मर्यादा का सच्चा रक्षक बताया। उन्होंने अपने प्रवचन में कहा कि श्रीकृष्णचन्द्र के जीवन का लक्ष्य था धर्मात्माओं की रक्षा तथा पापियों का खात्मा। वे महान् योगी के साथ महान् ईश्वर भक्त त्यागी तपस्वी महाबलवान तथा निर्बल निर्धनों के हित चिन्तक थे। उन्होंने अभिमानी अन्यायी कंस, जरासंघ, शिशुपाल जैसे अत्याचारियों का खात्मा किया तथा सीधे सच्चे पांडवों का पूरी तरह साथ दिया।

आज हम सबको अपने जीवन में योगिराज कृष्णचन्द्र के सद्गुणों को धारण करके अपना जीवन सफल करना चाहिए। अगर भारत के नेता उनके बताए वैदिक पथ पर चलने लगे तो यह प्यारा महान् भारत पुनः संसार का गुरु बन जाएगा। इस समारोह में श्री ओमवीर शास्त्री दिल्ली तथा श्री भूदेव शास्त्री दिल्ली ने भी वैदिक सिद्धान्तों पर अपने विचारों से श्रोताओं को धर्मलाभ प्रदान किया। इस उत्सव को सफल बनाने में श्री मिश्रीलाल गुप्ता, श्री राकेश शर्मा, श्री प्रभुदयाल सचदेव, श्री ओमप्रकाश रोहिल, श्री ईश्वरचन्द त्यागी, श्री मनोहरलाल छाबड़ा, श्री महेन्द्रपाल सचदेव, श्री वेदप्रकाश वानप्रस्थी, डॉ. ध्रुव देव, श्री नन्दकुमार वर्मा, श्री सुभाष कोहली, श्रीमती दयावन्ती सचदेव, श्रीमती शान्तिदेवी सैनी, श्री सोमदत्त आर्य, श्री शालीन शर्मा आदि आर्यजनों का विशेष योगदान रहा। अन्त में शान्तिपाठ एवं प्रसाद वितरण के पश्चात समारोह का समापन किया गया।

वेद प्रचार एवं श्रावणी पर्व समारोह सम्पन्न

आर्य स्त्री समाज मन्दिर (बहावलपुर) राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के तत्वावधान में षट् दिवसीय वेद प्रचार समारोह उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस समारोह के मुख्य वक्ता आर्य जगत् के प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि श्रवण सुनने को कहते हैं और श्रावण सुनाने को। संसार की सम्पूर्ण समस्याओं का एक ही समाधान है-वेदाचार एवं वेद प्रचार। आचार्य श्री ने वेदमन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि हे मनुष्य! **'मनुर्भव'** मनुष्य बन, मनुष्य बनने पर तो सारा संसार तेरा परिवार होगा। संसार का ताना-बाना बुनता हुआ भी तू प्रकाश का अनुसरण कर। ज्ञान का लाभ तभी है जब वह अपने आचरण का अंग बन जाये, क्योंकि जानना, जानने के लिए नहीं अपितु कुछ करने के लिए हैं। समापन दिवस पर आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी द्वारा लिखित **'सफल जीवन के मूल मंत्र'** नामक पुस्तक का निःशुल्क वितरण किया गया। समाज मंत्राणी श्रीमती जनक चुघ जी एवं आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने सभी का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद किया। आर्य समाज राजेन्द्र नगर के मन्त्री श्री नरेन्द्र वलेचा ने सभी विद्वानों का पीत वस्त्र से स्वागत किया। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य अनिल शास्त्री जी एवं श्रीमती अमृत आर्या जी ने सुन्दर भजनों की प्रस्तुति दी।

कर्मयोग के व्यावहारिक व्याख्याता श्री कृष्ण थे-आचार्य चन्द्रशेखर

आर्य महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के तत्वावधान में स्वतन्त्रता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह के मुख्य वक्ता अध्यात्म-पथ के सम्पादक आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने खचाखच भरे भव्य सभागार में आर्य नर-नारियों को संबोधित करते हुए कहा कि विषाद से प्रसाद की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर, कायरता से वीरता की ओर, पलायन से पुरुषार्थ की ओर, अर्जुन को माध्यम बना योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गीता का सन्देश दिया। योगेश्वर श्रीकृष्ण विभूतियों की विभूति हैं। वेद शास्त्र पारंगत, सर्वगुणागार, लोकनायक योगिराज श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व में संकल्प शीलता थी, धैर्यशीलता इस सीमा तक थी कि पर्वत के समान विशाल और गंभीर चुनौती को भी वे निरस्त करने में सक्षम थे। आचार्य देवेश प्रकाश जी ने देशभक्ति पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बम्बानी जी ने ध्वजारोहण किया। ४१ रोटरी क्लब के सदस्यों ने सभी माताओं को शाल ओढाकर उनका अभिनन्दन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन आश्रम प्रधाना श्रीमती आदर्श सहगल ने किया। शान्ति पाठ के उपरान्त प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

वेद प्रचार सप्ताह एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

दिनांक २० से २४ सितम्बर २०१७ तक पूर्वीय मण्डल आर्य समाज, जनता कालोनी आदर्श नगर थाने के सामने जयपुर (राज.) द्वारा श्री विश्वम्भरदयाल पटेल (संरक्षक) श्री ब्रह्मप्रकाश जी गुप्ता (प्रधान), श्रीमती अरुणा सतीजा (मन्त्री), श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता (कार्यकारी मन्त्री), सतीश जी गुप्ता (उपप्रधान), पं. देवव्रत जी शास्त्री (पुरोहित) तथा अन्य पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों व सहयोगियों के सहयोग से वेद प्रचार सप्ताह तथा आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री, सहारनपुर (उ.प्र.) के ब्रह्मत्व में तथा श्रीमती श्रुति शास्त्री व सुश्री रमा शास्त्री के वेद पाठ द्वारा यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया।

आयोजन में आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री के प्रेरक प्रवचन तथा बिजनौर से पधारे सुविख्यात भजनोपदेशक दिनेश दत्त जी के भजन उपदेश व श्रीमती श्रुति शास्त्री के मधुर भजनों तथा दैनिक भास्कर के प्रबन्ध सम्पादक जगदीश जी शर्मा के व्याख्यान का लाभ उपस्थितों ने प्राप्त किया।

इस अवसर पर वैदिक विरांगना दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनामिका शर्मा, श्री सतीश जी मित्तल मानसरोवर सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे।

वैदिक संसार इंदौर द्वारा वैदिक साहित्य की विशाल प्रदर्शनी विक्रयार्थ लगाई गई। अतिथियों के भोजन-आवास की सुन्दर व्यवस्था के साथ अन्तिम दिवस ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

सामवेद पारायण यज्ञ एवं वैदिक सत्संग सम्पन्न

आर्य समाज निम्बी जोधान्, तह-लाडनू, जिला-नागौर (राज.) में प्रथम बार, जिला प्रधान कृष्णरामजी आर्य के संयोजन तथा टमकोर वाले शिवकुमार जी अग्रवाल के विशेष सहयोग से दिनांक ४ से ६ अक्टूबर २०१७ तक **आर्य जगत् के उद्‌भट्टविद्वान, आचार्य सोमदेव जी आर्य, ऋषि उद्यान अजमेर** के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ तथा आचार्य जी के सारगर्भित प्रवचनों के साथ हरियाणा करनाल से पधारी **आर्य जगत् की सुविख्यात भजनोंपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या** के भजन-उपदेश के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। आर्य समाज निम्बी जोधान् के प्रधान नानूरामजी ढाका तथा युवा वृद्ध मन्त्री ओमदास जी द्वारा सहयोगियों के सहयोग से आयोजन की सुचारू व्यवस्था की गई। श्री शिवकुमार जी अग्रवाल टमकोर वालों जिनका व्यवसाय दिल्ली से नेपाल तक फैला हुआ है कि यज्ञ के प्रति श्रद्धा देखते ही बनते थी आप सपत्निक पूरे समय उपस्थित रहे तथा खुले हाथों आर्थिक सहयोग किया। इस अवसर पर वैदिक संसार इंदौर द्वारा वैदिक साहित्य की विशाल प्रदर्शनी विक्रयार्थ लगाई गई तथा वेद प्रचार वाहन द्वारा ग्राम में ध्वनी विस्तारक यन्त्र से प्रचार किया गया। चार यज्ञ वेदियों पर पर्याप्त मात्रा में गोघृत तथा उच्च कोटी की हवन सामग्री से सम्पन्न, सम्पूर्ण सामवेद पारायण यज्ञ के सपत्निक यजमान बनने का सौभाग्य परमपिता परमात्मा की महति कृपा से वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा को प्राप्त हुआ। ●

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

दिनांक २१ जुलाई से २० अक्टूबर २०१७ तक

वैदिक संसार के संरक्षक, सम्माननीय प्रतिनिधि आचार्य सर्वेश जी सिद्धान्ताचार्यः दिनांक २७ अप्रैल २००६ को मध्यप्रदेश के खण्डवा (पूर्वी निमाड़) जिले के सुदूर अंचल ग्राम केहलारी के समीपस्थ वेदयोग महाविद्यालय (आवासीय गुरुकुल) की स्थापना तथा संचालन करने वाले आचार्य जी का जन्म ग्राम बढ़िन, जनपद- औरैया, उत्तरप्रदेश में हुआ। आपने महर्षि दयाननन्द सरस्वती जन्म स्थान टंकारा के उपदेशक महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य आचार्य विद्यादेवजी के चरणों में बैठकर विर्द्याजन की। आचार्य विद्यादेवजी के आशीर्वाद तथा संरक्षकता में आप गुरुकुल का संचालन तथा वैदिक धर्म की अनुपम सेवा कर रहे हैं।

आपने गुरुकुल स्थापना के पूर्व महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्ष महाविद्यालय होशंगाबाद में भी अपनी सेवाएं प्रदान की।

श्रीमती यमुना (गीता) आर्या, निवासी-लातूर, महाराष्ट्र से विवाह उपरान्त आपने गृहस्थ में प्रवेश किया, आपकी एक सुपुत्री कु. श्रुति आर्या है। आपकी सहधर्मिणी का गुरुकुल के संचालन तथा ब्रह्मचारियों के अध्यापन में असीम सहयोग प्राप्त होता है।

आपने आयुर्वेदाचार्य भी किया है, जिसका उपयोग आप मानव जाति के शारीरिक आरोग्यता हेतु आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण कर करते हैं। आचार्य जी सहज, सरल, समर्पित, सेवाभावी, श्रमशील, मिलनसारिता के गुणों से धनी व्यक्ति हैं, इन्हीं गुणों के बूते पर आपने बंजर भूमि में स्थापित गुरुकुल को हरा-भरा कर दिया है। प्रारम्भिक अवस्था में गुरुकुल को प्राकृतिक आपदा का सामना भी करना पड़ा, जिसमें एक विद्यार्थी की मृत्यु भी हो गई थी, किन्तु आचार्य जी के साहस-परिश्रम से शनैः शनैः गुरुकुल प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है। गत वर्ष १२-१४ नवम्बर तक गुरुकुल के १० वर्ष पूर्ण होने पर गुरुकुल एक भव्य आयोजन कर चुका है।

जबसे आचार्य जी वैदिक संसार के सम्पर्क में आए हैं, तभी से वैदिक संसार के प्रति आपका गहन स्नेह है आप प्रतिवर्ष लगभग २५-३०से अधिक सदस्य स्थान-स्थान पर अपनी प्रेरणा से बनवाकर जन-जन तक वैदिक संसार को पहुंचाने का प्रयास कर सहयोग करते आ रहे हैं।

आपके बनाए हुए सदस्यों के विषयात्मक परिचय आपके परिचय के साथ मार्च २०१५, सितम्बर २०१५ तथा सितम्बर २०१६ के अंकों में पूर्व में भी प्रकाशित किया जा चुका है। आपने वैदिक संसार की संरक्षक सदस्य योजना में सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर प्रतिवर्ष वैदिक संसार को ५१००/- का सहयोग करने का व्रत (संकल्प) व्यक्त किया है। वैदिक संसार परिवार आपका हार्दिक आभारी है। आपका सम्पर्क चलभाष क्रमांक.- ९१६५१६८१५८ तथा ९१७९१८३८३३ है। आपकी प्रेरणा से बने वर्तमान वार्षिक सदस्य निम्न हैं-

मध्यप्रदेश, जिला- खण्डवाः श्री नरेन्द्रसिंह सोलंकी-केहलारी, डॉ. दिलीप हिन्दुजा-खण्डवा, श्रीमान थाना प्रभारी महोदय- पुलिस थाना जावर, श्रीमान थाना प्रभारी महोदय- पुलिस थाना मून्दी, श्री राजेन्द्र सिंह जी मौर्य- खण्डवा, श्री ओमप्रकाश जी राठौर- खण्डवा, श्री पी.सी. राठौर- खण्डवा, श्री नरेन्द्र जी / गोपाल जी तोमर- केहलारी, श्री राजेश जी जायसवाल सरपंच सा.-केहलारी, तेजसिंह मोटर ट्रेनिंग स्कूल-खण्डवा, श्री देवेन्द्र जी वर्मा विधायक महोदय-खण्डवा, श्री रामपालसिंह जी सोलंकी (पूर्व सरपंच सा.)-केहलारी, डॉ. पियूष जी-मूंदी, श्री सुभाष जी कोठारी महापौर-खण्डवा, श्री रामजी परिहार, पूर्व प्राचार्य-एस.एन. कालेज खण्डवा, श्रीमती सुनिता सिंह जी चौहान-शा. स्कूल जावर, श्री हरिओम यादव-राजगढ़ रैय्यत।

जिला- शाजापुरः श्री सुरेश रामचन्द्र जी आर्य- करजू।

जिला-बुरहानपुरः डॉ. मालती प्रजापति आर्या-बहादरपुर (आई.टी. आई.)

जिला- मन्दसौरः श्री भैरूलाल जवरचन्द्र सूर्यवंशी-लखमाखेड़ी।

उत्तरप्रदेश, जिला- अलीगढ़ः स्वामी सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय-साधु आश्रम।

महाराष्ट्र, जिला- अकोलाः श्री प्रधान/मन्त्री जी- आर्य समाज अकोला।

दिल्ली- श्री वेद प्रकाश जी नारंग- गोविन्दपुरी (कालकाजी)।

तेलंगाना, जिला- आदिलाबादः श्री अनिलचन्द्र आर्य- ईसगांव कैम्प नं.-५२।

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि पं. नानालालजी शर्माः ग्राम- देहरी, तह.-दलौदा जिला- मन्दसौर के अम्बा औदिच्य ब्राह्मण कुल के पं. गिरधारीलाल जी शर्मा के यहां जन्म लेने वाले पं. नानालालजी शर्मा का पैतृक रूप से कृषि व्यवसाय होकर अत्यन्त सरल, सहज, सेवाभावी, मिलनसार आदि गुणों से धनी व्यक्ति हैं। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रचारक पं. हीरालालजी आर्य तथा धर्म पत्नी श्रीमती शान्तिदेवी आर्या मालवा क्षेत्र के सुविख्यात भजनोपदेशक हैं, शाजापुर जिले के बेरछा निवासी आप दोनों पति-पत्नी ने जीवन पर्यन्त गांव-गांव घूमकर आर्य समाज का व्यापक प्रचार-प्रसार किया है तथा आपके प्रेरणा से अनेकों परिवारों ने वैदिक धर्म सिद्धान्तों से को आत्मसात किया है।

पं. नानालालजी की धर्मपत्नी श्रीमती राजकुंवरदेवी शर्मा जिन्हें सभी सम्मान से राजमाता कहते थे के ऊपर पं. हीरालाल जी एवं उनकी धर्म पत्नी के उपदेशों का गहन प्रभाव पड़ा और उनकी प्रेरणा से पण्डित नानालालजी भी वैदिक धर्म सिद्धान्तनिष्ठ महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी बन गए। आपकी धर्मपत्नी की प्रेरणा से वर्ष १९८५ से ग्राम देहरी के क्षेत्र में आर्य समाज का व्यापक प्रचार-प्रसार होने लगा तथा विधिवत् रूप से २००१ में महर्षि आर्य समाज देहरी की स्थापना की गई।

७ अक्टूबर २००७ को ५८ वर्ष की आयु में धर्मपरायणा राजमाता जी का देहवासान हो गया, धर्म पत्नी के देहावसान के पश्चात् पं. नानालाल जी ने पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ-साथ वैदिक धर्म प्रचार-प्रसाद तथा समाजसेवा को जीवन समर्पित किया है। समय-समय पर नाक, कान, गला, आंख आदि के परीक्षण शिविर आयोजित करना, रोगियों के उपचार की व्यवस्था करना, वृद्धों आदि का सम्मान करना आदि गतिविधियों में आप लगे रहते हैं। पुत्र-पुत्रियों, पौत्र-पौत्रियों को आपने वीरासत में वैदिक

धर्म के सिद्धान्त दिये हैं। आपका सुपौत्र सत्यपाल शर्मा संगीत शिक्षक, भजनोपदेशक तथा पुरोहित के रूप में आर्य जगत् की सेवा कर रहा है। स्वामी ओमानन्द सरस्वती चन्दूखेड़ी, पं. हीरालालजी बेरछा, श्री भारतेन्द्र जी आर्य, खरसौद कलां, जगदीश जी शर्मा पहूंना, पं. सत्येन्द्र जी पिपलिया मण्डी, आदि अनेक महानुभावों से आपकी घनिष्ठता है। एक बार जो आपके सम्पर्क में आता है, आप उसके हो जाते हैं। यह आपकी सरलता-सहृदयता का प्रमाण है।

आप जबसे वैदिक संसार के सम्पर्क में आये तब से वैदिक संसार आपका और आप वैदिक संसार के हो गए हैं। जन-जन को वैदिक संसार से जुड़ने की प्रेरणा देते रहते हैं। जब भी प्रवास पर होते हैं वैदिक संसार की प्रतियां आपके साथ होती हैं। अनेक सदस्यों का भुगतान प्राप्त न होने पर स्वयं वहन कर जाते हैं और पता भी नहीं चलने देते। आपके द्वारा बनाए गए सदस्यों का विवरण आपके परिचय के साथ पूर्व में भी मई २०१५ के अंक में प्रकाशित किया जा चुका है।

आपका सम्पर्क चलभाष- क्र. ९००९८१६८११ है। आपके द्वारा बनाए गए वर्तमान वार्षिक सदस्य निम्न हैं।

मध्यप्रदेश- जिला- मंदसौरः श्री नारायण सिंह रामसिंह जी सिसौदिया- संगवाली (दलौदा), श्री दिलीप धनराज जी पाटीदार-देहरी, (द्विवार्षिक), श्री बालाराम पूनमचन्द जी पाटीदार- देहरी(द्विवार्षिक), श्री राधेश्याम जी शर्मा (मेहता)-रठाना (द्विवार्षिक), श्री गोवर्धनलाल जी कुमावत- सरसौद, श्री रमेशचन्द्र जी पाटीदार- ढलमू (गरोठ), श्री लेखराज हरलालजी शर्मा- लसुड़िया (गरोठ), श्री रामगोपाल उदयराम जी पाटीदार- रठाना, श्री गुन्दीराम भुवान जी पाटीदार- कर्नाखेड़ी (दलौदा), श्री कचरूमलजी डाकोर 'अध्यापक'-देहरी, श्री बालमुकुन्द धूरीलाल जी हठीला- सरसौद, श्री बापूलाल कंवरलाल जी पाटीदार- देहरी, डॉ. कमलेश बंशीलाल जी प्रजापत-गुराड़िया, लालमुंहा, श्री मुकेश रामेश्वर जी पाटीदार 'अध्यापक'-देहरी, श्री देवकरण रामनारायण जी कुलमी 'अध्यापक'-रिछा लालमूंहा, श्रीमती अंगूरबाला दिलीप जी पाटीदार- देहरी, श्रीमान प्रधानाचार्य -सरस्वती शिशु मन्दिर, देहरी।

जिला-नीमचः श्री भंवरसिंह जी सिसौदिया पूर्व सरपंच- बिसलवास कलां।

जिला- रतलामः श्री उमेश दुर्गाशंकर जी शर्मा- जावरा

राजस्थान, जिला- चित्तौड़गढ़ : श्री जगदीश जी द्विवेदी- पहूंना।

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि पं. बंशीलाल जी आर्य : ग्राम- बरखेड़ा पन्थ, तह.-मल्हारगढ़, जिला- मन्दसौर के विश्वकर्मा कुल परिवार में श्री डालूराम जी के यहां जन्में पं. बंशीलाल जी शिक्षक पद से सेवानिवृत्त हैं। आपका जीवन वैदिक धर्म सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित है। आप वेदोक्त विधि से यज्ञ, संस्कार आदि के साथ भजन उपदेश करने में भी दक्ष हैं आप मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के रतलाम संभाग के उपप्रधान पद पर सेवा दे रहे हैं। आपका वैदिक संसार को प्रारम्भ से ही विपुल सहयोग रहा है, आपकी सक्रियता के कारण वैदिक संसार की सदस्यता में मन्दसौर जिला प्रथम पायदान पर सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में हैं। आपके द्वारा बनाए गए सदस्यों का विवरण आपके विस्तृत परिचय के साथ इसके पूर्व जुलाई २०१५ एवं जून २०१६ के अंकों में भी प्रकाशन किया जा चुका है। आपका चलभाष क्रमांक ९८२६७२०१६४ है। आपके बनाए गए वर्तमान वार्षिक सदस्य निम्न हैं

मध्यप्रदेश, जिला-मन्दसौरः श्री रामभजन रतनलालजी पाटीदार-बूढ़ा (द्विवार्षिक), श्रीलखमीचन्द्र भुवानीराम जी पाटीदार(द्विवार्षिक),-सुपड़ा, श्रीघनश्याम रामलाल जी आर्य-कनघट्टी, श्री वल्लभप्रकाश नाथूलालजी आर्य-कनघट्टी, श्री दिलीप कुमार बाबूलाल दी आर्य- कनघट्टी , श्री विनोद बंशीलालजी नागरिया-कनघट्टी,(द्विवार्षिक), श्री राजेश राधेश्याम जी सोनी-कनघट्टी, भूपेन्द्र अम्बालालजी विश्वकर्मार्य, बरखेड़ा पन्थ (द्विवार्षिक), श्री तुलसीराम फकीरचन्द जी आर्य-बूढ़ा (द्विवार्षिक), श्री अरुण कुमार जी पाटीदार- नारायणगढ़, श्री विजयसिंह मूलचन्द जी आर्य-बादरी, श्री चेनराम किशनलाल जी मीठा-बूढ़ा, श्री दशरथलाल उदयरामजी पाटीदार-बूढ़ा, डॉ. मुकेश दिनेश जी पाटीदार-बूढ़ा, श्री गोपाल नानालालजी पाटीदार- नैनोरा, श्री रामेश्वर नारायण जी आर्य- नैनोरा(द्विवार्षिक), श्री प्रकाश शंकरलाल जी पाटीदार-बरखेड़ापन्थ, श्री उदयसिंह कालूसिंह जी चौहान- दौखाड़ा (द्विवार्षिक), श्री विनोद कुमार जगदीश जी मांदलिया-बरखेड़ा पन्थ, श्री अनिल मोहनलाल जी शर्मा- बरखेड़ा पन्थ, श्री श्यामलाल जोगचन्द्र जी-पिपलिया मण्डी, श्री मांगीलाल नानूरामजी लाईनमेन- बरखेड़ापन्थ, आर्य मोहनलाल कचरूमल जी दशोरा- नारायणगढ़, श्री भंवरलाल मांगीलालजी शर्मा- पिपलिया मण्डी, सुश्री प्रियंका मुकेश जी विजय-अमरपुरा, कु. विजयलक्ष्मी बद्रीलाल जी विजय-नैनोरा, श्री सीताराम चम्पालाल जी-नैनौरा, श्री हंसराज रंगलालजी आर्य-खेड़ा खदान, श्री बापूसिंह नाथूसिंह जी चौहान- दौरवाड़ा, श्री रविन्द्र रामावतार जी शर्मा- मन्दसौर, श्री सुरेश लक्ष्मीनारायण जी पेन्टर- बरखेड़ा पन्थ, चिमनलाल गंगाराम जी पाटीदार-कनघट्टी (त्रिवार्षिक), श्री अजय श्यामलालजी धौराना- पीपलिया मण्डी, श्री रमेशचन्द्र शंकरलालजी पाटीदार- अमरपुरा।

जिला-नीमचः श्री लादूराम प्यारचन्दजी सुतार- धामनधरड़ी (नयागांव), शिक्षक जगन्नाथ जी चौहान- थड़ौली, श्रीमती विद्या हितेश जी कानूर-नीमच, श्री शिवनारायण राधाकिशन जी पाण्डे-चचौर, शिक्षक रामविलास जी कारपेन्टर-भाटखेड़ी।

राजस्थान, जिला- जोधपुरः श्रीमती शान्तिदेवी लक्ष्मीनारायण जी आर्य, सुंथला जोधपुर।

जिला- कोटाः श्री कन्हैयालालजी नेवड़िया- दादावाड़ी कोटा

जिला प्रतापगढ़ः श्री लोकेश कचरूलालजी आर्य- अरनिया।

....

वैदिक संसार के अन्य सहयोगी महानुभाव

संरक्षक सदस्य

श्री नानूराम रूपाराम जी जांगिड़, धुलिया (महाराष्ट्र)

श्रीमती सुमित्रा ओमप्रकाश जी शर्मा, नरोड़ा, अहमदाबाद (गुज.)

स्वैच्छिक अनुदान

मध्यप्रदेश, जिला-इंदौरः श्री सत्यनारायण बिहारीलाल जी शर्मा-वैभवनगर, इंदौर, श्री सीताराम मालीराम जी शर्मा- समाजवादी इन्दिरा नगर, इंदौर।

जिला- नीमचः श्री सुरेश बंशीलालजी शर्मा- नीमच।

राजस्थान- जिला अलवरः श्री मूलचन्द घीसारामजी शर्मा-अलवर।

जिला- जोधपुरः डॉ. खेतलखानी जी 'पूर्व महापौर' जोधपुर।

जिला- जयपुरः श्री तुलसीराम जी शर्मा सेशनजज- महावीर उद्यान

जयपुर।

जिला-सीकर: श्री रमेशचन्द्र घासीरामजी जांगिड,-हरजनपुरा (कॉवट)।

महाराष्ट्र, जिला- धुलिया: श्री प्रकाश प्रभात जी शर्मा- धुलिया, श्री रामस्वरूप रूठमल जी जांगिड शिरपुर।

आजीवन

राजस्थान- जिला-जोधपुर: आर्य समाज महामन्दिर-पावटा सी रोड जोधपुर।

जिला- जयपुर: श्री सतीश हरिचरणलाल जी गुप्ता-मालवीय नगर जयपुर, श्रीमती संध्या डॉ. देवव्रत जी आर्य- मालवीय नगर, जयपुर, श्री कन्हैयालाल मूलचन्द जी जांगिड-बड़ के बालाजी।

जिला- अलवर: श्री बृजेन्द्र देव हेतराम जी आर्य- आर्य नगर अलवर, श्री खेमचन्द प्रभातीलाल जी जांगिड- धौली दूब (खातीवास), श्री अशोक सम्पतरामजी शर्मा- अलवर।

जिला- उदयपुर: श्री भंवरलाल चौखालाल जी भारद्वाज- उदयपुर।

जिला- अजमेर: श्री बृजेश रामेशचन्द्र जी मालू- श्रद्धानन्द बाजार ब्यावरा।

जिला- बाड़मेर: श्री परमजीतसिंह भिखसिंह जी राजपुरोहित- बाड़मेर।

हरियाणा, जिला- रेवाड़ी: श्री भरतलाल रामकुमार जी शर्मा- बावल, श्री लक्ष्मीनारायण भगवतप्रसाद जी आर्य-बावल

महाराष्ट्र, जिला-धुलिया: श्री कालूराम खेमचन्द जी जांगिड- धुलिया।

मध्यप्रदेश, जिला-बड़वानी: श्री प्रद्युम्न कन्हैयालालजी रतावजिया- सेन्धवा

गुजरात, जिला- अहमदाबाद: श्री मगनलाल नागूजी शर्मा- आदिनाथ नगर, ओढ़व, अहमदाबाद।

त्रैवार्षिक

मध्यप्रदेश, जिला-इंदौर: श्री दिनेशचन्द्र मोहनलालजी गुप्ता- मनीषपुरी, इंदौर, श्रीमती आज्ञादेवी अजीतसिंह जी वर्मा-इंदौर, श्री लोकेश पन्नालालजी पाटीदार-मानपुर, श्री लक्ष्मीनारायण परसरामजी राठौर-इंदौर।

जिला-उज्जैन: श्री अरुणकुमार अजयकुमार जी आर्य-उज्जैन।

जिला-धार: श्री विश्वनाथ दयारामजी पटेल- बगड़ीपुरा (सुन्द्रेल), श्री लाखनसिंह सरदारसिंह जी ठाकुर-दिलावरा।

जिला-मन्दसौर: श्री बंशीलाल केशरीमल जी व्यास- सेधरामाता (सीतामऊ)।

जिला-विदिशा: श्री श्रीरामजी आर्य 'व्यथित'-विदिशा।

जिला-शाजापुर: श्री गिरीराज जी मण्डलोई पूर्व विधायक- पोलाय कलां।

जिला-शिवपुरी : पं. योगेश आर्य-शिवपुरी।

जिला-नीमच: श्री मनोज उमाशंकर जी स्वर्णकार- नीमच सिटी।

राजस्थान- जिला-जोधपुर: श्री गणपतसिंह भीतसिंह जी आर्य- मगरा पूजला जोधपुर, शेरसिंह साहिबराम जी गहलोत- मण्डोर, श्री मूलचन्द मोहनलालजी जांगिड- जोधपुर, श्री चम्पालाल मोहनलाल जी आर्य- पीपाड़ सिटी, चेतनप्रकाश देवीदास जी सोलंकी, सूरसागर, जोधपुर।

जिला-प्रतापगढ़: राजमल रामलाल जी साहू- गोमाना, श्री नरेश घीसालालजी पाटीदार- छोटी सादड़ी, श्री ताराचन्द मोड़ीरामजी-खेड़ी आर्यनगर, श्री भैरूलाल जगन्नाथ जी पाटीदार- हड़मतिया, कुण्डाल।

जिला-चुरु: श्री जसवन्तसिंह उदाराम जी ओला- ठाणे मौजी।

जिला-झुन्झनू: श्री वीरेन्द्र रतनसिंह जी शास्त्री-जयसिंहपुरा।

जिला-जयपुर: श्री सीताराम जी शर्मा- जयपुर।

जिला-नागौर: श्री पूर्णदास ओमदास जी स्वामी- लाडनू।

जिला-अलवर: श्री सुरेन्द्र विद्यासागर जी सक्सेना- आर्यनगर अलवर।

जिला- श्री गंगानगर:आचार्य स्वामी, सुखानन्द जी महाराज, वैदिक कन्या गुरुकुल ट्रस्ट फतुही।

जिला- अजमेर: श्री बाबूलाल मंगलारामजी जांगिड- ब्यावर, श्री घनश्यामलाल चतुर्भुज जी करेल- ब्यावर, श्री किशनलाल गिरधारीलाल जी जांगिड- ब्यावर, श्री प्रधान/ मन्त्री जी आर्य समाज-ब्यावर, श्री रणवीरसिंह लच्छीराम जी चौधरी-ब्यावर, श्री रामप्रसाद सुवादास जी वैष्णव- ब्यावर, श्री नरेन्द्रसिंह खेतसिंह जी रावत- ब्यावर, श्री ताराचन्द गोरधनलाल जी जांगिड- ब्यावर, श्री धर्माचन्द नारायण जी शर्मा- ब्यावर, श्री बृजेशसिंह जी चौहान-ब्यावर।

जिला- बाड़मेर: श्री सन्ताराम अबजारामजी कोडेचा- बाड़मेर, श्री हजारीलाल आनारामजी सोलंकी-बाड़मेर, श्री लूणाराम वीजारामजी माली- बाड़मेर, श्री चान्दाराम, गोरधन जी माली- बाड़मेर।

जिला- पाली: श्री गोरधनलाल मिश्रीलाल जी सुथार-बूटीवास।

महाराष्ट्र, जिला- धुलिया: श्री ओमप्रकाश रूढ़मल जी जांगिड़- सिरपुर, श्री धौलाराम रामेश्वर प्रसाद जी- शिरपुर, श्री लोकेश जगदीश प्रसाद जी जांगिड - शिरपुर।

उत्तराखण्ड, जिला- नैनिताल: महाशय सुबोध मुनिजी- स्वामी लीलाशाह आश्रम हनुमान गढ़ी।

हरियाणा, जिला-रेवाड़ी: श्री करतारसिंह बालवीर जी बव्वा।

जिला- महेन्द्रगढ़: श्री बाबूलाल मगतूरामजी आर्य- कौथलखुर्द

झारखण्ड, जिला- सरायकेला: श्री नन्दकिशोर कारूजी जमादार- गेस्ट हाऊस।

छत्तीसगढ़, जिला- बिलासपुर: श्री सुधीर कुमार विक्रमादित्य जी गुप्ता- सदरबाजार-बिलासपुर।

उत्तरप्रदेश, जिला- आगरा: श्री बदनसिंह जी पूर्व विधायक- आगरा।

जिला-बागपत: श्री इन्द्रसिंह जिलेसिंह जी आर्य- बड़ौत।

गुजरात, जिला-भुज (कच्छ): श्री कान्तिलाल हरजीभाई जी आर्य-भुज, महाराव श्री पुस्तकालय (कान्तिबाई भुज के सौजन्य से)- हमीरसर तालाब,भुज।

वार्षिक

मध्यप्रदेश, जिला- इन्दौर: श्री रूपनारायण जगन्नाथ जी मालवीय- इंदौर ०५, श्री राजेशकुमार सत्यवान जी गुप्ता-इंदौर-१८, श्री ओमप्रकाश मांगीलाल जी पाटीदार- महू (छ: पत्रिकाओं का वार्षिक चन्दा आपके द्वारा जमा किया जाकर स्नेहीजनों में वितरण किया जाता है। वैदिक संसार आपका हार्दिक आभार व्यक्त करता है- सम्पादक), श्री मनीराम जी शर्मा- इंदौर-०५, श्री अजय राधेश्याम जी रैनिवाल- इंदौर-०९, कु. सिद्धी सूद, सुपुत्री- श्रीलखवीरजी सूद-इंदौर १६।

जिला-रतलाम: सरस्वती शिशु मन्दिर-सैलाना, श्री संजय बाबूलालजी कसेरा-सैलाना, श्री हरिनारायण पन्नालालजी राव- धामनोद, श्री देवीसिंह

प्रतापसिंह जी सिसौदिया-धामनोद, श्री दिलीप रणछोड़ जी परिहार- सैलाना।

जिला-सिहोरः श्री रमेशचन्द्र भगवानसिंह जी आर्य-मोहाली।

जिला-विदिशाः श्री एस.के. सैनी, सुपुत्र श्री आर.सी. सैनी जी-गंजबासौदा।

जिला- राजगढ़ः श्री रामचन्द्र जी कारपेन्टर- ब्यावरा।

जिला-शाजापुरः आनंदकुमार राजनारायण चौधरी- शाजापुर।

जिला-मण्डलाः आर्य मनीष नामदेव-नैनपुर।

जिला-बुरहानपुरः स्वामी सत्यवृतानन्द जी सरस्वती-बुरहानपुर।

राजस्थान, जिला- अजमेरः दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय-ब्यावर, दयानन्द बाल विद्या मन्दिर-ब्यावर, गोदावरी देवी आर्य कन्या हायर सेकेण्डरी स्कूल- ब्यावर, श्री विष्णुदेव महादेव जी आर्य- ब्यावर, श्री नारायणसिंह पूनमसिंह जी पंवार- ब्यावर, श्री महेशचन्द्र हुक्मीचन्द जी गुप्ता-ब्यावर।

जिला- बांसवाड़ाः श्री भोलाराम शंकरजी मिश्रा- बांसवाड़ा।

जिला-प्रतापगढ़ः श्री देवीलाल भागीरथ जी पाटीदार- गोमाना।

जिला-बाड़मेरः श्री पूनमारामजी जोधाराम जी आर्य- उत्तर तलाई।

जिला-नागौरः श्री त्रिलोकराम रामूराम जी, ग्राम सेवक-धानणवा, श्री नानूराम डाबाराम जी ढाका- निम्बी जोधा।

जिला-अलवरः श्री नीरजकुमार अमरचन्द जी शर्मा- वार्ड नं. १९ खेरली, श्री रामौतार मूलचन्द जी आर्य- रामचन्द्र पुरा, (परतापुर)

जिला- जोधपुरः महर्षि दयानन्द गोशाला- मण्डोर, दादानरपतसिंह जी मोहनपुरा-जोधपुर।

जिला- जयपुरः श्री अरुण रामकुमार जी आर्य- मालवीय नगर, जयपुर।

जिला- भरतपुरः डॉ. वेदप्रकाश गणेशीलालजी आर्य- बयाना।

जिला- झुन्झनूः श्री महावीरसिंह हरचंद रामजी- झारोड़ा (बुहाना)

महाराष्ट्र, जिला-धुलियाःश्री प्रधान/मन्त्री जी आर्य समाज-कुमार नगर धुलिया।

हरियाणा, जिला-महेन्द्रगढ़ः महेन्द्रकुमार सूरजभान जी आर्य-महेन्द्रगढ़, महाशय श्री हीरालाल रामजीलाल जी आर्य- दुलौठ अहिर, सूबेदार सुरेन्द्र सेढ़ूरामजी मिस्त्री- रसूलपुर, श्री महावीर प्रसाद रामस्वरूप जी आर्य- मुण्डिया खेड़ा।

जिला-पलवलः पं. नन्दलाल निर्भय- बहिन, श्री जगदीश जी जांगिड़-बहिन, मास्टर श्रीमसिंह जी जांगिड़-बहिन, श्री केशवदेव जी भारद्वाज 'अधिवक्ता' पलवल।

जिला- रोहतकः डॉ. बलवीर हरकेराम जी शास्त्री- रोहतक।

जिला-फरिदाबादः श्री वीरेन्द्रकुमार रामकिशन जी आर्य- हरफला (गदपुरी)

जिला- नूहः श्री रामअवतारजी जांगिड़- पुन्हाना, श्री दुलीचन्द जी वाजपेयी, पुन्हाना।

गुजरात-जिलाः अहमदाबाद- स्वामी हरिश्वरानन्द जी, तेजेन्द्र नगर, अहमदाबाद।

उत्तरप्रदेश, जिला- मेरठः श्री कुसुमपाल जी आर्य- हस्तिनापुर।

जिला-जौनपुरः श्री मनीष कुमार जी साहू- बाबाजी स्टील्स, औलन्दगंज।

कर्नाटक- जिला- बिदरः श्री एन.टी.एन. प्रतापराव जी- निरगुड़ी। ●

पृष्ठ 37 का शेष भाग **सन्त कबीर ...**

मार्ग की रक्षा करता चल। इसके लिए मनमानी नहीं (**धिया कृतान्**) बुद्धिमानी से कर्त्तव्य कर्म कर, जिससे तू (**अनुल्वणम्**) उलझन रहित (**वयत**) बुनाई या कर्म करते हुए (**जोगुवामपो**) ज्ञान उपासकों के पुरुषार्थ का अनुसरण कर सके और (**मनुः**) मननशील मनुष्य (**भव**) बनते हुए (**जनया दैव्यं जनम्**) दिव्य मनुष्यों के सृजन में समर्थ हो सकें। यहां पर मन्त्राधारित '**देवातिथि**' के हिन्दी गीत से लेख का उपसंहार किया जाता है।

प्रभु की प्रभा पड़े दिखलाई।
मनुआ मञ्जुल करो बुनाई।।
ताना-बाना तगड़ा तानो। जग उलझन के झगड़ा जानो।
वेद भानु पथ का अनुगामी, मानवता का कपड़ा मानो।।
दया धर्म की कोमलताई।
मनुआ मञ्जुल करो बुनाई।।
शुद्धि-बुद्धि कौशल छवि लाओ, भक्ति मुक्ति कर्त्तव्य सजाओ।
भूमि लोक मोदावृत कर दे, व्योम लोक तक वस्त्र बढ़ाओ।
प्रभु मुस्कान छटा हो छाई।
मनुआ मञ्जुल करो बुनाई।।
श्रवण मनन के सुमन खिलाओ, चिन्मय चित चादर चमकाओ।
दिव्य बनें नर दिव्य जनें जन, वेदादर्श हर्ष छिटकाओ।।
प्रीति रीति हो कीर्ति कढ़ाई।
मनुआ मञ्जुल करी बुनाई। ●

श्रीमती सावित्रीदेवी शर्मा का निधन

वरिष्ठ समाजसेवी, जांगिड ब्राह्मण समाज पंचायत तोपखाना इंदौर (म.प्र.) के पंच वैदिक संसार के आधार स्तम्भ सदस्य श्री सुशील जी शर्मा 'मुन्ना भैया', निवासी-स्कीम नं. ५४ विजय नगर, इंदौर की धर्मपत्नी **श्रीमती सावित्रीदेवी शर्मा** का निधन ५५वर्ष की आयु में दिनांक १.१०.२०१० को हो गया।

आप मृदुभाषी, मिलनसार, सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पित, सक्रिय आध्यात्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं? श्री हीरालाल जी शर्मा, राष्ट्रीय प्रधान अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली के कार्यकाल के समय आपने मध्यप्रदेश की महिला मण्डल की प्रदेश अध्यक्ष के रूप में सेवाएं दी थी तथा जांगिड ब्राह्मण समाज पंचायत तोपखाना की महिला सदस्यों में आपकी अग्रणी भूमिका थी। प्रत्येक मास महिलाओं की बैठक आदि गतिविधियों में आपका अहम् योगदान था। स्वाध्याय के प्रति आपकी गहन रुचि थी।

कुछ समय से अचानक स्वास्थ्य समस्या होने से आपका उपचार चल रहा था। आपका असमय संसार से चले जाना परिवार, समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। आप अपने पीछे पतिदेव सुशील शर्मा, दो सुपुत्र अभिषेक तथा लोकेश एवं पौत्र-पौत्री का भरापूरा परिवार छोड़ गईं है।

वैदिक संसार परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति गहन संवेदना व्यक्त करता है। ●

।। ओ३म् विश्वकर्मणे नमः।।

हमारे प्रेरणा स्त्रोत

स्व. लक्ष्मीनारायण जी शर्मा

दीपावली पर्व समस्त बन्धुओं के जीवन में सुख-शान्ति-समृद्धि दायक हो, इन्ही शुभकामनाओं के साथ

मानव समाज में वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात करने वाले वैदिक संसार के सफल छह वर्ष पूर्ण होने पर

हार्दिक शुभकामनाएं

शुभाकांक्षी

रमेशचन्द्र शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
९३०२३८००४७

राहुल शर्मा
युवा तरुणाई
९८२७०६६६१८

मे. आर.सी. शर्मा (टिम्बर मर्चेन्ट)
१९८, धार रोड, लाबरिया भैरू, इन्दौर (म.प्र.)

१३४वां ऋषि स्मृति समारोह जोधपुर में सम्पन्न

ध्वजारोहण सीकर से सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती द्वारा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती योग साधना सत्संग भवन का उद्घाटन

वेदों के मर्मज्ञ विद्वान आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश यज्ञ ब्रह्मा के रूप में।

स्मृति भवन की विशाल यज्ञशाला में आहूति देते रामेश्वर जी जसमतिया एवं संस्था मन्त्री किशनलाल जी गेहलोत तथा अन्य यजमान।

स्मृति भवन ट्रस्ट पदाधिकारियों द्वारा ठा. विक्रमसिंह जी दिल्ली का भावभीना सम्मान। साथ में सुविख्यात भजनोपदेशक कैलाश कर्मठ।

वैदिक संसार इन्दौर द्वारा विशाल प्रदर्शनी के माध्यम से साहित्य सेवा।

सहारनपुर जिला-आर्य महासम्मेलन-२०१७ सम्पन्न

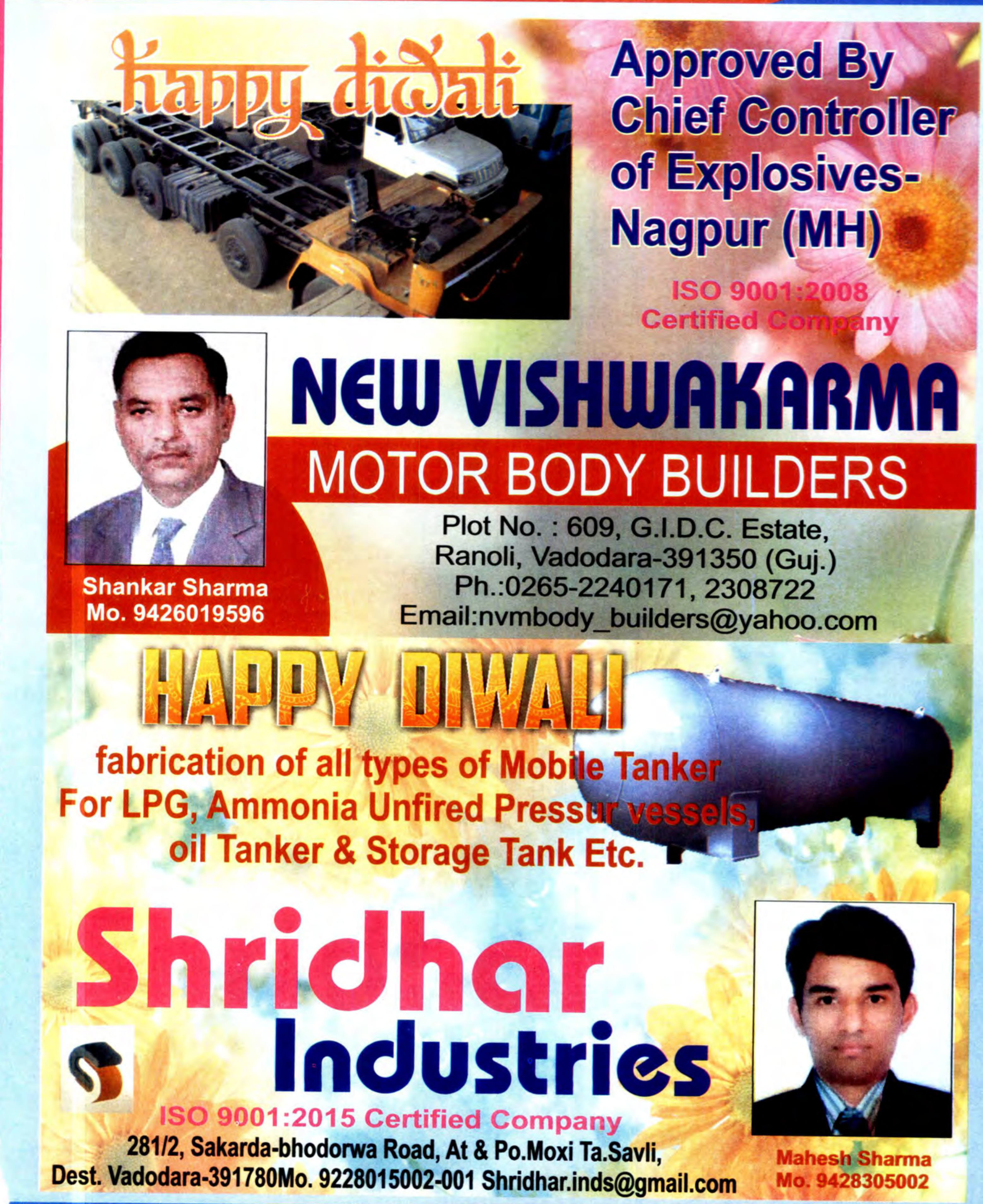
happy diwali
Approved By Chief Controller of Explosives-Nagpur (MH)
ISO 9001:2008 Certified Company
NEW VISHWAKARMA
MOTOR BODY BUILDERS
Plot No. : 609, G.I.D.C. Estate,
Ranoli, Vadodara-391350 (Guj.)
Ph.:0265-2240171, 2308722
Email:nvmbody_builders@yahoo.com
Shankar Sharma
Mo. 9426019596
HAPPY DIWALI
fabrication of all types of Mobile Tanker
For LPG, Ammonia Unfired Pressur vessels,
oil Tanker & Storage Tank Etc.
Shridhar Industries
ISO 9001:2015 Certified Company
281/2, Sakarda-bhodorwa Road, At & Po.Moxi Ta.Savli,
Dest. Vadodara-391780Mo. 9228015002-001 Shridhar.inds@gmail.com
Mahesh Sharma
Mo. 9428305002

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ द्वारा आयोजित उच्च क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर सम्पन्न

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ द्वारा आयोजित उच्चस्तरीय क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर में शिविराध्यक्ष स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक के साथ आचार्यगण, ब्रह्मचारीगण, शिविरार्थीगण एवं कार्यकर्ता।

शिविरार्थियों को उपदेशामृत तथा आशीर्वाद प्रदान करते स्वामी सत्यपति जी। मंच पर उपस्थित हैं स्वामी विवेकानन्द जी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, स्वामी ऋतस्पति जी, ब्र. दिनेश जी, प्रियेश जी तथा अन्य।

उपदेशामृत पान करते हुए भारत के लगभग १० राज्यों से उपस्थित वैदिक धर्म जिज्ञासुजन शिविरार्थी।

आर्य समाज निम्बी जोधान्, जिला-नागौर द्वारा आचार्य सोमदेव जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

दिवंगत पुत्र की पुण्यतिथि पर वेद प्रचारार्थ वाहन हेतु वेदप्रकाश शर्मा जयपुर द्वारा ५१ हजार का दान दिया गया।

हमारे आशीर्वाद प्रदाता-

पिता स्व. **श्री जोधारामजी जांगिड** एवं पूज्य माता स्व. **श्रीमती सरस्वती देवी**
जिनके आशीर्वादों से परिवार
प्रत्येक क्षण पल्लवित हो रहा है...

दीपावली पर्व की समस्त स्नेहीजनों को

हार्दिक शुभकामनाएं

वैदिक संसार के सप्तम वर्ष में प्रवेश करने पर पत्रिका के सम्पादक मंडल तथा पाठकगणों को

हार्दिक बधाई

मंगलाभिलाषी

अष्टविनायक कन्स्ट्रक्शन   अजयदीप कन्स्ट्रक्शन

कान्ट्रेक्टर एवं डेवलपर्स

८४, शिव नगर, अम्बड़ रोड, ओल्ड जालना-४३१२१३ (महा.)
मूल निवास- तिवाड़ी का वास, नीम का थाना,
जनपद-सीकर (राज.) मो. ९३२५७३५७०५

गजानन्द जांगिड धर्मपत्नी राजबाला जांगिड
अध्यक्ष-विश्वकर्मा सेवा समिति, जालना (महाराष्ट्र)
सुपुत्र- विजय कुमार, दीपक कुमार एवं आशीष

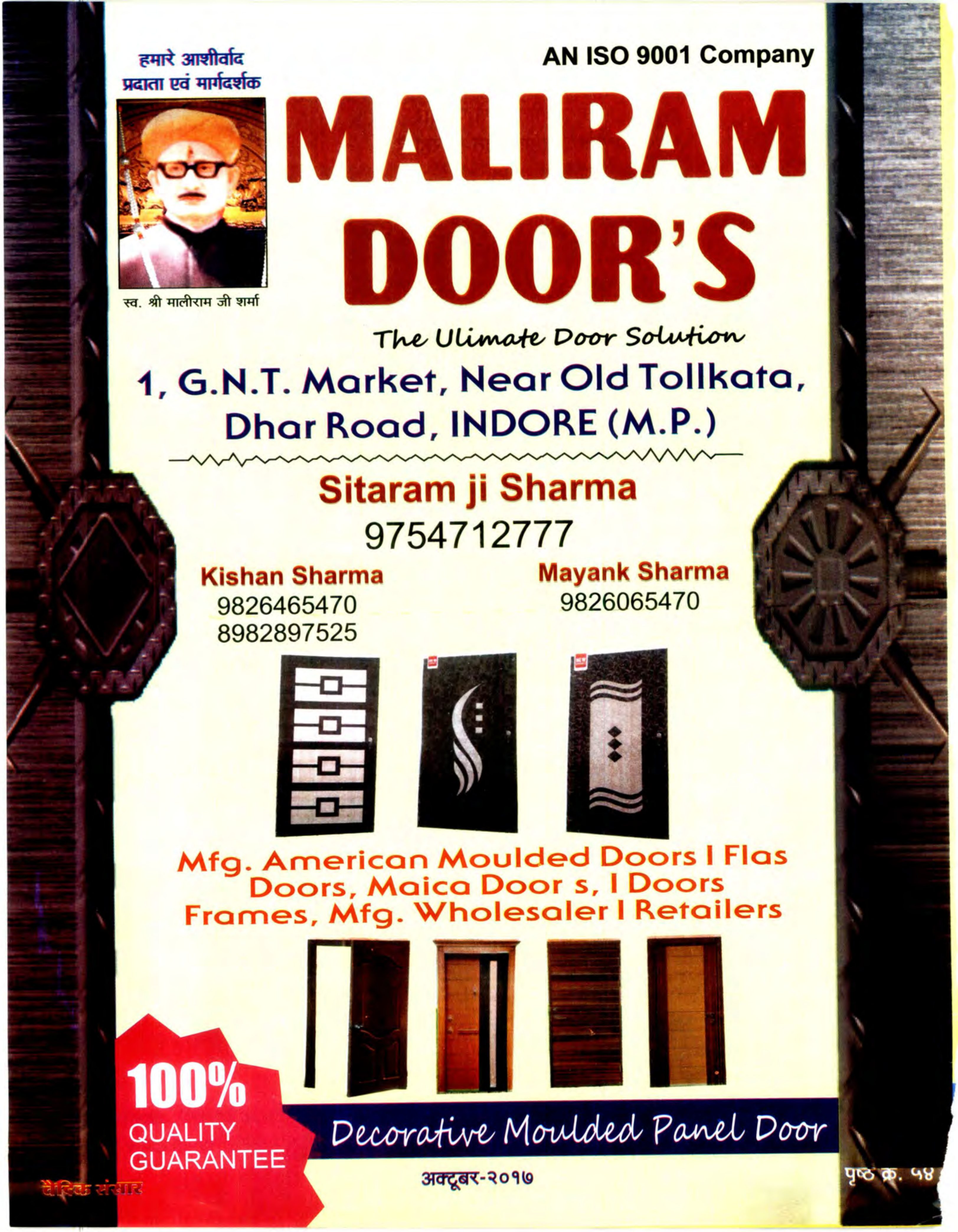
हमारे आशीर्वाद
प्रदाता एवं मार्गदर्शक
स्व. श्री मालीराम जी शर्मा
AN ISO 9001 Company
MALIRAM
DOOR'S
The Ulimate Door Solution
1, G.N.T. Market, Near Old Tollkata,
Dhar Road, INDORE (M.P.)
Sitaram ji Sharma
9754712777
Kishan Sharma
9826465470
8982897525
Mayank Sharma
9826065470
Mfg. American Moulded Doors I Flas
Doors, Maica Door s, I Doors
Frames, Mfg. Wholesaler I Retailers
100%
QUALITY
GUARANTEE
Decorative Moulded Panel Door

ओ३म्
ISO 9001 Company with Export Excellence Award
sabar ®
साबर पम्पस्
Over 40 Years of Excellence
IS-8034-2002
स्पॉट सर्विस (2 घंटे के अंदर)
उच्चतम गुणवत्ता
वाजिब मूल्य
ग्राहक संतुष्टि
कम वाल्टेज में भरपूर पानी
SUMMER OFFER
(ऑफर सीमित समय के लिये)
FLAT 15% OFF
Domestic Sub. Pumps (for bore wells)
V4 (100mm)
V3(80mm)
FLAT 20% OFF
FLAT 20% OFF
FLAT 15% OFF
I Phase Horizontal Open Well Sub. pump set
मोटर में EC ग्रेड शुद्ध कापर रोटर का कमाल
Single Phase Self Priming Mono block Pump Sets
*Terms & Conditions Apply
Rajshri/9406828133
SINCE 1973
SATYA ENTERPRISES
सत्य इण्टरप्राईजेस
144, चिमनगंज मण्डी, आगर रोड़, उज्जैन (म.प्र.)
फोन: 0734-2556174 मो. 9425915751, 8718000751

सम्पूर्ण विश्व में एकमात्र स्थान, जहां हो रहा है वर्ष के ३६५ दिवस तथा प्रातः ७ बजे से सायंकाल ७ बजे तक अनवरत् यज्ञानुष्ठान अभी तक १२ लाख आहुतियों से किया गया पर्यावरण का शुद्धिकरण

वानप्रस्थ साधक आश्रम में मार्च २०१६ से सूर्योदय से सूर्यास्त तक निरंतर यज्ञ चल रहा है। इसमें पीपल आदि की उच्च कोटि की समिधा, गौ घृत, औषधि युक्त सामग्री से वेद मन्त्रों के द्वारा पर्यावरण का शुद्धिकरण किया जा रहा है। हजारों व्यक्ति जिनमें स्कूल-कॉलेज के छात्र, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, राजनीति से जुड़े मंत्री, गृहस्थ आदि शामिल है, यहाँ अपनी आहुतियाँ दे चुके हैं और सैकड़ों व्यक्तियों ने अपने घरों में अग्निहोत्र करने का संकल्प लिया है। **हम उन सभी महानुभावों के कृतज्ञ हैं जिनके सहयोग से यह पुण्य कार्य चल पा रहा है। हमारी योजना है कि हर गाँव और शहर में ऐसा केंद्र स्थापित हो जिससे देश में फैले प्रदूषण की समस्या का निवारण हो सके।**

यज्ञ हर व्यक्ति को करना चाहिए, किन्तु किन्हीं कारण से घर में यज्ञ नहीं कर पाते, जैसे-अत्यधिक व्यस्त होने के कारण समय नहीं निकाल पाना, शारीरिक अस्वस्थता के कारण यज्ञ करने में सक्षम ना होना, चिकित्सक ने किसी कारण से धुंए से बिल्कुल ही दूर रहने को कहा हो, आदि अनेक कारण हैं जिससे व्यक्ति **कई बार चाहते हुए भी घर में यज्ञ नहीं कर पाता, यह १२ घंटे चलने वाला अखंड यज्ञ उनके लिए वरदान है। वैसे तो यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है,** जिसे हर मनुष्य को करना चाहिए, फिर भी कोई सांप्रदायिक या सामाजिक बन्धनों आदि के कारण अपने घर में यज्ञ नहीं कर सकते, वे भी इस योजना से यज्ञ करने का लाभ ले सकते हैं। **जो व्यक्ति पर्यावरण प्रेमी हैं और इस कार्यक्रम में किसी-भी प्रकार से अपना योगदान देना चाहते हैं, वे सादर आमंत्रित हैं।**

वानप्रस्थ साधक आश्रम

आर्यवन रोजड़, पत्रालय-सागपुर, जनपद-साबरकांठा-३६३३०७ गुजरात

दूरभाष-०२७७०-२८७४१७

E-mail: vaanaprasthanrojad@gmail.com Website: www.vaanaprastharojad.org

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित,१२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित

संपादक - गजेश शास्त्री, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७